अंतिका

अंक – 27 सत्र 2023–24

मन्दिर विशेषांक

डी पी बी एस कॉलिज

अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ0प्र0)

(सम्बद्ध – चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

www.dpbspgcollege.edu.in | dpbsprincipal@gmail.com | 7895005734

(NAAC ACCREDITED GRADE B COLLEGE WITH CGPA 2.71) | ISO-9001:2015 (QCC/E69A/0524) Certified College

मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्राचार्य जी के पुत्रों के साथ में आदरणीय श्री जय प्रकाश गौड़ जी

नव निर्मित मंदिर में आदरणीय श्री जय प्रकाश गौड़ जी के साथ कमाण्डर एस.जे. सिंह तथा अन्य अतिथिगण

प्राचार्य जी के साथ डिबाई के विधायक मा. श्री सी.पी. सिंह व अन्य गण मान्य लोग

रिद्म - 24 में मेधावी छात्रों को पुरूस्कृत करते महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री अजय कुमार गर्ग, नगर पालिका अध्यक्ष श्री ब्रजेश गोयल तथा प्राचार्य

महाविद्यालय में बुलन्दशहर के सांसद माननीय भोला सिंह जी के साथ चीफ प्रोक्टर प्रो. पी.के. त्यागी व अन्य

अन्तर महाविद्यालय बास्केट बॉल पुरूष प्रतियोगिता 2024 के समारोह में प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष का स्वागत करते प्राचार्य

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अवंतिका के 2023 के अंक का विमोचन करते हुए काशी विद्यापीठ के कुलपति आदरणीय प्रो. आनंद त्यागी, पत्रिका की प्रधान संपादक प्रो. चन्द्रावती, प्रो. अखिलेश कुमार, प्रो. सुनील चौधरी, प्रो. पुष्पेन्द्र जी, प्राचार्य जी.के. सिंह तथा अन्य अतिथिगण

कॉलेज के वरिष्ठ संस्थापक सदस्य श्री सेवक चन्द गुप्ता, प्रबंध समिति के समस्त पदाधिकारी तथा कॉलेज प्राचार्य 15 अगस्त 2023

अवंतिका

अंक – 27 संत्र 2023–24

डी पी बी एस कॉलेज के इतिहास पुरूष

सम्पादक मण्डल

बाँये से दाँये (बैठे हुए) :

श्री हरेंद्र कुमार, डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह,
प्रोफेसर जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो. चंद्रावती (प्रधान सम्पादक),
डॉ. वीरेंद्र कुमार, डॉ. तरूण श्रीवास्तव।

महाविद्यालय प्रबन्ध कार्यकारिणी

श्री अजय गर्ग
(अध्यक्ष)

(उपाध्यक्ष)

श्री सुनील कुमार गुप्ता
(सचिव)

(संयुक्त सचिव)

श्री के.पी. सिंह
(कोषाध्यक्ष)

श्री राजीव कुमार अग्रवाल
(आन्तरिक लेखा परीक्षक)

डॉ. के.पी. सिंह
(सदस्य)

कमा. एस.जे. सिंह
(सदस्य)

श्रीमती मनिका गौड़
(सदस्या)

प्रो. गिरीश कुमार सिंह
प्राचार्य (पदेन सदस्य)

A source of Eternal Inspiration
Shri Jaiprakash Gaur Ji,
Founder Chairman, Jaypee Group
Managing Trustee, Jaiprakash Sewa Sansthan
President, Anglo Vedic Educational Association

One the path of progress, education is the medium that can allow our country to not only conserve its culture but also ignites the minds of the young countrymen and empowering them to be at par with the citizens of other developed countries. Science & Technology in the 21 st Century will unleash a revaluation of progress that is beyond our imagination today and which will transcend the limits of planet Earth to enable human beings to begin their tryst with the infinite universe.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of modern India.

These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge, utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards so that our teachers and students can stride forward and see the transformation of their country into an advanced nation within their lifetime.

JAYPEE GROUP

Jaiprakash Gaur

MANOJ GAUR
Executive Chairman

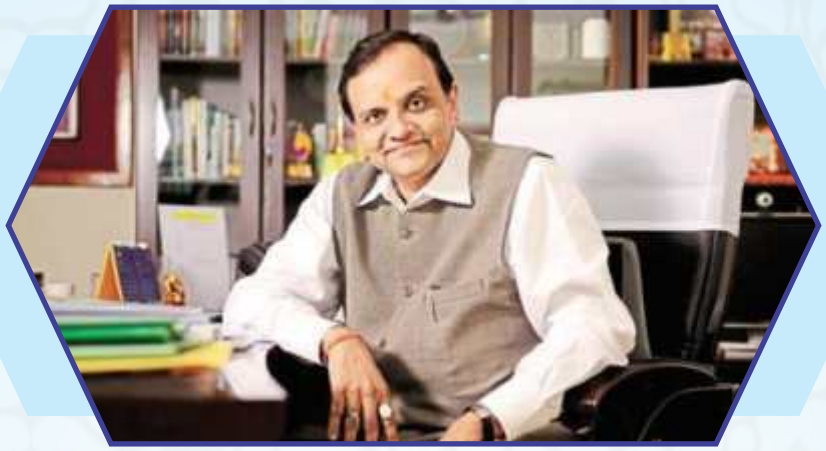

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

संदेश

माँ गंगा के पावन तट पर स्थित अनूपशहर प्राचीन समय से ही शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। नगर में 1965 में स्थापित डी पी बी एस कॉलेज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक परंपरा के अनुरूप इस वर्ष वार्षिक पत्रिका अवंतिका का 27 वाँ अंक प्रकाशित कर रहा है। हम सभी को किसी भी परिप्रेक्ष्य में उत्कृष्ट एवं प्रेरित करने वाले विचार, व्यक्तित्व, साहित्य एवं घटनाएँ ही संबल प्रदान करती हैं। यह पत्रिका भी जीवन में सकारात्मकता की उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाले ज्ञानवर्धक आलेखों, रचनाओं एवं समसामयिक घटनाओं को अपने में समाहित किए होगी, जिससे यह पत्रिका विद्यार्थियों के लिए ही नहीं वरन समाज के लिए भी पथ प्रदर्शन का एक साधन बन सकेगी।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पूर्व के अंकों की तरह यह अंक भी अपने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होगा। मैं इस अवसर पर प्राचार्य, संपादक मंडल, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सधन्यवाद!

मनोज गौड़

JAYPEE GROUP

Head office : 'JA House', 63 Basant Lok, Vasant Vihar, New Delhi - 110 057 (India)
Ph. : +91 (11) 26141540, 26147411 Fax : +91 (11) 26145389, 26143591
Corp. & Regd. Office : Sector - 128, Noida -201 304, Uttar Pradesh India)
Ph. : +91(120) 4609000, 2470800 Fax : +91 (120) 4609464, 4609496

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ–250004 (उ०प्र०)

प्रोफेसर संगीता शुक्ला
कुलपति डी०एस०सी०

पत्रांक : एस०वी०सी०/21/1018
दिनांक : 21.12.2023

संदेश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर द्वारा महाविद्यालय की सत्र 2023–24 की वार्षिक पत्रिका **"अवन्तिका"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिये आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथा उनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसरप्रदान करने के साथ–साथ ज्ञानोपयोगी लेखों का प्रचार–प्रसार करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन हेतु शुभकामनायें।

(संगीता शुक्ला)

प्राचार्य,
प्रो० जी.के. सिंह
डी पी बी एस कॉलिज,
अनूपशहर, जिला–बुलन्दशहर।

कार्यालय: +91–0121–2760554, 2760551, फैक्स: 2762838, शिविर कार्यालय: +91–0121–2600066, फैक्स: 2760577

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ–250 004

वैबसाइट: www.ccsuniversity.ac.in
ई–मेल: vc@ccsuniversity.ac.in

चन्द्र प्रकाश सिंह

आई०ए०एस०

अ.शा.प.सं० 339/ST.DM/2023
जिलाधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट
जनपद–बुलन्दशहर (उ०प्र०)
(कार्या०) : 05732–280351
(आ०) : 05732–231343
(फैक्स) : 05732–280298
(मोबाईल) : 9454417563
(ई–मेल) : dmbul@nic.in

दिनांक : 13.12.2023

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर सत्र 2023–24 अपनी वार्षिक पत्रिका **'अवन्तिका'** का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका महाविद्यालय की नवोदित प्रतिभाओं को उनकी साहित्यिक अभिरूचि की अभिव्यक्ति का सुअवसर प्रदान करते हुए विद्यालय की शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों एवं उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ सिद्ध होगी तथा इसमें ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, कलां, संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाओं का समावेश होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(चन्द्र प्रकाश सिंह)

प्राचार्य,
प्रो० जी.के. सिंह
डी पी बी एस कॉलिज,
अनूपशहर, जिला–बुलन्दशहर।

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह कॉलिज

महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ०प्र०-203390
(सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
Website: www.dpbscollegeanoopshahr.org | Phone 05734-275450
Email: dpbsprincipal@gmail.com
NAAC Certification Grade : B (CGPA-2.71)

संदेश

मेरे लिए व्यक्तिगत यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका अवंतिका का 27 वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। वार्षिक पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थियों को अपनी साहित्यिक, बौद्धिक, रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है साथ ही महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और उपलब्धियां का भी इस पत्रिका में समावेश किया जाता है।

आशा करता हूँ कि विद्यार्थी एवं शिक्षकगण लेखों में सहेजे अपने-अपने विचारों से समाज व राष्ट्र को नयी दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

इस अवसर पर मैं कॉलेज के प्राचार्य प्रो० गिरीश कुमार सिंह, प्रधान संपादक प्रो० चंद्रावती एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और वार्षिक पत्रिका अवंतिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

अजय कुमार गर्ग
अध्यक्ष प्रबंध समिति

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह कॉलिज
महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ०प्र०-203390
(सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
Website: www.dpbscollegeanoopshahr.org | Phone 05734-275450
Email: dpbsprincipal@gmail.com
NAAC Certification Grade : B (CGPA-2.71)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका अवंतिका का 27 वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मेरा ऐसा विश्वास है कि शिक्षा मनुष्य को ज्ञान समपन्न करती हुई सामर्थ्यवान बनाती है, जिससे वह मनुष्य स्वावलंबी जीवनशैली अपनाते हुए आर्थिक रूप से मजबूत होकर समाज और देश की प्रगति में योगदान करता है। डीपीबीएस कॉलेज एक ऐसा संस्थान है जो दूरस्थ क्षेत्र में होने के बावजूद उत्तम आधारभूत संरचना और सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक वातावरण के द्वारा छात्रों के लिये ज्ञानोपार्जन के साथ-साथ उत्तम अनुशासन के द्वारा चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० गिरीश कुमार सिंह के दूरगामी सोच और प्राध्यापकों के वर्षों के अनुभव के युक्त शिक्षण प्रक्रिया से गुजरकर यहाँ के विद्यार्थी विश्वपटल पर महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

सुनील कुमार गुप्ता
सचिव, प्रबन्ध समिति

संजय शर्मा, विधायक

अनूपशहर, (जिला- बुलन्दशहर)

मो. 9818326000, 8887150867

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि डीपीबीएस कॉलेज अनूपशहर की वार्षिक पत्रिका अवंतिका का सत्ताईसवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। महाविद्यालय की पत्रिका विचारों की अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करती है, जिससे निश्चित तौर पर यह पत्रिका शिक्षकों और विद्यार्थियों के मौलिक विचारों से ओत-प्रोत रचनाओं से परिपूर्ण होगी।

आशा है कि यह पत्रिका युवाओं को राष्ट्र एवं समाज के लिए योगदान देने की प्रेरणा भी देगी। महाविद्यालय परिवार और विद्यार्थियों को प्रेरणादायी और सामाजोपयोगी पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भवदीय

संजय शर्मा
विधायक

प्राचार्य,
प्रो० जी.के. सिंह
डी पी बी एस कॉलेज,
अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर।

चन्द्रपाल सिंह, विधायक

68, विधान सभा, डिबाई, (जिला- बुलन्दशहर)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर बुलंदशहर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका अवन्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। राष्ट्र के नवनिर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है महाविद्यालय सास्वत साधना के केंद्र होते हैं जहाँ भविष्य के दृष्टिगत नई पीढ़ी का निर्माण किया जाता है महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन निश्चित तौर पर इस सामाजिक उद्देश्य को पूरा करेगा। मुझे आशा है यह पत्रिका विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों से परिपूर्ण होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

चन्द्रपाल सिंह
विधायक

प्राचार्य,
प्रो० जी.के. सिंह
डी पी बी एस कॉलेज,
अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर।

प्रधान सम्पादक की कलम से...

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका अवंतिका का 27 वां अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए सुखद अनुभूति का अनुभव कर रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को बौद्धिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हुए उनके आलेखों, कृतियों, ज्ञान प्रतिभा और विचारों को समाज तक पहुँचाने का अवसर प्रदान करती है। विगत वर्षों में महाविद्यालय अनूपशहर क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए अधिक से अधिक पाठयक्रमों में अध्ययन के अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रयासरत रहा है ओर इस प्रयास के कारण वर्तमान समय में स्नातक स्तर पर 14 विषयों में बी.ए., बी.एसी (पी.सी.एम. ग्रुप), बी.कॉम, बी.सी.ए., बी.एड. एवं परास्नातक स्तर पर एम.ए. (संस्कृत), एम.एसी.सी. (भौतिकी व रसायन) एवं एम.कॉम आदि कोर्सेस में छात्र अध्ययनरत हैं। छात्र संख्या की दृष्टि से अकल्पनीय बढ़ोत्तरी होने के साथ साथ महाविद्यालय अपने गुणात्मक सुधार करने की ओर भी प्रवृत्त है। गुणात्मक सुधार हेतु नैक मूल्यांकन के लिए महाविद्यालय परिवार अच्छा ग्रेड पाने के लिए पूरी निष्ठा के साथ तैयारी की जा रही है। हमें प्रयास करना चाहिए कि सकारात्मक दृष्टिकोण से समाज की नकारात्मकता खत्म हो। आज भूमंडलीकरण के युग में हमें अपने व्यक्तित्व और शिक्षा के स्तर को विश्वस्तरीय बनाने की आवश्यकता है। ईमानदारी, पूर्ण लगन और निष्पक्षता के साथ क्रियान्वित की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा भारत की प्रतिभाओं को निखारने का कार्य महाविद्यालय में बेहतर ढंग से किया जा रहा है। प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह के मार्गदर्शन में सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार अपने संसाधनों में निरंतर वृद्धि कर रहा है। वर्ष के प्रारम्भ से ही पूरे कॉलेज में हर्ष और उल्लास का वातावरण बना रहा है। जहाँ जनवरी माह में हम अयोध्या में श्री रामलला विराजमान के साक्षी बने ठीक उसी प्रकार दूसरी ओर फरवरी माह में महाविद्यालय में प्राचीन देवालय का जीर्णोद्धार करते हुए भव्य एवं दिव्य स्वरूप प्रदान किया गया। वर्ष भर की शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों और उपलब्धियों की स्मृतियों को चित्रों के रूप में और प्राध्यापकों व विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धक और मनोरंजक लेखों से अन्वित अवंतिका का यह संस्करण निश्चित रूप से अद्वितीय और अनुमप रहेगा।

यह संस्करण महाविद्यालय के दिव्य भव्य देवालय को समर्पित है। प्रबंध समिति के अनेकों महानुभावों ने इस महाविद्यालय की तन-मन और धन से सेवा करके उसकी विकास यात्रा को गौरवान्वित करते हुए इसको भव्य और दिव्य स्वरूप प्रदान किया है। प्रधान संपादिक के रूप में सर्वप्रथम ज्ञान और बुद्धि के दाता उस ईश्वर के श्री चरणों में प्रणाम करके धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

अपने शुभकामना संदेशों के द्वारा हमारा मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन करने वाले सभी वरिष्ठजनों का सम्मान पूर्वक धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह को सदैव सकारात्मक सहयोग के लिए विशेष धन्यवाद प्रकट करती हूँ। पत्रिका के लिए अपने मौलिक विचारों से युक्त ज्ञानवर्धक लेख प्रेषित करने वाले सभी सम्मानित सदस्यों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके अथक परिश्रम और सहयोग से यह पत्रिका मौलिक रूप में प्रकाशित होने हो रही है, ऐसे संपादक मंडल के सभी सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देती हूँ। और अंत में गर्ग प्रिंटर्स को उत्तम और समयबद्ध मुद्रण कार्य हेतु धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

वीणावादिनी मां सरस्वती की कृपा से अवंतिका का यह संस्करण पाठकों को सकारात्मक ऊर्जा से सराबोर करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने में सहयोग करेगा इस विश्वास के साथ पाठकों के पठनार्थ प्रस्तुत है।

Chandrawati

(डॉ. चन्द्रावती)

प्रधान सम्पादक

प्राचार्य की कलम से...

शिक्षा समाज को बदलने का सबसे प्रबल माध्यम है। नयी शिक्षा नीति के माध्यम से हमारा कॉलेज निरन्तर तुलनात्मक रूप से एक बड़ी रेखा खींचने की ओर अग्रसर है। पिछले वर्ष हमने न केवल विद्यार्थियों के हित में, बल्कि शिक्षकों, अभिभावकों, कर्मचारियों और पूरे समाज के हित में कई बड़े निर्णय लिए ।

महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर सात विषयों एवं परास्नातक स्तर पर एक विषय एम०कॉम० को गत वर्ष से ही संचालित कर दिया गया। इतिहास विषय में 6 तथा वाणिज्य विषय में 2 शोधार्थी भी गत वर्ष से ही पीएचडी की उपाधि के लिए शोधरत हैं। सांख्यिकी तथा भौतिक विज्ञान विषय में भी शीघ्र ही पीएचडी की उपाधि हेतु शोध कार्य प्रारंभ हो जाएगा। इन विषयों में पीएचडी कराने की अनुमति पहले ही प्राप्त हो चुकी है। रसायन शास्त्र, बी०एड० तथा फिजिकल एजुकेशन विषय में पीएचडी कराने के लिए शीघ्र ही अनुमति मिलने की संभावना है। कॉलेज में विभिन्न नये स्नातक विषयों में असिस्टेंट प्रोफेसर्स के विश्वविद्यालय से अनुमोदन की प्रक्रिया जारी है।

एडेड विषयों में तीन और असिस्टेंट प्रोफेसर्स के इस सत्र में कार्यभार गृहण करने की आशा है। इस वर्ष से कॉलेज में बीसीए का एक और अतिरिक्त सैक्सन संचालित होने लगेगा। इतिहास तथा राजनीति शास्त्र विषय में एम०ए० नये सत्र 2024-25 से प्रारंभ हो जाएगा। पैरा मेडिकल कोर्सेज के संचालन के लिए भवन बनकर तैयार होने वाला है तथा डी० फार्मा० हेतु इसी वर्ष अनुमति ले ली जाएगी। महाविद्यालय के शैक्षणिक परिवेश के उन्नयन एवं विचार-विमर्श हेतु वातानुकूलित कॉन्फ्रेंस रूम में फाल्स सीलिंग कराने के साथ साथ 60 रिवाल्विंग चेयर्स की व्यवस्था की गयी। प्रतियोगी छात्र - छात्राओं के हित को देखते हुए महाविद्यालय में 50 विद्यार्थी क्षमता के साथ डिजीटल लाइब्रेरी गत वर्ष से ही चल रही है। महाविद्यालय के शिक्षकों के गुणवत्तापूर्ण व्याख्यान छात्रों तक ऑनलाइन पहुँचाने हेतु रिकार्डिंग रूम में तैयार व्याख्यानों को यू-ट्यूब चैनल पर अपलोड किया जाता है। महाविद्यालय के शिक्षकों से विद्यार्थियों को जोड़ने के लिए कॉलेज का स्पोटीफाई एवं अमेजन म्यूजिक पर अपना एक पॉडकास्ट चैनल गत वर्ष से ही चल रहा है। महाविद्यालय की प्राचीन धरोहरों को संरक्षित रखने हेतु एक संग्रहालय बनाया गया है। महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं की सुरक्षा की दृष्टि से कमरों एवं पोर्च में सी०सी०टी०वी० कैमरे लगाये गये हैं। ओ०एन०जी०सी० के सी०एस०आर० फंड से कॉलेज में छात्राओं के लिए एक चिकित्सक की व्यवस्था तथा सेनेटरी नैपकिन देने की योजना शुरू की गयी थी जो इस वर्ष से कॉलेज द्वारा जारी रहेगी। डिफिरेंटली एबल्ड छात्रों के लिए एक व्हील चेयर की व्यवस्था की गई है ।

कॉलेज परिसर में रहने वाले अन्तरूवासियों के लिए प्राचीन शिव मन्दिर को नये वृहद् रूप में निर्मित कराकर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करायी गयी। महाविद्यालय में जॉब प्लेसमेंट हेतु आयी कम्पनी एक्कोएट इंडिया ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट एवं इरा टेक्नोलॉजी इंडिया लिमिटेड ने फिर से कई विद्यार्थियों का चयन किया।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा आयोजित वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम में वि०वि० स्तर पर कु० दिव्या ने द्वितीय स्थान (नृत्य), रितु शर्मा ने प्रथम स्थान (कविता पाठ), विनीता सैनी ने द्वितीय स्थान (पोस्टर), ऊषा सिंह ने तृतीय स्थान (गायन) प्राप्त किया। कॉलेज की छात्रा कु० अंजू शर्मा ने खेलो इंडिया में एथलेटिक्स में छठा स्थान प्राप्त किया। रसायन शास्त्र विभाग की आचार्य प्रो० चंद्रावती की पुत्री कु० नम्रता सिंह ने यूपी पीसीएस में तृतीय स्थान प्राप्त किया। कु०अक्षिता गौड़ का एयर इंडिया में क्रू मेंबर (एयर हास्टिस) के रूप में चयन हुआ। कैडेट भूपेन्द्र ने गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया।

मैं महाविद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभारी हूँ जिन्होंने अथक परिश्रम करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यमों से अध्ययन-अध्यापन और शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया को जारी रखा। महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना, रोवर-रेंजर्स और राष्ट्रीय कैडेट कोर इकाई के सभी स्वयं सेवकों/ कैडिटों को, सरकार की ओर से चलाये गए विभिन्न कार्यक्रमों/ अभियानों का सफलतापूर्वक संचालन करके, जन जागरूकता लाने के लिए, हृदय से बधाई देता हूँ। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **अवंतिका** के नवीन कलेवर के लिए महाविद्यालय परिवार और सभी सम्बद्ध जनों को कोटि कोटि शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को अग्रिम अनंत अशेष मंगलकामनाएँ !

(प्रो. गिरीश कुमार सिंह)
प्राचार्य

विनम्र श्रद्धांजलि

डॉ सुधीर कुमार अग्रवाल जी

हम सभी उनके परिवार जैसे थे और परिवार ही जिनका मंदिर था, स्नेह जिनकी शक्ति थी, परिश्रम जिनका कर्तव्य था, परमार्थ ही उनकी भक्ति थी। ऐसी पुण्य आत्मा को महाविद्यालय परिवार भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है

आपका ध्येय वाक्य "आप जीवन में जो चाहे बनें लेकिन उससे पहले एक अच्छे इंसान अवश्य बनें। अगर आप अच्छे इंसान नहीं बन पाए तो आप कितनी ही ऊंचाइयों पर क्यों ना हो, जमीं पर आने में देर नहीं लगेगी।" निरंतर हमें अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

प्राध्यापक मंडल

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री लक्ष्मण सिंह, डॉ. सुधा उपाध्याय, डॉ. सुनीता गौड़, श्री यजवेंद्र कुमार, प्रो. आर.के. अग्रवाल, प्रो. पी.के. त्यागी, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो. यू.के. झा, प्रो. चंद्रावती, प्रो. सीमांत कुमार दुबे, श्री पंकज कुमार गुप्ता, डॉ. भुवनेश कुमार गुप्ता, डॉ. तरूण श्रीवास्तव।

खड़े हुये (प्रथम पंक्ति) : श्री सोहन आर्य, डॉ. विशाल शर्मा, श्री मयंक शर्मा, डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह, श्री नितिन कुमार, श्रीमती रिवानी गोयल, कु. काजल, कु. सृष्टि शर्मा, डॉ. जागृति सिंह, डॉ. राधा उपाध्याय, डॉ. के.सी. गौड़, डॉ. वीरेंद्र कुमार, डॉ. राजीव गोयल, श्री सचिन अग्रवाल, श्री सत्य प्रकाश गौतम।

खड़े हुए (द्वितीय पंक्ति) : श्री दीक्षित कुमार, श्री देव स्वरूप गौतम, श्री आलोक कुमार तिवारी, श्री हरेंद्र कुमार, श्री हिमांशु कुमार, श्री अनिल कुमार, डॉ. जी.के. बंसल, श्री नरेंद्र रंजन, श्री चंद्र प्रकाश, श्री गुरूदत्त शर्मा, श्री पंकज प्रकाश, श्री साहिल कुमार।

शिक्षणेत्तर कर्मचारी गण

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री प्रतीक रस्तोगी, श्री चंद्रपाल सिंह, श्री सुनील कुमार, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री सुनील कुमार गर्ग, प्रोफेसर जी.के. सिंह (प्राचार्य), श्री दीपक कुमार शर्मा, श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री मयंक कुमार, श्री पारस कुमार, श्री पंकज शर्मा।

खड़े हुये (प्रथम पंक्ति) : श्री प्रमोद कुमार, श्री नितिन कुमार, श्री राजू, श्री विजय कुमार, श्री अमरनाथ रॉय, श्री वाहिद अली, श्रीमती पूजा, श्री राम बाबू, श्री सुंदर पाल, श्री गजेंद्र कुमार, श्री जितेंद्र कुमार, श्री महेश कुमार, श्री कपूर चंद, श्री योगेश कुमार।

खड़े हुए (द्वितीय पंक्ति) : श्री सुनील कुमार निर्मल, श्री नारायण देव मिश्रा, श्री विजयपाल सिंह, श्री सुबोध कुमार, श्री नेत्रपाल सिंह, श्री सोनू, श्री मान सिंह, श्री साहब सिंह, श्री त्रिलोकी चंद गर्ग, श्री विक्रम, श्री रामौतार, श्री डम्बर सिंह।

अनुशासता मंडल

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री सोहन आर्य, श्री मयंक शर्मा, श्री यजवेंद्र कुमार, प्रो.पी.के. त्यागी, प्रो, जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो. चंद्रावती, डॉ वीरेंद्र कुमार, प्रो. सीमांत कुमार दुबे, डॉ तरूण श्रीवास्तव।

आंतरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री मयंक शर्मा, श्री यजवेंद्र कुमार, प्रो. पी.के. त्यागी, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो. चंद्रावती, डॉ. वीरेंद्र कुमार, डॉ. भुवनेश कुमार।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति (NAAC)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री सचिन अग्रवाल, श्री पंकज कुमार गुप्ता, श्री देव स्वरूप गौतम, डॉ. शैलेंद्र कुमार सिंह, प्रो. पी.के. त्यागी, प्रो. जी.के सिंह (प्राचार्य), श्री यजवेंद्र कुमार, श्री अनिल कुमार, श्री हिमांशु कुमार, डॉ. घनेंद्र कुमार बंसल, डॉ. तरूण श्रीवास्तव।

सत्र 2022-23 के हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थी

दीक्षा गुप्ता
एम.एससी. द्वितीय (भौतिकी)
69.50%

यामिनी वार्ष्णेय
एम.एससी. द्वितीय (रसायन)
80.10%

शहनाज खान
एम.ए. द्वितीय (संस्कृत)
81.80%

मुस्कान गोयल
बी.एससी तृतीय
75.30%

तनीषा गर्ग
बी. कॉम तृतीय
69.80%

तेविका शर्मा
बी.ए. तृतीय
77.18%

प्रेरणा पांडे
बी.सी.ए. तृतीय
78.88%

तहरीम सैफी
बी.एड. द्वितीय
82.71%

Student Council - 2023-24

Mr. Shailendra Kumar
(President)

Ms. Prerna Varshney
(Vice President)

Ms. Lavi Agrawal
(Secretary)

Ms. Somya Bhardwaj
(Junior Librarian)

Ms. Arti Kashyap
(Treasurer)

Ms. Yashi Agrawal
(Representative)

Ms. Anju Kumari
(Representative)

Ms. Shriyanshiv Verma
(Representative)

Ms. Monika
(Representative)

Mr. Aman Kumar
(Representative)

अनुक्रमणिका

क्रं सं.	विवरण	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1.	संदेश एवं कॉलेज स्टाफ व छात्रों के फोटो		1-20
2.	प्रगति आख्या		22-24
3.	छात्रों द्वारा बनाये गये चित्र		25-26
4.	अनुशासता मंडल	प्रो० पी०के० त्यागी	27
5.	राष्ट्रीय कैडेट कोर	कैप्टन यजवेन्द्र कुमार	28
6.	राष्ट्रीय सेवा योजना	सोहन आर्य (स.आ.)	28
7.	रोवर्स रेंजर्स	डा० तरूण श्रीवास्तव, डा० सुनीता गौड़	29
8.	समाज शास्त्र विभाग	अनिल कुमार (स.आ.)	29
9.	Department of Physics	Captain Yajvendra Kumar	30
10.	Department of Chemistry	Prof. Chandrawati	31
11.	Department of Mathematics	Prof. R.K. Agrawal	32
12.	Department of English	Chandra Prakash	32
13.	सांख्यिकी विभाग	प्रो० पी०के० त्यागी	33
14.	Department of Political Science	Prof. Umesh Kumar Jha	34
15.	शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग	प्रो० सीमांत कुमार दुबे	35
16.	Department of Economics	Himanshu Kumar (Astt. Prof.)	36
17.	संस्कृत विभाग	लक्ष्मण सिंह (स.आ.)	37
18.	हिंदी विभाग	आलोक कुमार तिवारी (स.आ.)	37
19.	Department of Com. App. (BCA)	Pankaj Kumar Gupta (Astt. Prof.)	38
20.	बी.एड. विभाग	डा० सुनीता गौड़	39
21.	इतिहास विभाग	प्रो० जी.के. सिंह	40
22.	गृहविज्ञान विभाग	डॉ० मोहिनी गुप्ता	40
23.	वाणिज्य संकाय	डॉ० भुवनेश कुमार	41
24.	Department of Geography	Dr. Renu Chaudhary	42
25.	रक्षा अध्ययन विभाग	नितिन शर्मा	42
26.	ललित कला विभाग	देवांशी सैनी	43
27.	गुमनाम दोस्त के लिए	प्रो० जी०के० सिंह	43
28.	छात्रों द्वारा बनाये गये चित्र		44-45

क्रं सं.	विवरण	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
29.	संस्कारों का महत्व	डॉ० सुनीता गौड़	46
30.	महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के	डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह	47
31.	शिक्षक शिक्षा में नवाचार का महत्व	डॉ० वीरेन्द्र कुमार	48-49
32.	संस्कृति एवं शिक्षा : स्वामी विवेकानंद	देव स्वरूप गौतम	50
33.	संस्कृत भाषा की वाग्व्यवहारता	लक्ष्मण सिंह एवं सोहन आर्य (स.आ.)	51
34.	वैश्वीकरण के सामाजिक - आर्थिक प्रभाव	अनिल कुमार (स.आ.)	52-53
35.	मानविकी विषयों का महत्व तथा	आशु सैनी, प्रो० गिरीश कुमार सिंह	54-55
36.	गुरू	भारती शर्मा	55
37.	गंगा प्रदूषण-कारण एवं निवारण	सृष्टि शर्मा	56
38.	सदाचार का महत्व	सृष्टि शर्मा	56
39.	भारत में रक्षा एवं सामरिक अध्ययन.....	नितिन शर्मा	57-58
40.	ज्ञान की कोई सीमा नहीं है हमेशा सीखते ...	मुस्कान गर्ग	58
41.	नमस्कार सर! मुझे पहचाना?	आलोक कुमार तिवारी (स.आ.)	59
42.	ध्येय वाक्य - एकता और अनुशासन	कैडेट अजिता मिश्रा	60
43.	भारत का नया गीत	शिखा चौहान	60
44.	मुस्कान	कु० प्रज्ञा	61
45.	हमारे बहादुर सैनिक अभिनंदन वर्धमान	खुशी शर्मा	61
46.	ख्वाबों की जिंदगी	हर्षित पालीवाल	62
47.	मातृभूमि	आर्यन रस्तोगी	62
48.	हँसना जरूरी है जीवन में	मीनाक्षी चौहान	62
49.	पेड़ है तो जीवन है	साक्षी चौहान	63
50.	सूरज	कीर्ति	63
51.	मित्र कैसा हो	रोहित सागर	63
52.	मंगलाचरण	नीतू	64
53.	भारतीय शिक्षा प्रणाली की वर्तमान स्थिति	मोनू शर्मा	64
54.	अनुशासन	खुशबू चौधरी	65
55.	बचपन	पूजा चौधरी	65
55.	कैसी दुर्दशा हुई भगवन तेरे नामों की	नीतू सिंह	65

क्रं सं.	विवरण	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
57.	चिंगारी	करन	66
58.	सफलता की कुँजी	मुस्कान	66
59.	छोटी सी कहानी बड़ी सीख	वर्षा	67
60.	क्लोरीन की आत्मकथा	गौरव मीणा	67
61.	जिंदगी	छवि गोयल	68
62.	मैं किताब हूँ	कृतिका शर्मा	68
63.	अब ना मैं रहा इंसान	योगिता कुमारी	69
64.	एकाग्रता सफलता की कुन्जी	मनोज राजपूत	69
65.	मेहनत का फल	हिमांशु तोमर	70
66.	माता पिता का प्रेम	कुलदीप कुमार	70
67.	यही है	छाया चौधरी	71
68.	महान व्यक्ति की प्रार्थना	चन्द्रवीर	71
69.	भारत ने असंभव को संभव का दिखाया	सोनू कुमार शर्मा	72
70.	न ठहर बस चलता चल	मुस्कान	72
71.	कॉलेज में मनाये गये विभिन्न कार्यक्रमों के फोटो		73-95
72.	Biodiversity : Nature's	Prof. Chandrawati	96-97
73.	An Overview on How to.....	Prof. Seemant Kumar Dubey	97-98
74.	Futurity of The Virtual Classroom	Dr. Bhuvnesh Kumar	99-100
75.	Harnessing Artificial	Prof. Pradeep Kumar Tyagi	100-101
76.	Boundary Value Problems	Harender K., Prof R.K. Agrawal	102
77.	Value Education & its impact.....	Dr. Sudha Upadhyaya	103-105
78.	Israel - Hamas War : Causes.....	Prof. U.K. Jha	105-106
79.	Career Opportunities after.....	Pankaj Kumar Gupta (Astt. Prof.)	107-109
80.	The Essential Constituents of.....	Dr. G.K. Bansal, Dr. Jagriti Singh	109-110
81.	Importance of E-Commerce	Mayank Sharma (Astt. Prof.)	111-112
82.	Importance of Artificial.....	Sachin Agrawal (Astt. Prof.)	113-114
83.	Need for Improving Quality.....	Dr. K.C. Gaur	115-116
84.	The Quantum Revolution.....	Deekshit Kumar, Cap.Yajvendra K.	117-118
85.	The Crucial Role of Pedagogy.....	Gurudatt Sharma (Asst. Prof.)	118-119
86.	India's Monetary Policy.....	Himanshu Kumar (Astt. Prof.)	120-121
87.	Trends in Global Human.....	Dr. Vishal Sharma	122-124
88.	The Evolution of Libraries in.....	Mayank Kumar	125-126
89.	Planets Roll Call	Chandraveer	127
90.	Dignity	Sapna	127
91.	The Ugly Tree	Manoj Rajput	128
92.	Dignity	Ayush Giri	128
93.	Realize The Value of Time	Sonu Kumar Sharma	129
94.	Importance of Education in Life	Prarthna Singh	129
95.	The mystery of Black Hole	Atul Kumar Roy	130
96.	Writing A Platform	Mehvish Arif	131
97.	Artificial Intelligence in Edu.....	Keerti Sharma	132
98.	Silent Heroes Stories of Soldiers	Prince Kumar	133
99.	If I Were Captain (Vikram Batra)	Sneha Choudhary	134
100.	Natural Source of Water	Chandra Prakash	134
101.	छात्रों द्वारा बनाये गये चित्र		135-136
102.	DPBSians		137-144
103.	छात्रों द्वारा बनाये गये चित्र		145-146
104.	महाविद्यालय परिवार		147-148

प्रगति आख्या

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी स्थापना के 57 वर्ष पूर्ण कर चुका है। सन 1965 से 2024 तक की इस अवधि में महाविद्यालय ने उत्तरोत्तर संरचनात्मक एवं गुणात्मक प्रगति की है। महाविद्यालय के अनेक छात्र–छात्रायें ने विश्वविद्यालय स्तर पर शैक्षिणक एवं विभिन्न पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। वर्तमान समय में महाविद्यालय में चार अनुदानित एंव छः स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, जिनमें कुल 1700 छात्र–छात्रायें अध्ययनरत है। शैक्षणिक उपलिब्धयों एवं अनुशासन की दृष्टि से यह महाविद्यालय चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

सत्र 2022–2023 का परीक्षाफल विगत वर्षो की भांति उत्तम रहा है। महाविद्यालय में उपलब्ध आंकड़ो के अनुसार परीक्षाफल निम्न प्रकार हैः–

पाठ्यक्रम	परीक्षाफल (उत्तीर्ण प्रतिशत)
बी0ए0	90.44%
बी0सी–सी0	98.80%
बी0कॉम0	83.57%
बी0सी0ए0	95.00%
एम0ए0 संस्कृत	100%
एम0एस–सी0 भौतिकी	100%
एम0एस–सी0 रसायनविज्ञान	95.00%
बी0एड0	100%

1. दिनांक 03.03.2023 को महाविद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम रिद्म 2023 का आयोजन हुआ।
2. दिनांक 20.03.2023 को छः दिवसीय स्काउट गाइड शिविर का शुभारम्भ हुआ।
3. दिनांक 29.03.2023 को डी.पी.बी.एस. कालेज, अनूपशहर में ONGC एवं वीमेन चिल्ड्रन वेलफेयर एंड रूरल डेवलपमेंट सोसायटी (WARDS) के सयुंक्त तत्वाधान में "ब्रेकिंग द साइलेस अगेंस्ट मेंस्टूएशन" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
4. दिनांक 31.03.2023 को महाविद्यालय के बी.सी.ए. विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया।
5. दिनांक 8 अप्रैल 2023 को महाविद्यालय के रसायन विभाग की अध्यक्ष प्रो0 चन्द्रावती की पुत्री नम्रता सिंह के यू.पी.पी.सी.एस. में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर प्राचार्य जी द्वारा सम्मानित किया गया।
6. दिनांक 14.04.2023 को डी.पी.बी.एस. कॉलेज में स्वच्छता अभियान 2.0 पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में डी.पी.बी.एस. कॉलेज, परदादा परदादी इंटर कॉलेज एवं जे.वी.एम. की राष्ट्रीय कैडिट कोर बिटालियन के 56 कैडिटों ने भाग लिया।
7. दिनांक 22 अप्रैल 2023 को हिंदी एवं संस्कृत विभाग द्वारा **"राम काव्य में सामाजिक सद्भाव"** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
8. 29, 30 अप्रैल, 2023 को महाविद्यालय में दो दिवसीय आई.सी.एस.एस.आर. प्रायोजित राष्ट्रीय सेमिनार**" सामुदायिक भागीदारी और पर्यावरण स्थिरता"** विषय का आयोजन हुआ। जिसमें काशी विद्या पीठ बनारस के कुलपति प्रोफेसर आनंद कुमार त्यागी की उपस्थिति आर्कषण का केंद्र रही।
9. दिनांक 15.05.2023 को महाविद्यालय में एक भव्य मंदिर निर्माण हेतु वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ पूरे विधि विधान से भूमिपूजन किया गया।
10. दिनांक 25.05.2023 को पूरे विधि विधान और वैदिक मंत्रों के साथ महाविद्यालय में शॉपिंग कांप्लेक्स एवं अतिरिक्त शैक्षणिक कक्षाओंके निर्माण हेतु भूमि पूजन हुआ।
11. दिनांक 21 मई, 2023 को संस्कृत विभाग में एम.ए. के विद्यार्थियों द्वारा फेयरवेल पार्टी का आयोजन किया गया।
12. दिनांक 15 जुलाई 2023 को महाविद्यालय के स्थापना दिवस पर हवन का आयोजन किया गया।
13. वर्ष 2023 में नए कोर्स बी0ए0 (गृह विज्ञान, इतिहास, ड्राइंग–पेंटिंग, भूगोल, रक्षा अध्ययन, हिंदी एवं अंग्रेजी), एम.कॉम. आदि विषयों की अनुमति शासन द्वारा प्रदान की गई।
14. प्रदेश भर में मनाये जा रहे 17 जुलाई 2023 से 31 जुलाई 2023 तक सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के अंतर्गत सड़क सुरक्षा नियमों पर एक संगोष्ठी का आयोजन, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन तथा एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं रोर्ब्स रेंजर के विद्यार्थियों द्वारा एक जागरूकता रैली निकाली गई। इसी पखवाड़े के अन्तर्गत महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन में करने वाले लोगों को फूल देकर जागरूक किया।
15. दिनांक 26 जुलाई 2023 को महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश कौशल विकास के अंतर्गत एक कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र एवं निशुल्क सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन प्राचार्यजी द्वारा किया गया।
16. 22 जुलाई 2023 को उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार वृक्षारोपण महोत्सव के अंतर्गत महाविद्यालय द्वारा 1000 पौधे लगाये गये एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों को भी वितरित किये गये।

17. दिनांक 09.08.2023 को महाविद्यालय की एन.सी.सी. इकाई के कैडेट्स तथा अन्य विद्यार्थियों द्वारा अमृतकाल में मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के अंतर्गत एक संगोष्ठी एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रमका आयोजन किया गया तथा भारत छोड़ो आंदोलन पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई साथ ही साथ हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत एक रैली भी निकाली गई।
18. दिनांक 10.08.2023 को महाविद्यालय में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें प्राचार्य प्रो० जी.के.सिंह ने क्रमि बचाव के उपाय बताये तथा कार्यक्रम समन्वयक प्रो0 चन्द्रावती ने छात्र–छात्राओं को एलबेंड़ाजोल की दवा खिलायी।
19. 14 अगस्त, 2023 को महाविद्यालय में एक बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य प्रो0 जी. कें सिंह की अध्यक्षता में किया गया।
20. 15 अगस्त, 2023 ध्वजारोहण कार्यक्रम के साथ एक बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत पौधे लगाये गये।
21. दिनांक 21.08.2023 को महाविद्यालय में भारत अंतरिक्ष सप्ताह मनाया गया तथा आई.ई.सी के तत्वाधान में विश्व उद्यमी दिवस भी मनाया गया।
22. दिनांक 29.08.2023 को महाविद्यालय में मेजर ध्यानचंद की जयंती पर राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया गया तथा इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान की गई।
23. दिनांक 04.09.2023 को महाविद्यालय की भारतीय भाषा संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ, संस्कृत विभाग एवं संस्कृत भारती के संयुक्तत त्वाधान में संस्कृत सप्ताह समारोह के उपलक्ष्य में प्रश्नोत्तरी गीत एवं स्त्रोत पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
24. 05 सितंबर, 2023 को महाविद्यालय में शिक्षक दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया तथा शिक्षकों को सम्मानित किया गया।
25. दिनांक 13.09.2023 को चंद्रयान–3 के साउथ पोल (सेफ लेर्डिंग) होने पर क्विज और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।
26. दिनांक 14.09.2023 को महाविद्यालय में हिंदी दिवस बड़े धूम–धाम से मनाया गया।
27. दिनांक 15.09.2023 को बी.सी.ए. विभाग, 20.9.2023 को बी.एस–सी (विज्ञान संकाय) तथा 22.09.2023 को बी.कॉम. (वाणिज्य संकाय) में दीक्षारम्भ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
28. दिनांक 19.09.2023 को पॉयट्री रेसिटेशन का आयोजन किया गया।
29. दिनांक 20.09.2023 को डांस कंपटीशन का आयोजन किया गया।
30. दिनांक 25.09.2023 को एन0 सी0 सी0 41 बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डी.एस. रावत के निर्देशन में एन0सी0सी0 भर्ती का आयोजन हुआ।
31. दिनांक 25.09.2023 को ओ.एन.जी.सी. के तत्वाधान में छात्राओं के लिए एक्यूप्रेशर चिकित्सा पर एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यशाला में एक्यूप्रेशर एक्सपर्ट मोनिका गोला ने एक्यूप्रेशर से संबंधित अनेक जानकारी दी तथा एक्यूप्रेशर द्वारा विभिन्न बीमारियों को दूर करने के उपाय बताये।
32. दिनांक 27.09.2023 को डी पी बी एस कॉलेज में अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति के तत्वधान में दिनांक 29.04.2023 को पुलिस अधीक्षक बजरंगबली चौरसिया एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य एक संवादशाला का आयोजन किया गया। जिसमें उन्होंने छात्रों को प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी करने के बारे में विस्तार से बताया।
33. दिनांक 30.9.2023 को नशा मुक्ति कार्यक्रम पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
34. दिनांक 01.10.2023 को विशेष स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को स्वच्छता के बारे में जागरूक किया गया, शपथ दिलायी गयी तथा सभी प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं द्वारा श्रमदान करने के साथ–साथ स्वच्छता रैली का भी आयोजन किया गया।
35. दिनांक 02.10.2023 को महाविद्यालय में गांधी जयंती मनायी गयी और विद्यार्थियों को गांधी जी के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए जागरूक किया गया।
36. दिनांक 06.10.2023 को एक भारत श्रेष्ठ भारत पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें श्री एस.पी.एस. तोमर (सचिव, प्रबंध समिति) ने आयुर्वेद, प्राकृतिक विविधता आदि पर चर्चा की।
37. दिनांक 19 व 20 अक्टूबर, 2023 को महाविद्यालय में पूज्य स्वामी श्री कर्मवीर जी महाराज की उपस्थिति में दो दिवसीय विशाल योग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें योग कराया गया, स्वास्थ्य परामर्श दिया गया, औषधीय पौधे तथा आहार विहार पर एक कार्यशाला और पत्रकारों के साथ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया।
38. 26 एवं 27 अक्टूबर, 2023 को दो दिवसीय अंतर महाविद्यालय बास्केटबॉल (पुरुष) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें हमारे महाविद्यालय से एक विद्यार्थी का विश्वविद्यालय टीम में चयन हुआ।

39. दिनांक 27.10.2023 को एक विशाल जिलास्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिस में चयनित विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।
40. दिनांक 31.10.2023 को सरदार पटेल जयंती मनाई गई दिनांक 31.10.2023 को कौशल की संभावनाओं को तराशने के लिए एक **"उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन"** का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों को हस्त शिल्प कौशल की संभावनाओं को तरासने के लिए जागरूक भी किया गया।
41. दिनांक 02 नवंबर, 2023 को महाविद्यालय में डीपीबीएसवाणी (dpbsvani) नाम के पॉडकास्ट चैनल का शुभारंभ किया गया।
42. दिनांक 27.11.2023 को कार्तिक स्नान के अवसर पर डी पी बी एस कॉलेज और एल.डी.ए.वी. इंटर कॉलेज के रोवर रेंजर और स्काउट गाइड के छात्रों ने गंगा घाट पर शिशु मंदिर में बनाई गई खोया – पाया कैंप में नागरिकों की मदद की।
43. दिनांक 06.12.2023 को भारत रत्न बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
44. दिनांक 08.12.2023 को महाविद्यालय में एक्टिविटी क्लब, एन.एस.एस. और एन.सी.सी. की इकाई ने **"प्राचीन शिक्षा पद्धति गुरु शिष्य परंपरा"** पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें श्री एस.पी.एस.तोमर (सचिव, प्रबंध समिति) ने विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम् पर चर्चा की।
45. दिनांक 09.12.2023 को बी.एड. प्रथम वर्ष के नव प्रवेशित विद्यार्थियों का दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
46. दिनांक 11.12.2023 को महाविद्यालय में तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता बूस्ट–2023 का आयोजन किया गया।
47. दिनांक 14 दिसंबर, 2023 को कॉलेज में राष्ट्रीय चेतना मिशन के अन्तर्गत एक **रक्तदान** शिविर का आयोजन किया गया।
48. दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को कॉलेज का वार्षिकोत्सव **रिद्म–2024** का आयोजन किया गया तथा साथ ही शैक्षणिक मेधावियों को पुरस्कृत किया गया।
49. दिनांक 22.12.2023 को महाविद्यालय के संस्कृत विभाग एवं संस्कृत भारती के संयुक्त तत्वावधान में **"श्रीमद् भागवत गीता जयंती"** कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
50. दिनांक 22.12.2023 को महाविद्यालय में महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन के जन्मदिन के अवसर पर **राष्ट्रीय गणित दिवस** का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के पूर्व कार्यवाहक प्राचार्य डॉ0 मुकेश गुप्ता ने श्रीनिवास रामानुजन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर से विस्तार जानकारी दी।
51. दिनांक 02 जनवरी, 2024 को महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन एवं राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में विकास खंड स्तरीय पंडित दीन दयाल उपाध्याय कौशल योजना के अंतर्गत एक रोजगार मेले का आयोजन किया गया।
52. दिनांक 11.01.2024 को महाविद्यालय ने **सोशल आउट रीच प्रोग्राम** के अंतर्गत ग्राम पंचायत **खुशहालगढ़** को गोद लिया गया। जिसमें भारतीय संस्कृति के गौरव को बढ़ाने वाली शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि व पर्यावरण इत्यादि से संबंधित जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।
53. दिनांक 15.01.2024 को महाविद्यालय ने मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर गंगा स्नान पर आने वाले श्रद्वालुओं प्रसाद वितरण किया।
54. दिनांक 18.01.2024 को महाविद्यालय में भारत स्काउट और गाइड (रोबर/रेंजर) बुलंदशहर के तत्वावधान में **मत दाता जागरूकता स्लोगन** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
55. दिनांक 19.01.2024 को महाविद्यालय में नैक समिति और आइ.क्यू.ए.सी. की कार्यशाला का आयोजन किया गया।
56. दिनांक 22.01.2024 को महाविद्यालय में श्री राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के महापर्व को बड़े आनंद एवं धूम–धाम के साथ मनाया गया।
57. दिनांक 23.01.2024 को महाविद्यालय में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती बड़े हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी।
58. दिनांक 27.01.2024 को महाविद्यालय में संस्कृत विभाग द्वारा एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया।
59. दिनांक 30.01.2024 को महाविद्यालय के टैगोर भवन में भगवान गौरी शंकर जी की मूर्ति पुनः स्थापित कर माल्यार्पण किया गया।
60. दिनांक 30.01.2024 को महाविद्यालय में बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा कुमारी अंजू ने चेन्नई में आयोजित **खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2023 में लंबी कूद प्रतियोगिता** में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए छठवां स्थान प्राप्त किया।
61. 31.01.2024 को महाविद्यालय में **रोड सेफ्टी क्लब** द्वारा सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत सड़क सुरक्षा संबंधी एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
62. दिनांक 01 फरवरी 2024 को महाविद्यालय में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
63. दिनांक 01.02.2024 को महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत सड़क सुरक्षा संबंधी एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
64. दिनांक 06.02.2024 को महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत रोड सेफ्टी क्लब निर्देशन में सड़क सुरक्षा शपथ का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
65. दिनांक 06.02.2024 से 08.02.2024 तक महाविद्यालय परिसर में प्राचीन देव मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा कर प्रसाद वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

अनुशासता मंडल

जिस प्रकार जीवन में किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में अनुशासन का बड़ा महत्व है। ठीक उसी प्रकार किसी भी महाविद्यालय की विकास यात्रा में महाविद्यालय प्रांगण में संचालित अनुशासता मंडल एक महती भूमिका निभाता है। यहाँ यह कहना गलत नहीं होगा की खुद प्रकृति से भी हम सभी को अनुशासता एवं नियमों में रहने का सबक सीखने को मिलता है, क्योंकि एक अनुशासित वातावरण ही हम सभी को संतुलित विकास के पथ पर ले जाता है। अनुशासन के अनुपालन में व्यक्ति, समाज तथा संस्था एक समुचित एवं सतत् प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है। सन् 1965 में जिस समय महाविद्यालय की स्थापना हुई तभी से अनुशासन के महत्व को समझा गया और से पृथक रूप से एक अनुशास्ता मंडल की स्थापना की गई। मंडल का कार्य अपने दायित्वों को प्रतिपादित कर विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उनके नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना रहा है।

विद्यार्थियों में अच्छे संस्कारों को विकसित करने के उद्देश्य से हमेशा अनुशासन मंडल ने संगठित रूप से कार्य किया है। इस क्रम में डॉ एस०एस०ढल, डॉ० बी०एस० गुप्ता, डॉ० के०पी० सिंह, डॉ० मुकेश गुप्ता, डॉ० के०पी० सिंह (सांख्यिकी विभाग) एव० डॉ० के०एस० चौहान ने जुलाई 2008 तक महाविद्यालय में मुख्य अनुशासन अधिकारी के रूप में कार्यभार संभाला तथा सम्बंधित दायित्वों को पूरी गम्भीरता से पूरा किया। उस समय में भी महाविद्यालय प्रांगण में छात्र-छात्रा निर्धारित गणवेश में अनुशासित रहते हुए पूर्ण निष्ठा से अपने कार्य करते थे। तदुपरांत वर्तमान समय में प्रो० पी०के०त्यागी विभागाध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग ने मुख्य अनुशासन अधिकारी के रूप में अगस्त 2008 के निरंतर अनुशासन की बागडोर को संभाला। आपने अनुशासन की परम्पराओं को विकसित कर उन्हें एक नया रूप प्रदान किया। जिसमें छात्र/छात्रा अनुशासन में रहते हुए शैक्षिक वातावरण के साथ-साथ महाविद्यालय की विभिन्न प्रतियोगिताओ में भी अनुशासित रहकर प्रतिभाग करते हैं। आपने अपनी सूझबूझ से महाविद्यालय अनुशासन को और अधिक सुद्वढ़ बनाने में सहयोग किया। वर्ष 2021 में उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा आयोग से चयनित महाविद्यालय प्राचार्य प्रो०जी० के सिंह के कुशल निर्देशन में महाविद्यालय में अनुशासन व्यवस्था को ओर अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए अनुशासन मंडल द्वारा दीक्षांरभ कार्यक्रम, शिक्षक अभिभावक एवं संवादशाला कार्यक्रम शुरू करने के साथ साथ और नये नियम प्रतिपादित किये। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा और सद्गुणों के लिए प्रेरित करते हुए एवं शिक्षक वातावरण को बनाए रखते हुए किसी भी प्रकार से महाविद्यालय का अनुशासन कमजोर न हो। जिसका परिणाम है कि वर्तमान समय में कॉलेज प्राचार्य प्रोफेसर जीके सिंह के निर्देशन एवं मुख्य अनुशासन अधिकारी प्रोफेसर पी०के० त्यागी एवं अन्य अनुशासन अधिकारी के साथ-साथ कॉलेज के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के असीम योगदान से कॉलेज अनुशासित तरीके से स्वच्छ शैक्षिक वातावरण बनाने में सक्षम हु आ है।

महाविद्यालय परिसर में वर्तमान समय में अनुशासन की दृष्टि से निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है-

1. महाविद्यालय द्वार विद्यार्थियों को निर्धारित गणवेश (यूनिफार्म) में ही अध्ययन कार्य हेतु कक्षाओं में उपस्थिति को अनिवार्य गया है, जिसका निरीक्षण निरंतर किया जाता है।
2. छात्र/छात्राओं को महाविद्यालय पहचान हेतु परिचय-पत्र को प्रतिदिन साथ लाने की अनिवार्यता है। जिसका निरीक्षण प्रत्येक दिन महाविद्यालय के मुख्य गेट पर किया जाता है।
3. महाविद्यालय के भौतिक संसाधनों की सुरक्षा हेतु निरंतर अनुशासन मंडल की टीम द्वारा निरीक्षण किया जाता है।
4. महाविद्यालय के भौतिक संसाधनों की सुरक्षा हेतु निरंतर अनुशासन मंडल की टीम द्वारा निरीक्षण किया जाता है।
5. अनुशासन मंडल की टीम अनवरत् छात्र/छात्राओं के आचार-व्यवहार सम्बंधी नैतिकता को ध्यान में रखते हुए निरीक्षण करती है।

वर्तमान समय में महाविद्यालय के अनुशासन सम्बंधी नैतिक वातावरण के निर्माण करने में संलग्न अनुशासन मंडल की टीम का विवरण अग्रांकित है-

मुख्य अनुशासता-

- **प्रो०पी०के०त्यागी**

अनुशासक-

- **प्रो० चन्द्रावती**

सदस्य अनुशासता मंडल-

- **श्री यजवेंद्र कुमार**
- **प्रो० सीमान्त कुमार दुबे**
- **श्री मंयक शर्मा**
- **डॉ० वीरेंद्र कुमार**
- **डॉ० तरूण कुमार**
- **श्री सोहन आर्य**

राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC)

सन् 1948 में राष्ट्रीय कैडेट कोर का गठन भारत के युवा छात्रों के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्षण था। राष्ट्रीय कैडेट कोर का गठन भारतीय सेना में ऑफिसर की कमी की पूर्ति करने के लिए किया गया था अपने वर्तमान स्वरूप में आने के बाद पिछले 75 वर्षों में राष्ट्रीय कैडेट कोर ने खुद को दुनिया के सबसे बड़े वर्दीधारी युवा संगठन के रूप में विकसित किया। जाति, पंथ, लिंग और सामाज की सभी सीमाओं को पार करके अपने सिद्धांत एकता और अनुशासन पर कायम रहकर भारतीय सेना व समाज के अन्य क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान किया है। दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह कॉलेज में वर्ष 1969 इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है जब इस कॉलेज के विद्यार्थियों को प्राचार्य डॉ० बी०डी० गुप्ता ने अनुभव और रोमांच की नई दुनिया में प्रवेश करने का अवसर प्रदान किया। इस वर्ष 41 यूपी बटालियन एनसीसी बुलंदशहर की 1/3 यूनिट के रूप में हमारे महाविद्यालय में एनसीसी की एक यूनिट खड़ी की गई। वर्ष 1970 के प्राध्यापक डॉ० एस०एस० ढल ने ऑफिसर ट्रेनिंग में महाविद्यालय अकेडमी से 3 महीने की कठोर ट्रेनिंग पूरी करके महाविद्यालय के एसोसिएट एन०सी०सी० ऑफिसर का कार्य प्रारम्भ किया। इस पद पर डॉ० एस०एस० ढल ने वर्ष 1996 तक कार्य किया इस दौरान डॉ० एस०एस० ढल ने सेना के सेकंड लेफ्टिनेंट से मेजर तक प्रमोशन प्राप्त किया। वर्ष 1996 से वर्ष 2013 तक डॉ० पी०के० त्यागी ने के एसोसिएट महाविद्यालय एन०सी०सी० ऑफिसर का कार्य किया। वर्तमान में कैप्टन यजवेन्द्र कुमार एसोसिएट एन०सी०सी० ऑफिसर है। पिछले 55 वर्षों से महाविद्यालय की एन०सी०सी० इकाई ने एन०सी०सी० कैडेट्स को सैन्य प्रशिक्षण देने के साथ साथ नेतृत्व क्षमता, समाजिक दायित्व, एवं भाई-चारे की भावना का विकास किया। महाविद्यालय के एन०सी०सी० कैडेट्स ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए विभिन्न कार्यक्रमों जैसे प्रौढ़ शिक्षा, पल्स पोलियो अभियान, वृक्षारोपण, ब्लड डोनेशन, स्वछता अभियान व अन्य सरकारी योजनाओं का जन जन तक पहुँचाने के लिए जन जागरूकता अभियान चलाये गए। के एन०सी०सी० कैडेट्स ने अनेक क्षेत्रो में नेतृत्व प्रदान किया कैडेट विनीत बालियान दिल्ली हाईकोर्ट में वकील है, कैडेट नरेश भारद्वाज अनूपशहर के जाने मने टिम्बर मर्चेंट है।

कैडेट भूपेंद्र ने 2023 में 26 जनवरी को कर्तव्य पथ पर होने वाले गणतन्त्र दिवस की परेड में भाग लिया था।

कैप्टन यजवेन्द्र कुमार

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

स्वतंत्रता के बाद का समय शैक्षिक सुधार के उपाय, और शिक्षित मानव शक्ति की गुणवत्ता बढ़ाने के साधन, दोनों के रूप में विद्यार्थियों के लिए सामाजिक सेवा शुरू करने की प्रेरणा का समय था सामाजिक सेवा को ध्यान में रखते हुए 24 सितंबर 1969 में एनएसएस कार्यक्रम शुरू किया और साथ ही राज्यों कं मुख्यमंत्रियों से सहयोग और सहायता का अनुरोध किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को साकार रूप प्रदान करने के उद्देश्य से अप्रैल 1978 में डीपीबीएस डिग्री कॉलेज अनूपशहर में राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रथम इकाई डॉ० के पी सिंह के नेतृत्व में स्थापित हुई। डॉ० के०पी० सिंह नं अपने कुशल सामाजिक अनुभवों के आधार पर इस इकाई को मूर्त रूप प्रदान किया। डॉ० के पी सिंह के पश्चात् निम्नलिखित अधिकारियों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्यों को पूर्ण करने हेतु अपना योगदान दिया।-

- डॉ० के०एस० चौहान
- डॉ० मुनेश कुमार
- प्रो० ऋषि कुमार अग्रवाल
- डॉ० यजवेन्द्र कुमार
- प्रो० सीमांत कुमार दुबे
- श्री लक्ष्मण सिंह
- श्री सोहन आर्य (वर्तमान)

07-03-1987 को डीपीबीएस महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की द्वितीय इकाई प्रारंभ की गई इस इकाई के अधिकारी निम्नलिखित रहे-

- डॉ० मुकेश गुप्ता
- डॉ० बीपी सिंह
- डॉ० राजकुमार
- डॉ० उमेश कुमार झा

सन् 2004 में अपरिहार्य कारणों से राष्ट्रीय सेवा योजना की द्वितीय इकाई को महाविद्यालय में बंद कर दिया गया।

विश्वविद्यालय से प्राप्त निर्देशों के अनुसार महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा संपूर्ण कार्यक्रम यथासमय संपादित होते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय दिवसों को आयोजन किया जाता है तथा प्रतिवर्ष तीन एकदिवसीय शिविर आयोजित किए जाते हैं। गत वर्ष प्रथम एकदिवसीय शिविर महाविद्यालय प्रांगण में ही आयोजित किया गया जिसमें स्वयंसेवकों द्वारा महाविद्यालय की सफाई की गई एवं तदनंतर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना का द्वितीय शिविर मस्तराम घाट पर आयोजित किया गया इस शिविर में राष्ट्रीय योजना के स्वयंसेवकों द्वारा पतित पावनी मां गंगा की सफाई की गई एवं सामान्य जनता को गंगा मां की स्वच्छता हेतु प्रेरित किया। राष्ट्रीय सेवा योजना का तृतीय एकदिवसीय शिविर बवस्टरगंज पर आयोजित किया हुआ जहां समस्त स्वयंसेवकों ने गंगा मां की सफाई की एवं स्वच्छता हेतु शपथ ग्रहण की। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सेवा योजना का सप्त दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया इस शिविर में स्वयंसेवकों द्वारा सातों दिन पृथक पृथक कार्यक्रम आयोजित किए गए यथा स्वच्छता कार्यक्रम, सड़क सुरक्षा कार्यक्रम, पोस्टर प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, जिम भ्रमण, सामूहिक भोज इत्यादि इसके अतिरिक्त सप्त दिवसीय शिविर के अंतर्गत कैंप फायर का भी आयोजन किया गया।

श्री सोहन आर्य

रोवर्स रेंजर्स

डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर में उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड के अंतर्गत रोवर्स/रेंजर्स की वर्ष 2022 में सदस्यता प्राप्त की हैं। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन होता रहता है, इसमें विद्यार्थियों को राज्यपाल और राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात् विभिन्न सरकारी नौकरियों में आरक्षण प्राप्त रहता है, कुछ सरकारी विभागों में तो इनका कोटा भी निर्धारित है।

अपने कॉलेजे के लिए यह गर्व की बात है कि वर्ष 2022 में उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड लखनऊ द्वारा डॉ० तरूण श्रीवास्तव की नियुक्ति डीपीबीएस रोवर्स क्रू पंजीकरण संख्या 4741/29.06.2022 में रोवर्स लीडर के पद पर उत्तर पद्रेश राज्य के जनपद बुलंदशहर तहसील अनूपशहर में की गई। इसी क्रम में डॉ० सुनीता गौड़ की नियुक्ति छोटी काशी रेंजर्स टीम पंजीकरण संख्या 4744/29.09.2022 में रेंजर लीडर के रूप में जनपद बुलन्दशहर तहसील अनूपशहर में की गई है।

उत्तर प्रदेश भारत सकाउट और गाइड बुलंदशहर के तत्वाधान में दिनांक 16.11.22 से 18.11.22 तक प्रवेश (रोवर/रेंजर) जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डीपीबीएस रोवर क्रू के 24 छात्र, छोटी काशी रेंजर टीम के 24 छात्रओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्राचार्य प्रोफेसर जीके सिंह ने झंडारोहण कर प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया। जिला संगठन कमिश्नर पवन कुमार राठी ने झंडारोहण, झंडा गीत, स्काउट प्रार्थना, मार्च पास्ट नियम, प्रतिज्ञा, टोली विधि, विभिन्न प्रकार की तालियां, सैल्यूट, टैण्ट लगाना, विभिन्न प्रकार की गांठे लगाना, गैजेट बनाना, प्राथमिक उपचार संबंधी विभिन्न प्रकार की जीवन रक्षक विधियाँ सिखाई गई, समापन पर सभी छात्र छात्राओं को रोवर अधिकारी डॉ० तरूण श्रीवास्तव ने दीक्षा व प्रतिज्ञा दिलाई ओर कहा कि छात्र अब रोवर रेंजर में परिवर्तित हो चुके हैं वह राष्ट्र व समाज की सेवा की लिए तैयार है। विभिन्न प्रकार स्काउट गाइड की गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया। रेंजर अधिकारी डा० सुनीता गौड़ ने सभी का धन्यवाद दिया।

रोवर अधिकारी
डॉ० तरूण श्रीवास्तव
रेंजर अधिकारी
डॉ० सुनीता गौड़

समाज शास्त्र विभाग

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह कॉलेज अनूपशहर में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना एक अलग विभाग के रूप में सन् 1984 में हुई एवं सन1987 को स्थायी शिक्षक के रूप में डॉ० करण सिंह चौहान ने कार्यभार ग्रहण किया तथा सन 2013 तक अपनी सेवाएं विभाग को दी, उनके निर्देशन में विद्यार्थियों को समाजशास्त्र विषय का गहन ज्ञान प्राप्त हुआ तथा विभाग ने समाजशास्त्र को एक लोकप्रिय विषय के रूप में ख्याति दिलवाई, कुछ वर्षो तक एक स्थायी शिक्षक के अभाव में पद खाली रहा, जिसके लिए अस्थायी शिक्षकों की नियुक्तिया की गई इस दौरान विभाग की गतिविधियां सामान्य रहीं।

वर्ष 2022 में उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग से चयनित श्री अनिल कुमार ने सहायक आचार्य के रूप में पद का कार्यभार ग्रहण किया। स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र के उददेश्य को पूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों के समय समय पर व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। विद्याथी समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझ पाने में सक्षम हो रहे है। समाज के नव निमार्ण में छात्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, ऐसे में समाज की बारीक समझ होना आवश्यक है। जिस हेतु विभाग में निरंतर पाठ्य क्रियाओं के साथ साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जा रहा है।

विभाग की गतिविधियाँ

- विभाग ने जी-20 के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम 2022 में आयोजित कराया जिसमें प्राचार्य श्री जी के सिंह एवं वरिष्ठ आचार्य श्री यू.के. झा एवं विभाग प्रभारी श्री अनिल कुमार द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।
- विभाग ने 30 सितंबर 2023 को नशा मुक्ति पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें वक्ता के रूप में अर्थशास्त्र विभाग श्री हिमांशु जी एवं भौतिक विज्ञान प्रभारी श्री यजवेंद्र कुमार जी ने एक व्याख्यान दिया तथा इस कार्यक्रम का संचालन श्री अनिल कुमार विभाग प्रभारी समाजशास्त्र विभाग द्वारा किया गया।

हमारे कॉलेज के प्राचार्य प्रो० जी०के० सिंह के मार्गदर्शन में पिछले कुछ वर्षो में विभाग ने अनेक गतिविधियाँ जैसे व्याख्यान प्रतियोगिता और जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया है तथा भविष्य में भी प्रो० जी०के० सिंह के मार्गदर्शन से यह विभाग अपनी ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा तथा शिक्षा गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देगा।

अनिल कुमार

DEPARTMENT OF PHYSICS

The Department of Physics at DPBS College Anupshahr has been a source of pride for the institution since its establishment in 1965. Guided by a rich history and a commitment to academic excellence, the department has played a pivotal role in shaping the educational landscape in the college. This summary delves into the department's journey, from its inception to its current status as a prestigious entity within CCS University. The department has had a series of dedicated leaders who have helped to enhance the academic environment and ensure continuity in the department's growth. In 1965, the department welcomed its first head, Dr. B.D Gupta, an experienced and dedicated teacher. His leadership laid the foundation for the department's growth and set the stage for its future endeavors. Under Dr. Gupta's guidance, the department began its mission to provide quality education in the field of physics.

The turning point for the department came during the 1992-93 session when it received permission to initiate M.Sc. course from the University. It marked a significant milestone, signifying the department's academic progress and its contribution to higher education. Dr. S. S Dhal succeeded Dr. Gupta as the head of the department, and under his leadership, the department continued to evolve. Following Dr. S. S Dhal's retirement, Dr. K.P Singh assumed the role of the department head, bringing his expertise to further enhance the academic environment. Dr. V.K Goyal succeeded Dr. Singh, ensuring a smooth transition and continuity in the department's growth. The successive appointments of dedicated leaders underscored the department's commitment to providing students with a robust education in physics. Since then, the Department of Physics has experienced consistent growth and has earned its prestigious status with in CCS University Meerut.

The academic year 2020-21 saw a new chapter with Shri Yajvendra Kumar, a senior fellow of the department, taking charge as the head of the Physics Department. The current head of the Physics Department, Shri Yajvendra Kumar, continues the legacy of the department by maintaining and advancing its high standards of education. As of the latest information available, the faculty composition includes Shri. Yajvendra Kumar as Assistant Professor and Head, Shri Deekshit Kumar as Assistant Professor, and Shri Shail Chaudhary serving as a Tutor. The commitment of these well-qualified faculty members extends beyond traditional teaching, encompassing research, academic activities, and participation in various extra-curricular events.

The department's dedication to research is evident in the substantial number of research papers published by faculty members in national and international journals. This scholarly output reflects the department's engagement with cutting-edge developments in physics and its commitment to advancing knowledge in the field.

In adherence to the guidelines set by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC), the department organizes a variety of programs, including quiz competitions, science model exhibitions, and seminars. These initiatives not only enrich the academic experience for students but also contribute to the overall development of a culture of inquiry and innovation within the department.

Department organized one day national seminar on "Recent trends in science and technology" in the year 2022.

The impact of the Department of Physics extends beyond the academic realm, as evidenced by the notable achievements of its alumni. The department's alumni have assumed commanding roles in various organizations, contributing their skills and knowledge to serve the country. Our alumni Dr. Navab Singh presently working as Director, Advanced Process Modules, Technical Director, Wide Bandgap Program and Engineering Head, in National Gan Technology Center, Institute of Microelectronics, A Star Singapore. The Department of Physics envisions a promising future with a commitment to quality education, research excellence, and a holistic approach to student development. With its rich history, dedicated faculty members, and commitment to academic excellence, the Department of Physics at DPBS College Anupshahr is a dynamic community that nurtures intellectual curiosity and instills a sense of responsibility in its students.

In the year 2022 two of our M.Sc Physics students got positions in CCS University Meerut Merit List.

Ujjawal Singh got 1st position in boys category, and Nikita Sharma got 2nd position in overall category.

Captain Yajvendra Kumar

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

The establishment of the Chemistry Department in the college started with the establishment of the college in 1965. The chemistry department in the college started with ten students. After a few sessions, due to the quality study and teaching work of the department, the number of students increased gradually, as a result of which the management committee of the college, understanding the need of the students for their studies, took recognition of an additional department by the university and started evening classes for the benefit of the students. Kept supreme. In the initial period of the department, Mr. Bhanupratap Singh and Dr. Virendra Swaroop Gupta were working as lecturers and Mr. Godhamal, Mr. Jaiprakash and Mr. Suraj Pal were working as non-teaching staff in the laboratory. After the departure of Dr. Virendra Swaroop Gupta, Dr. Munesh Kumar took charge of the department in the year 1989. Thereafter, in the year 2000, Dr. Chandravati, selected by the Higher Education Commission, took charge in the Chemistry Department. For the bright future of the students and for the upliftment of the department and the college, the most respected Shri Jaiprakash Ji Gaur, Chairman of Jai Prakash Seva Sansthan, built laboratories for the department for graduate level, post graduate level and research work. After receiving the UGC grant from the government, new modern equipment was also purchased to further upgrade the laboratories of the department. With the efforts of former head of the department, Dr. Munesh Kumar, a postgraduate department was established in the year 2002 and a research center was established in the year 2003. Six students completed their research work with Dr. Munesh Kumar as their supervisor. Since the graduation of the department, lecturers like Dr. Praveen Tyagi, Dr. Naresh Kumar, Mr. Lokesh Mehra, Dr. Bavita Bhardwaj etc. have provided their services. Dr. Munesh Kumar retired on 30 June 2019. At present, under the leadership of Professor Chandrawati, Dr. G.K. Bansal, Dr. Jagrati Singh are working as Assistant Professors and Mr. Sunil Kumar, Mr. Gajendra Singh, Mr. Amarnath Rai and Mr. Nitin Kumar are working as non-teaching staff. Through the skillful guidance of teachers and their hard work from time to time, talented students have achieved many achievements, From time to time, along with studies and teaching, the department also organizes other co-academic activities. A seminar was organized under the joint aegis of Chemistry Department and Sanskrit Department. A huge district level science exhibition was organized by the department in October 2023, in which a large number of students from the entire district participated. To make more qualitative research work in the Chemistry Department of the college, there is a laboratory complete with all modern facilities along with a library in the department, in which high quality books and international journals are available. Apart from this, commencement, freshers and farewell programmes, teachers' day programs etc. are organized by the department. From time to time, the department also organizes industrial tours and visit book science fairs to increase the knowledge and social harmony of the students. Dr. Jagrati Singh (Assistant Professor) working in the department has participated in many seminars and has three research papers and Dr. GK Bansal (Assistant Professor) has participated in many seminars and has eleven research papers and three chapters published in international journals and various books. At present, the Head of the Department, Professor Chandrawati, has participated in many seminars, has published fourteen research papers in international journals, one book, five chapters in various books, as well as participation in two workshops and has received awards and honors from the university on the implementation of the National Education Policy-2020. Along with teaching work and examination work, he is in charge of various committees of the college like Publication Committee, IQAC, Student Welfare Committee, Divyang Jan Sahayata, Publicity Cell, Research and Innovation Cell, Medical Committee etc. and has been the Scholarship Nodal officer since the year 2004 Working as officer and cultural program in-charge. Professor Chandrawati believes that being a woman, the reason behind so many responsibilities is the efficient leadership, direction and trust of the college principal, Professor G.K. Singh, as a result all the responsibilities are positive. All the teachers and non-teaching staff of the department are doing all the work of the college with full devotion and dedication. Under your leadership the department is moving on the path of progress.Prof. Chandrawati

Prof. Chandrawati

DEPARTMENT OF MATHEMATICS

The Department of Mathematics was established at our College in July 1965 with establishment of the College. In starting College started the B.Sc. course in Physics, Chemistry and Mathematics only. Despite being a U.G. Department, it is providing quality education to the students of nearby areas for last 58 year.

In 1965 the only founder faculty member Shri. D. R. Goyal leaded the Department till he become the Principal of the college 1982.

Dr. Mukesh Gupta joined the Department on 22 -10-1982. Despite being a faculty of U. G. Department, Dr Gupta was co- supervisor for Ph. D. of three students from Agra University, Agra. Dr Gupta was very active in research work, he was member of editorial board of journals. Dr. Gupta has published 79 research papers in peer reviewed/U.G.C. listed journals.

After the implementation of U. G. three year Degree course Mr. Rishi Kumar Agarwal joined the Department under the Head Dr. Mukesh Gupta. Mr. Agarwal also completed his Ph. D. under the co-supervis Dr. Mukesh Gupta from Dr B R Amedkar University Agra. Dr. Agarwal has published 15 research papers in peer reviewed/ SCOPUS journals and co-author of more than six edited books for NEP published by Krishna Prakashan Media Pvt. Ltd. Meerut. After the retirement of Dr. Gupta in 2018 Dr. Agarwal took the Charge of the Department and manage the department with the help of part-time Teachers provided by College Managing Committee. Dr. Agarwal became member of CCS University, Meerut Board of Studies for two years in 2020. Dr. Agarwal was also nominated for member of Board of studies for Vadic Mathematics for two years in 2021. Dr. Agarwal was member of NEP Syllabus designing committee for three year U. G. program and one year Vadic Mathematics certificate program for university campus only.

Mr. Harender Kumar Joined the Department as an Assistant Professor under advertisement No. 50 through UPHESC on 27-07-2022. Mr. Harender Kumar is pursuing his Ph. D. under the supervision of Dr. Neha Yadav from the National Institute of Technology Hamirpur, Himachal Pradesh. Mr. Harender Kumar has published three research papers in SCIE/ SCOPUS journals. Mr. Harender Kumar also qualified the CSIR-UGC National Eligibility test of Dec 2018 and received JRF.

The Department celebrates the National Mathematics Day every year on 22 Dec. The result of the Department is very high and many students got place in university merit. The students passed-out from the Department are doing well in India and also serving abroad.

Under the great leadership of our present Principal Prof. G.K. Singh, the Department is growing up.

Prof. R.K. Agrawal

DEPARTMENT OF ENGLISH

English Department was established at DPBS College, Anoopshahr in 1984 with the opening up of Arts Faculty. Despite being a U.G. Department with sanctioned post of only one faculty came into existence in 1985. It is providing qualitative education to the students of nearby areas for the last 38 years.

During the initial years the Department was run by the faculty appointed by the college Managing Committee on ad-hoc basis till 7-8-1988. For the first time, Miss Archana Kumari was appointed as permanent faculty in the Department on 08-08-1988, after being selected by 'Uttar Pradesh Higher education service Commission' Allahabad. In the period of her tenure service, the Department was running smoothly till 03-04-1996. Since then Managing Committee has appointed many teachers on ad-hoc basis upto present time.

Mr. Chandra Prakash among ad-hoc basis teachers was appointed on 26-08-2013 and since then under him and the dynamic supervision of the chaired Principal Prof. G.K. Singh, teaching of English Subject is being fulfilled with enhancement of capability, appraisal as Spoken English and understanding for students' future sucess in challenging and changing world.

Chandra Prakash

सांख्यिकी विभाग

अनिश्चित ज्ञान + अनिश्चितता की मात्रा का ज्ञान= उपयोगी ज्ञान

डीपीबीएस कॉलेज में सांख्यिकी विभाग की स्थापना 1978 में हुई। यह विभाग डीपीबीएस कॉलेज के अग्रणी विभागों में से एक है। सांख्यिकी को मौजूदा पाठयक्रमों के साथ-साथ एडवांस/ऑनर्स यूजी स्तर पर अध्ययन के एक प्रमुख विषय के रूप में सांख्यिकी की पेशकश शुरू की। सांख्यिकी विभाग के संस्थापक विभाग अध्यक्ष डॉ० के०पी० सिंह थे विभाग ने डॉ० के०पी० सिंह के कुशल मार्गदर्शन में अनंत ऊचाइयों को स्पर्श किया। वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो० पी०के० त्यागी ने 1989 को विभाग में कार्यभार ग्रहण किया। वर्तमान समय में प्रो० पी०के० त्यागी के ऊर्जावान नेतृत्व में सांख्यिकी विभाग अनवरत गतिमान है। वर्तमान समय में विभाग में श्री नरेन्द्र रंजन अंशकालिक प्रवक्ता के रूप में तथा श्री रामावतार लैब बॉय के रूप में कार्यरत हैं। विभाग के पास वर्तमान में अच्छी सांख्यिकीय कम्प्यूटिंग सुविधाओं से युक्त 12 (बारह) डेस्कटॉप कम्प्यूटरों की एक सुसज्जित कम्प्यूटर प्रयोगशाला है। संकाय अन्य प्रसिद्ध संस्थानों जैसे (1) भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता और (2) सांख्यिकी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहयोग से गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान कार्यों में लगे हुए हैं। वे नियमित रूप से भारत और विदेशों में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और कार्यशालाओं में अपने शोध पर प्रस्तुतियाँ दे रहे हैं। सभी नियमित शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा, छात्रों को एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) में भागीदारी के माध्यम से विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। नवप्रवेशित छात्रों के लिए फ्रेशर्स स्वागत कार्यक्रम, बाहर जाने वाले छात्रों के लिए फेयर-वेल कार्यक्रम, शिक्षक दिवस समारोह और पत्रिका अवंतिका का प्रकाशन भी आयोजित किया जाता है। कुछ सीमाओं के बावजूद, इस विभाग को सांख्यिकी पर अध्ययन का आनंद लेने का एक सच्चा केंद्र बनाने के प्रयासों में कोई कमी नहीं है और आशा है कि इस विभाग के छात्र अपने गुणों के माध्यम से हमारे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी योग्यता और क्षमताओं को साबित करना जारी रखेंगे।

विभागीय उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं।

1. अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रों की संख्या:22
2. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की संख्या:14
3. प्रकाशित पुस्तकों की संख्या:03
4. पुस्तकों में प्रकाशित अध्यायों की संख्या: 04
5. विभिन्न शोध पत्रिकाओं में संपादक: 04
6. सदस्य शोध डिग्री समिति, बोर्ड ऑफ स्टडीज और साहित्यिक और सांस्कृतिक परिषद सीसीएस विश्विद्यालय मेरठ।
7. पुरस्कार: (A) आदर्श विद्याया सरस्वती राष्ट्रीय पुरस्कार (उत्कृष्टता का राष्ट्रीय पुरस्कार) (b) सम्मान पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (सीसीएस विश्विद्यालय मेरठ)

कुछ पूर्व छात्र सरकारी और निजी सेवाओं में निम्न पदो पर कार्यरत हैं।

1. डॉ० गौरव वार्ष्णेय मुख्या सांख्यिकीय अधिकारी/उप निदेशक वनविभाग यूपी सरकार
2. डॉ० हरजीत सिंह अतिरिक्त मंडलीय अधिकारी, बागवानी विभाग मुरादाबाद मंडल यूपी सरकार
3. डॉ० रविन्द्र कुमार शर्मा, सीसीएस विश्विद्यालय मेरठ
4. डॉ० गजराज सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर इग्नू दिल्ली
5. डॉ० सुरेंद्र कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर किरोड़ी मल कॉलेज दिल्ली
6. डॉ० रेनू गर्ग, असिस्टेंट प्रोफेसर दिल्ली यूनिवर्सिटी
7. डॉ० संजीव गुप्ता, निदेशक सांख्यिकी और सूचना प्रबंधन विभाग, आर बी आई मुंबई
8. श्री अमित बंसल, संस्थापक और सीटीओ अमेठा टेक्नोलॉजिस नोएडा

विभाग में निम्नलिखित गतिविधियां की गई।

1. ICSSR द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विषय "Community Participation and Environmental Sustainability: Initiative and Achievement"
2. डॉ० गौरव वार्ष्णेय संयुक्त निदेशक सांख्यिकी और वन विभाग द्वारा "सांख्यिकी में रोजगार के अवसर" दिनांक 23 जनवरी 2023 को गेस्ट लेक्चर विषय "पत्रता का विकास"
3. डॉ० तोषिब आलम एसोसिएट प्रोफेसर सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर द्वारा दिनांक 24 जनवरी 2023 को गेस्ट लेक्चर विषय "ऑपर्चुनाइटिस इन इकोनॉमिक्स एंड स्टेटिस्टिक्स"

प्रो० पी०के० त्यागी

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Department of Political Science was established at DPBS College, Anoopshahr in 1984 with the opening up of Arts Faculty. Despite Being a U.G. Department with sanctioned post of only one Faculty, it is providing quality education to the students of nearby areas for the last 40 years.

During the initial years the Department was run by the faculty appointed by the College Managing Committee on ad hoc basis. For the first time, Dr. U.K. Jha was appointed as a Permanent Faculty in the department in 1989 after getting selected by 'Uttar Pradesh Higher Education Service Commission' Allahabad against the Advertisement No. 10. Since then the Department is running smoothly producing excellent results. the students of the department who have pursued their P.G. course in Political Science from other universities and colleges have always been appreciated for their sound knowledge base at the U.G. level. Many students of the department are working as teachers, advocates and administrators in various institutions and departments. For instance, Mr. yashpal Singh Lodhi, the Additional District and Session Judge of Agra at present is the product of this department.

The academic efforts of its only faculty member Dr. U.K. Jha has been appreciated not only by the College Administration but also by the NAAC Peer Team which visited the college in 2012 and recommended its up gradation as a P.G. department.

Dr. Jha has published 18 Research Papers in Peer Reviewed/U.G.C. Listed journals, 11 chapters/articles in edited books published by national level publishers and one book entitled 'Opposition Politics in India'. His book published by Raha Publications, New Delhi in 1997 is subscribed by even some foreign libraries. Besides these he has also written several editorials and articles for the college magazine. Moreover, he has presented more than 50 research papers in national/International and regional seminars and has organised five national level seminars in the College.

The department celebrates the important days in our national political life like the Constitutions Day, National Voter's Day, National Human Rights Day etc. on a regular basis and also organises debates and quiz competitions from time to time.

Under the dynamic leadership of present Principal Prof. G.K. Singh, the department is in the process of getting upgraded to a P.G. department.

Prof. Umesh Kumar Jha

शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग

महाविद्यालय में खेल विभाग की स्थापना 1965 में हुई थी। विभाग में तभी से लगातार खेलकूद गतिविधियाँ संचालित है इसमें शुरूआत से ही कबड्डी, खो-खो, कुश्ती, फुटबॉल, हॉकी, एथलेटिक्स आदि खेलो की गतिविधियाँ महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा होती रही हैं तथा महाविद्यालय में क्रीड़ा समिति द्वारा यह सभी खेल कूद गतिविधियाँ संचालित होते रहे हैं। प्रतिवर्ष महाविद्यालय की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता (महिला एवं पुरूष) वर्ग में आयोजित की जाती रही है तथा इस प्रतियोगिता में प्रदर्शन के आधार पर सभी विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र महाविद्यालय क्रीड़ा समिति द्वारा वितरित किए जाते हैं इसके साथ ही महिला एवं पुरूष वर्ग में प्रत्येक सत्र हेतु चैंपियन की घोषणा भी की जाती है। सन् 2005 में शासन द्वारा बी.ए., बी.एससी व बी.कॉम में क्वालीफाइंग कोर्स के रूप में शारीरिक शिक्ष एवं खेलकूद विषय को सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक रूप में आरंभ किया गया तथा उत्तर प्रदेश के अधिकांश महाविद्यायल में शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग में प्रवक्ता पद पर शासन द्वारा नियुक्ति की गई तथा महाविद्यालय में सन 2006 में सीमांत कुमार दुबे का उच्च शिक्षा आयोग प्रयागराज द्वारा चयन हुआ तथा विभाग द्वारा बी.ए., बी.एससी, बी.कॉम में तीनों वर्षो में सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कक्षाएं संचालित हुई। शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग तथा महाविद्यालय खेल परिषद् के संयुक्त प्रयासों द्वारा महाविद्यालय में खेलकूद गतिविधियों को गति देते हुए महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय स्तर के खेलों में अधिक से अधिक प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया गया तथा 2007 में बी.ए. के छात्र दीपक चौधरी ने अंतर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में रजत पदक जीता व बी.ए. के ही दूसरे छात्र श्याम कुमार शर्मा का विश्वविद्यालय क्रॉस कंट्री टीम में चयन हुआ दीपक चौधरी आज भारतीय सेना में बतौर खिलाड़ी सेवा दे रहे हैं। इन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अच्छा खेल प्रदर्शन किया है इसके बाद महाविद्यालय की टीम द्वारा विभिन्न खेलों जैसे वेट लिफ्टिंग, पावर लिफ्टिंग, एथलेटिक्स, शरीर सौष्ठव, बास्केटबॉल व नेटबॉल आदि में हमारे खिलाड़ियों द्वारा लगातार अच्छा प्रदर्शन किया गया है तथा खिलाड़ी निरंतर पदक जीत रहे हैं व विश्वविद्यालय की टीम में भी खिलाड़ियों का चयन हो रहा है। सन् 2015 से लगातार प्रतिवर्ष महाविद्यालय द्वारा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की अंतर महाविद्यालय बास्केटबॉल/नेटबॉल (पु० व म०) प्रतियोगिताओं का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया तथा विश्वविद्यालय की टीम को उत्तर क्षेत्रीय विश्वविद्यालय व अखिल भारतीय विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने हेतु महाविद्यालय द्वारा भेजा गया, इन टीमों मे भी महाविद्यालय के खिलाड़ियों ने चयनित होकर अच्छा प्रदर्शन किया है। बैंगलुरू में आयोजित खेलों इंडिया विश्वविद्यालय खेल -21 में विभाग प्रभारी प्रो० सीमान्त कुमार दुबे चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की वेट लिफ्टिंग टीम के कोच नियुक्त किए गए, जहाँ विश्वविद्यालय की चार सदस्यीय टीम ने तीन स्वर्ण पदक जीते। सन् 2015 से महाविद्यालय में प्रतिवर्ष 21 जून को योग दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सन् 2011 में शारीरिक शिक्षा को शासन द्वारा बी.ए. में मुख्य विषय के रूप में लागू किया गया, महाविद्यालय में बी.ए. में शारीरिक शिक्षा को मुख्य विषय के रूप में लागू किया गया, महाविद्यालय में भी बी.ए में शारीरिक शिक्षा को मुख्य विषय के रूप में 2011 से ही लागू कर दिया गया इसके साथ ही बी.ए. बी.एससी व बी.कॉम में क्वालीफाइंग कोर्स (शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद) भी संचालित रहा। शारीरिक शिक्षा विभाग के प्राध्यापक डॉ० सीमांत कुमार दुबे ने शोध करते हुए अपनी पी.एच. डी. पूर्ण की तथा शोध कार्य हेतु सन् 2016 में 4 महीने का योग व एरोबिक एक्टिविटी शिविर का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक) ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा क्षेत्र में सभी वरिष्ठ जनों ने इस शिविर के माध्यम से अपना स्वास्थ्य लाभ किया तथा इस कार्यक्रम की सराहना की। शारीरिक शिक्षा विभाग प्रभारी डॉ० सीमांत कुमार दुबे ने अंतर्राष्ट्रीय जनरल्स में 12 शोध पत्र राष्ट्रीय संगोष्ठी में 18 व्याख्यान व चेप्टर इन बुक भी लिखा है तथा अपनी सभी अहर्ता (एकेडमिक व शोध) पूर्ण करते हुए सभी पदोन्नति समयबद्ध तरीके से प्राप्त करते हुए 2022 में प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत हुए हैं। शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग में NEP लागू होने के बाद वर्कलोड को देखते हुए व खेलकूदों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर जी के सिंह द्वारा सत्र 2022-23 से एक अतिरिक्त ट्यूटर की व्यवस्था की गई है। विभाग में एक सुसज्जित कार्यालय, स्टोर रूम, एथलेटिक ट्रैक, फुटबॉल ग्राउंड, बास्केटबॉल कोर्ट, बैडमिंटन कोर्ट, जिम, बिलियर्ड्स रूम, टेबल टेनिस, बैडमिंटन कोर्ट, शतरंज तथा वेटलिफ्टिंग आदि सभी खेलों की सुविधा उपलब्ध हैं जिनके द्वारा छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास संभव है। वर्तमान सत्र 2022-23 में महाविद्यालय की छात्र कु० अंजू ने अंतरमहाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2023-24 में लंबी कूद व त्रिकूद में दो स्वर्ण पदक जीतकर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है तथा साथ ही लंबी कूछ में राष्ट्रीय खेलों के प्रदर्शन के आधार पर चेन्नई में आयोजित खेलों इंडिया यूथ गेम्स 2023 के लिए उनका चयन हुआ है। इसी वर्ष अंजू ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान तथा राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में छठा स्थान प्राप्त किया था। प्रतिवर्ष महाविद्यालय में आयोजित होने वाली वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता को महाविद्यालय खेल परिषद् द्वारा "BOOST" नाम दिया गया है अत: सत्र 2023-24 के लिए उक्त प्रतियोगिता का नाम Boost-23 रखा गया।

प्रो० सीमांत कुमार दुबे

DEPARTMENT OF ECONOMICS

The Department of Economics was established in 18-07-1979, offering courses for both B.A. and B.Sc degree. The introduction of this subject aimed to cultivate intellectual curiosity and a deep understanding of our economics system. Beyond academic enrichment, the primary goal was to foster critical thinking and analytical skills among students. This department believes that economics has the potential to create new job opportunities and stimulate entrepreneurial ventures

One significant contributor to the department's success was professor RCS Bhandari, dedicated his services to the department from 18 SEP, 1979 to 30 JUNE 2014 till his retirement. Prof. Bhandari wasn't only played a crucial role in shaping the academic curriculum but also conducted lectures on various economic issues, leaving an indelible mark on the students.

Post his retirement, the department welcomed Mr. Himanshu Kumar on September 16, 2022. His selection through UPHESC is a testament to his academic prows and dedication to the field. Mr. Himanshu Kumr brings with him a wealth of knowledge and experience, having not only contributed to the academic sphere but also showcasing his expertise on a broader platform. He had the honour of presenting lectures on economic issues, challenges and highlighting the global recognition of his insights. Furthermore, Mr. Himanshu Kumar conducted a dedicated lecture on the Union Budget of India for the year 2023. This showcased his commitment to keeping students abreast of contemporary economic developments and providing them with insights into the practical applications of economic theories.

Since is inception, the Department of Economics has been dedicated to provide students with a comprehensive knowledge of economic theories, policies, and their real-world applications. The curriculum is designed to instill a strong foundation in economic principles while encouraging research and critical analysis. Moreover, the department has continually evolved to keep pace with the dynamic nature of the global economy.

In short, the establishment of the Department of Economics in 1979 was a pivotal step in promoting academic excellence, fostering intellectual development, and creating opportunities for career advancement and entrepreneurship. The department remains steadfast in its commitment to equipping students with the skills and knowledge needed to navigate the complexities of the modern economic landscape.

Himanshu Kumar

संस्कृत विभाग

वर्ष 1984 में विधिवत स्नातक स्तर के छात्रों के लिए संस्कृत विषय उपलब्ध हुआ। संस्कृत विभाग को अतीत में अपने संकाय के रूप में इस विषय के कुछ दिग्गजों के होने का गौरव प्राप्त है। जिनमें विद्वानों में अग्रणी प्रोफेसर ललित कुमार गौड़ ने सर्वप्रथम संस्कृत विभाग में अपनी सेवाएं प्रदान की। वे कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद पर अपनी सेवा देने के बाद वर्तमान समय में गुलजारी नंदा शोधपीठ के निदेशक पद को अलंकृत कर रहे हैं। विभाग में 1992 से स्नातकोत्तर की कक्षाएं प्रारंभ की गई। उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग से चयनित होकर 1988 में डॉ० कृष्णकांत व्यास ने विभाग में कार्यभार ग्रहण किया डॉ० कृष्णकांत व्यास ही विभाग के नियमित अध्यक्ष बने। आपके मार्गदर्शन में विभाग ने निरंतर उन्नति के शिखर को स्पर्श किया। आपके पढ़ाये हुए अनेकों छात्र वर्तमान समय में देश विदेश में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आपने संस्कृत विभाग में अनुसंधान कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। वह विभाग में एक शानदार पृष्ठभूमि लेकर आये थे। कई भारतीय भाषाओं के अच्छे जानकार होने के अलावा उन्हें फारसी, अरबी, ग्रीक लैटिन, जर्मन, फ्रेंच, रूसी और अंग्रेजी का भी ज्ञान था। कहने की जरूरत नहीं है कि विभाग के निर्माण में उनका योगदान अद्वितीय है। पहले एम.ए. पाठयक्रम में केवल पांच या छह छात्र और स्नातक में 50 से 60 छात्र हुआ करते थे। कार्यक्रम की यह स्थिति कई वर्षों तक बनी रही। डॉ कृष्णकांत व्यास के आने के बाद के ही छात्रों की स ंख्या में उल्लेखनीय सुधार देख गया। इस छोटा विभाग होने से अब यह महाविद्यालय के सबसे बड़े विभागों में से एक बन गया है। वर्ष 2018 में श्री लक्ष्मण सिंह ने उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग से चयनित होकर संस्कृत विभाग में कार्यभार ग्रहण करके वर्तमान समय में विभागाध्यक्ष के दायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर रहे हैं। श्री लक्ष्मण सिंह की रचनात्मक शक्ति की विशेष विशेषता हिंदी, संस्कृत में समान सहजता से लिखने की उनकी क्षमता रही है। इन भाषाओं में पुस्तकें और लेख प्रकाशित करने का श्रेय उन्हें है। वर्ष 2022 में श्री सोहन आर्य ने असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। इस प्रकार वर्तमान समय में संस्कृत विभाग में दो प्राध्यापक कार्यरत हैं। विभाग के पास प्राध्यापकों के बैठने के लिए एक सुव्यवस्थित सुसज्जित कक्ष तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के संचालन के लिए दो कक्ष हैं। वर्तमान समय में विभाग में पचास से अधिक स्नातकोत्तर छात्र, चार सौ से अधिक स्नातक के छात्र अध्ययनरत हैं। संस्कृत विभाग अपने सोशल आउटरीच प्रोग्राम के माध्यम से अनूपशहर के आस पास के माध्यमिक विद्यालयों एवं गुरूकुलों का मार्गदर्शन कर रहा है।

लक्ष्मण सिंह

हिंदी विभाग

महाविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना सन् 1984 में कला संकाय के प्रारंभ के साथ ही की गई। सन् 1989 में उत्तर प्रदेश को उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग द्वारा विज्ञापन संख्या 10 में चयनित डॉ० राजकुमार को स्थायी प्रवक्ता के रूप में नियुक्त किया गया। यद्यपि वर्ष 1989 से हिंदी विभाग में दूसरा पद भी सृजित है किंतु इस पर अब तक कोई नियुक्ति नहीं हो पाई है। डॉ० राजकुमार वर्ष 1994 तक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते रहे किंतु उनका अन्यत्र चयन हो जाने के कारण यह पद भी रिक्त हो गया। किन्तु महाविद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा विभाग में अंशकालिक प्रवक्ताओं की नियुक्ति कर शिक्षण कार्य जारी रखा गया। 28 मई 2022 को श्री आलोक कुमार तिवारी उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग द्वारा विज्ञापन संख्या 50 के तहत चयनित होकर प्रबंध समिति द्वारा स्थायी प्रवक्ता के रूप में नियुक्त किए गए तब से निरंतर विभाग में शिक्षण कार्य सुचारू रूप से संचालित है। श्री तिवारी ने अपनी पीएच डी उपाधि जिसका शीर्षक "नागार्जुन के काव्य में जनतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति" है पूर्ण करने के अंतिम चरण में हैं और उसका प्री सब्मिशन भी कर दिया गया है। इनके द्वारा अब तक यू जी से केअर लिस्टेड पत्र-पत्रिकाओं में दो शोध पत्र प्रकाशित किए जा चुके हैं तथा स्थानीय पत्रिकाओं में भी कई लेख प्रकाशित हैं।

यह विभाग नई शिक्षा नीति 2020 के तहत नीवन पाठ्यक्रम का संचालन सुचारू रूप से कर रहा है। विभाग में विभिन्न शिक्षणेतर कार्यक्रमों जैसे हिंदी दिवस एवम् समय-समय पर विभिन्न अतिथि व्याख्यानों, वाद विवाद प्रतियोगिताओं, निबंध प्रतियोगिताओं व हिंदी प्रश्नोत्तरी इत्यादि का अयोजन किया जा रहा है।

महाविद्यालय के वर्तमान प्राचार्य प्रो० जी० के० सिंह के कुशल नेतृत्व में यह विभाग निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। विभाग में हिंदी व्याकरण की नि:शुल्क कक्षाएं भी संचालित की जा रही हैं जिससे विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लाभ मिल रहा है। निकट भविष्य में हिंदी विभाग के स्नातकोत्तर विभाग में उच्चीकृत किए जाने की प्रक्रिया भी प्रगति पर है।

आलोक कुमार तिवारी

DEPARTMENT OF COMPUTER APPLICATION (BCA)

DPBS College Anupshahar is an aided college, which is affiliated to Chaudhary Charan SinghUniversity Meerut has Bachelor of Computer Applications (BCA) Department since 2001 underSelf-finance scheme. BCA course has been proven a milestone in the esteemed journey of College. BCA course was started under the self-financed scheme in the college. Since then, many courseshave been started in the college under the self-financed scheme.

BCA Department is sensitized with well-equipped and modern facilities to nurture a conductivelearning environment for the students by practical orientation and innovative teaching methodology in a simplified manner with organizing Training programs, Seminars, Conferences and PDP sessions with productive results.

There are 60 seats in BCA Department, which are always full. The Department has valid Quiz, Computer Lab, Lecture halls, Library and Lab facilities havingWi-Fi internet connection. The Department has well qualified and Experienced Faculty members as per the UGC and Universities norms. The students of BCA Course always secured 100% First Division. So The result of BCA is always100%. Academic activities in the BCA Department are carried out for Career Development of students. These activities include Mock Test, Mock Interview, Live Projects, Dummy Projects, Field Work, E-assignment, Case Studies etc. Faculty Evaluation is done by the students, time-to-time through feedback form on the basis of lecture delivery, lecture content, inter-personal skills and punctuality of Faculty members. Many students of BCA Department get placed in multinational software companies with a high salary. Various students of BCA Department get placed in multinational & national software companies for internship with a stipend.

Department of BCA is marching ahead on the path of continuous progress under the leadership of respected Prof. G. K. Singh, Principal, DPBS College, Anupshahr.

Pankaj Kumar Gupta

Faculty Members Achievements:

Mr. Pankaj Kumar Gupta	Research Papers	07
Mr. Mayank Sharma	Research Papers	04
Mr. Sachin Agarwal	Research Papers	05
Mr. Satya Prakash	Research Papers	04

Pankaj Kumar Gupta

बी.एड. विभाग

डी.पी.बी.एस कॉलेज, अनूपशहर (बुलन्दशहर) अपने जिले के गुणवत्तापूर्ण महाविद्यालयों में से एक हैं। अनूपशहर के इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1965 में हुई थी। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ पर शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इस महाविद्यालय में अन्य पाठ्यक्रमों के सफलतापूर्वक संचालन के साथ-साथ छात्रों को प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु अन्यत्र जाना पड़ता था। अत: सुधी प्रबंध समिति ने यह निर्णय लिया कि महाविद्यालय में शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (बी.एड.) भी आरम्भ किया जाय। अत: सन् 2002-03 से शिक्षक-प्रशिक्षण विभाग का प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ, जो कि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से ही सम्बंद्ध था। उस समय विभागाध्यक्ष के रूप में डॉ० आर, जी, गुप्ता नियुक्तत किए गए। शिक्षक प्रशिक्षण विभाग में प्रशिक्षणार्थियों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ शिक्षणेतर गतिविधियाँ भी कराई जाती थीं। प्रत्येक सत्र में सूक्ष्म शिक्षणाभ्यास (Micro-Teachnig) बृहत्पाठ शिक्षणाभ्यास (Macro-teaching) इत्यादि कार्यक्रम पूर्ण करा कर छात्राध्यापकों और छात्राध्यापिकाओं को बीस-बीस पाठ योजनाएं पढ़ानी होती थीं।

29th अगस्त 2005 में विभागाध्यक्ष के रूप में डॉ० कृष्ण चन्द्र गौड़ नियुक्त हुए, जिन्होंने निरन्तर 17 वर्षों तक अनवरत विभाग का कार्य-भार सफलतापूर्वक सम्पादित किया। आपके ही कार्यकाल में 27 मार्च 2011 को शिक्षक-प्रशिक्षण विभाग (बी.एड.) का नैक (NAAC) सम्पन्न हुआ, जिसके अंतर्गत "बी" ग्रेड 2.53 (CGPA) अंक प्राप्त हुए। 01 जुलाई 2022 से डॉ० सुनीता गौड़ विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

विभाग के स्वर्णिम उपलब्धियों में कुमारी मानसी गर्ग ने सन् 2018 में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रशिक्षण विभाग व महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। इसके अतिरिक्त कुमारी अनामिका 2020-21 ने भी विश्वविद्यालय की प्रथम दस (Top-Ten) की श्रृंखला में अपना स्थान बनाया। इसके पश्चात सन् 2022 में कुमारी शिव भारद्वाज ने विश्वविद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त कर विभाग एवं महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया। शिक्षा-विभाग में नियुक्त सभी प्राध्यापक यू.जी.सी. (U.G.C.) एवं एन.सी.टी.ई. (N.C.T.E.) के मानकानुसार योग्यताधारी हैं। सन् 2023 में विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा विभाग में शोध निर्देशक के रूप में डॉ० वीरेंद्र कुमार को नियुक्त किया गया।

विभाग द्वारा चार राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया जो इस प्रकार हैं:-

1. प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी 29-30 जनवरी 2011।
   विषय: "शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता का विकास: सूक्ष्म पाठ शिक्षण व बृहत्पाठ शिक्षण के सन्दर्भ में" (Quatative improvement in Teacher Education with special reference to Micro and Macro Teaching).
2. द्वितीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 23-24 फरवरी 2013।
   महिला सशक्तीकरण एवं शिक्षा: दशा एवं दिशा। (Women Empowerment & Education % Status & Prospects).
3. राष्ट्रीय संगोष्ठी 01 फरवरी 2015।
   "विश्व शांति में शिक्षा की भूमिका" (The Role of Education in World Pace).
4. राष्ट्रीय संगोष्ठी 24-25 फरवरी 2018
   उच्च शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि: समसामयिक चुनौतियां। (Qualitative Enhancement in Higher Education: The Contemporary Challenges).

इस प्रकार से शिक्षा-विभाग निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है।

डॉ० सुनीता गौड़

इतिहास विभाग

डीपीबीएस महाविद्यालय में इतिहास विभाग की शुरूआत सन 2023 में हुई। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० गिरीश कुमार सिंह के निर्देशन में इतिहास विभाग की स्थापना हुई। इतिहास के उच्च कोटि के विद्वान होने के नाते प्राचार्य जी का सहयोग विभाग को निरन्तर मिला। प्राचार्य प्रो० गिरीश कुमार सिंह एवं श्री आशू सैनी ने इतिहास विभाग में व्याख्यान दिए। इसके साथ ही विभाग के अंतर्गत शोधार्थी भी छात्र-छात्राओं को नियमित रूप से व्याख्यान देते रहें हैं। 27 सितंबर 2023 को महाविद्यालय में अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति, बुलन्दशहर की अनूपशहर इकाई के तत्वाधान में इतिहास दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो० राजेश गर्ग थे। इतिहास दिवस के अवसर पर देश में वर्तमान समय में इतिहास लेखन के विविध आयामों तथा ऐतिहासिक परिदृश्य पर विस्तृत चर्चा हुई।

प्रसिद्ध अमेरिकी बृद्धिजीवी पर्ल एस बक कहती है, यदि आप इतिहास नहीं जानते तो आप वे पत्तियाँ हैं जिन्हें ये भी नहीं पता कि वे पेड़ का हिस्सा थीं। वास्तव में, यह पंक्तियां इतिहास का महत्व हमारे समक्ष प्रस्तुत कर रहीं हैं। साथ ही इतिहास के पुनर्लेखन के वर्तमान परिदृश्य में इतिहास विषय का अध्ययन और भी आवश्यक हो जाता है जोकि किसी भी विद्यार्थी में देश के समाज, संस्कृति तथा अतीत के प्रति एक ऐतिहासिक चेतना विकसित करता है। इतिहास का अध्ययन विद्यार्थियों को भविष्य में देश की प्रतिष्ठित नौकरी सिविल सेवा की तैयारी में तथा अन्य सरकारी सेवाओं में काफी सहायक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त इतिहास शोध कार्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र, नेशनल आर्काइव, उच्चतर शिक्षा आदि में सम्मानित रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

इस बात के मद्देनज़र, महाविद्यालय में इतिहास विभाग के अंतर्गत शोध कार्य प्रारम्भ किया गया। प्रो० गिरीश कुमार सिंह के निर्देशन में कई शोध छात्र इतिहास विषय में विभिन्न क्षेत्रों पर शोध कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, प्रो० सिंह अनूपशहर के पौराणिक तथा सांस्कृतिक महत्व पर ध्यान देते हुए अनूपशहर के इतिहास लेखन संबंधी प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहें हैं जोकि इतिहास विभाग के लिए गौरव का विषय है। प्रो० सिंह की इतिहास के विविध पहलुओं पर कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं जो इतिहास विभाग के बौद्धिक इतिहास को बल प्रदान करती हैं। वर्तमान में विभाग में स्नातक के छात्रों को विषय एवं पाठ्यक्रम संबंधी अध्ययन के साथ-साथ उन्हें भविष्योपयोगी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु भी मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार सहायता भी प्रदान की जाती है। शीघ्र ही इतिहास विभाग में परास्नातक कोर्स भी प्रारंभ किया जाएगा। इस प्रकार विभिन्न प्रकार से इतिहास विभाग विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन, शोध कार्य तथा इतिहास लेखन हेतु प्रगति पथ पर अग्रसर है।

प्रो० जी.के. सिंह
(प्राचार्य)

गृहविज्ञान विभाग

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह कॉलेज (अनूपशहर) में गृहविज्ञान विभाग को प्राचार्य "प्रो० जी०के० सिंह जी" के नेतृत्व में 2023 में कथापित किया गया है प्रारम्भ में "कु० सृष्टि शर्मा" को सहायक प्राध्यापिका पद पर 2023 में नियुक्त किया गया। किन्तु फिर 2024 में डॉ० मोहिनी गुप्ता ने कार्यभार संभाल लिया।

इस विषय का मुख्या उद्देश्य 'परिवार और सामुदायिक विज्ञान' पर ध्यान केंद्रित करना है आज के युग में गृह विज्ञान कला और विज्ञान दोनो का ही अनोखा संगठित रूप है कला के अन्तर्गत गृह से संबंधित सभी कलाएँ जैसे-पाककला, मातृ कला, सिलाई कढ़ाई कला, वस्त्र धुलाई कला, गृह प्रबंध, घर की आंतरिक सज्जा आदि आते है विज्ञान के अन्तर्गत 'मानव शरीर एवं क्रिया विज्ञान' जिसमें मानव अंगो की बाहय एवं आंतरिक संरचना क्रियाविधि कार्यों आदि का विस्तृत वर्णन रहता है। आहार विज्ञान एवं पोषण इसके अन्तर्गत आहार के भौतिक एवं रासायनिक गुणों के बारे में जाना जाता है।

इसके साथ ही महाविद्यालय में 20 अक्टूबर 2023 को गृहविज्ञान विभाग में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसकी थीम-'विभिन्न औषधीय पौधो के आयुर्वेदिक अनुप्रयोग' थी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि "प्रो० आर०के० अग्रवाल जी" रहे थे।

गृह विज्ञान विषय जिसे गृह कला, घरेलू कला, विज्ञान, पाककला विज्ञान विभिन्न नामों से जाना जाता है यह विषय सर्वोच्च स्तर पर छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए सहायक विषय है, गृहविज्ञान विषय छात्राओं में विभिन्न प्रकार के जीवन कौशलों से संबधित वैज्ञानिक ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। गृह विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र अत्यधिक व्यापक एवं बहुपक्षीय है इसका अध्ययन भौतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, कला और मानविकी से प्राप्त ज्ञान को संश्लेषित करने में एक अंतर्विषयी दृष्टिकोण प्रदान करता है, इसके साथ ही समूह परियोजना तथा प्रयोगात्मक कार्य छात्राओं के व्यवहारिक ज्ञान को मजबूत करने में मदद करता है।

गृह विज्ञान विभाग में शिक्षा और अनुसंधान के विस्तृत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध है इसमें सुसज्जित प्रयोगशाला संगणक कक्ष, स्मार्ट क्लास रूम तथा विभाग का अपना पुस्तकालय है।

गृह विज्ञान विभाग महाविद्यालय की प्रगति तथा विकास में अपना योगदान देने में अग्रणी है।

डॉ० मोहिनी गुप्ता

वाणिज्य संकाय

बी.कॉम (वाणिज्य संकाय) महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ० शान्ति स्वरूप ढल के कुशल नेतृत्व में वर्ष 2005 में महाविद्यालय में चल रहे अन्य कोर्सों में शामिल हुआ। वर्ष 2005 में संकाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए चौ० चरण सिंह वि०वि०, द्वारा अनुमोदित डॉ० भुवनेश कुमार, विभागाध्यक्ष एवं प्रवक्ता एवं डॉ सिराज अहमत, प्रवक्ता के रूप में कार्य करने के लिए नियुक्त किया गया। प्रारम्भ से ही वि०वि० द्वारा आवंटित सीटों पर प्रवेश लेने के पश्चात् अप्रवेशित विद्यार्थियों की संख्या को देखते हुए विश्वविद्यालय के नियमानुसार एक नये सेक्शन को अगले सत्र में शामिल करते हुए डॉ० सिद्दार्थ जैन को प्रवक्ता के रूप में नियुक्त किया गया। सत्र 2007 में डॉ सिराज अहमद के संस्था से चले जाने पर डॉ साजिद अली को प्रवक्ता के रूप में नियुक्त किया गया। 2007 में ही वि०वि० से अनुमोदित डॉ तरूण बाबू श्रीवास्तव विभाग में प्रवक्ता के रूप में शामिल हुए। डॉ सिद्धार्थ जैन और डॉ० साजिद अली के संस्था के चले जाने पर वर्ष 2010 में डॉ० राजीव गोयल प्रवक्ता के रूप में एवं 2011 में डॉ० विशाल शर्मा प्रवक्ता के रूप में विभाग में शामिल हुए। विभाग में अध्ययन - अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चलाने के उद्देश्य से अनु शिक्षकों (Tutor) को भी शामिल किया जाता रहा है। विभाग की उपलब्धियों में छात्रों का परीक्षा परिणाम उत्तम रहने के पिरणाम स्वरूप अनेक छात्र/छात्रा सी०ए०, और सरकारी एवं गौर सरकारी संगठन में योग्यतानुसार अपने पद पर पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्य करते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। एक लम्बे समय के अंतराल के पश्चात् वर्ष 2023 में प्राचार्य प्रोफेसर जी के सिंह के कुशल निर्देशन एवं आपकी सकारात्मक सोच के साथ वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को उद्यमियों एवं शिक्षकों के रूप में आकार देने की दृष्टि से उनकी पूरी क्षमता को समझने के लिए अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से संकाय को गति प्रदान कर कॉलेज में स्नातकोत्तर पाठयक्रम एम०कॉम में डॉ० भुवनेश कुमार एवं डॉ० तरूण बाबू श्रीवास्तव और शोध कार्य कराने में डॉ० तरूण बाबू श्रीवास्तव को वि०वि० से अनुमोदन प्राप्त कर शामिल किया गया। वर्तमान समय में डॉ० भुवनेश कुमार (विभागाध्यक्ष एवं असिस्टेंट प्रोफेसर), डॉ० तरूण बाबू श्रीवास्तव (असिस्टेंट प्रोफेसर), डॉ राजीव कुमार गोयल (असिस्टेंट प्रोफेसर), डॉ विशाल शर्मा (असिस्टेंट प्रोफेसर), श्रीमती रिवानी गोयल (अनुशिक्षक) एवं कु० काजल (अनुशिक्षक) शिक्षक के रूप में शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ अपने पूर्ण मनोयोग, कौशल, और उत्कृष्ट मूल्यों की दिशा की ओर बढ़ते हुए भी संकाय सदस्य कार्य कर रहे हैं।

विभाग की प्रगति में शिक्षक एवं विद्यार्थी एक दूसरे के पूरक होते हैं। जहाँ एक ओर विद्यार्थियों ने कॉलेज में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेमिनार, अतिथि व्याख्यान, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, खेलकूद जैसी अन्य विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया वही दूसरी और कई संस्थाओं से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान, संकाय के शिक्षकों ने शिक्षा के नवाचारों को अपने अध्ययन एवं अध्यापन में धारण करने हेतु ओरियंटेशन कोर्स, रिफ्रेशर कोर्स एवं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभाग करते हुए शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। संकाय के सभी सदस्यों के लगभग दस-दस शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हैं। संकाय के अधिकांश सदस्यों का वाणिज्य के विभिन्न विषय पर कई पुस्तकों एवं कई अध्यायों पर लेखन कार्य रहा है। कोविड महामारी के दौरान पठन-पाठन को सुचारू रूप से बनाये रखते हुए शासन के दिशा निर्देशों के अनुसार एवं प्राचार्य के निर्देशन में सभी शिक्षकों ने ऑनलाईन कक्षाऐं, रिकॉर्ड लेक्चर एवं अध्ययन सम्बन्धी विषय सामग्री विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी। डॉ० तरूण बाबू श्रीवास्तव द्वारा फोरम ऑफ़ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट स्टडीज इन इंडिया के माध्यम से अनेक ऑनलाइन राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन कराया गया। सत्र 2021-22 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत बी० कॉम प्रथम सेमेस्टर पाठयक्रम लागू किया गया। 2023 में वाणिज्य संकाय ICSSR द्वारा एक अनुदानित राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया संकाय के अधिकांशतया सभी सदस्य कॉलेज की विभिन्न क्रियाकलापों एवं समितियों में समय-समय पर प्रभारी एवं सदस्य के रूप में मिले दायित्वों का निर्वहन पूर्ण जिम्मेदारी एवं निष्ठा से करते रहे हैं।

संकाय के समस्त सदस्यों के सामूहिक प्रयास से विभाग अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता, कौशल और उत्कृष्ट मूल्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर, अच्छे विचारों को स्थापित कर तथा उनके अंदर छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानकर अच्छे इंसान और देश के जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा की ओर निरंतर बढ़ रहा है।

डॉ० भुवनेश कुमार

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

In Durga Prasad Baljeet Singh Degree College (Anoopshahr), Department of Geography has been established recently (2023) under the leadership of the present Principal professor G.K. Singh Sir. This could have been done withered the lot of hard work and patience. In the department of Geography Dr. Reenu Chaudhary and Miss. Nandita Raghav have been appointed as the assistant teachers.

The main objective of the establishment of the department is to provide education in Geography at the U.G. Level.

Now a days importance of Geography education cannot be denied. Geographical knowledge and skills are essential for us to understand the activities and patterns of our lives and the lives of others. We move from place to place, aided by transportation and navigation system. We Communicate using global network of computers and satellites. The information revolution expands our Geographic Horizons from always a Global subject. In present world, use of the internet, Geographic Information Systems (GIS), Global Positioning System (GPS) and other mapping technologies give access to a world of spatial (Geographic) Information.

These high-tech systems form a global web that links people and places. Geography provides the key to understand them and effectively using these systems. Hence it can be said that knowledge of Geography is must for the Modern Generation. In our college Geography education is being provided by all means and modern method. There are all possible facilities for example separate lab, equipments etc. There are also other facilities like digital classes, ground surveys, conducting seminar etc.

Career and Opportunities

A geography degree opens up careers in a range of fields, including those in the education, commerce, industry, transport, tourism and public sectors. You'll also have many transferable skills, attracting employers from the business, law and finance sectors.

Traditionally Geography has been one of the most Important Disciplines of Social Sciences.

Dr. Renu Chaudhary

रक्षा अध्ययन विभाग

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह कॉलेज, अनूपशहर में रक्षा एवं सामरिकी अध्ययन विभाग को प्राचार्य प्रो० जी०के० सिंह के नेतृत्व में 2023 में स्थापित किया गया हैं। जिसमें व्याख्यान हेतु श्री नितिन शर्मा को अंश कालिक प्रवक्ता पर 2023 में नियुक्त किया गया। इस विषय का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में देश की रक्षा और सुरक्षा से संबंधित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना है। आज का युग "अतिमारकता का युग" हैं, जिसमें आज के विद्यार्थियों को अन्य विषयों के अध्ययन के साथ-साथ रक्षा अध्ययन विषय का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता हैं, क्योंकि आज भारत अंतर्राष्ट्रीय जगत में अपने राष्ट्रीय हितों के लिए जिस प्रकार की विदेश नीति का सफलता पूर्वक संचालन कर रहा है। वह राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है विदेश नीति और कूटनीति से हम अपने राष्ट्रीय हितों और राष्ट्रीय सुरक्षा को किस प्रकार प्राथमिकता देते है इस सभी बातों का ज्ञान भी रक्षा अध्ययन विभाग के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर गहन अध्ययन कर प्राप्त किया जाता है।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों के अध्ययन के लिए एक अद्वितीय केंद्र होने के नाते, विभाग निम्नलिखित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है।

1. राष्ट्रीय सुरक्षा, 2. दक्षिण एशिया सुरक्षा मुद्दे - पारंपरिक और गैर पारंपरिक, 3. शस्त्र नियंत्रण, 4. परमाणु प्रसारके मुद्दे, 5. युद्ध वियोजन, 6. विश्वास बहाली के उपाय, 7. अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, 8. आर्थिक प्रबंधन, 9. अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा ने कानूनी पहलू, 10. समुंद्री सुरक्षा, 11. पर्यावरण सुरक्षा और अन्य संबंधित क्षेत्र।

रक्षा अध्ययन का अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राएँ निम्न क्षेत्र में अपना कैरियर बना सकते है जैसे-रक्षा प्रतिष्ठानों, सेना, नौसनो, वायु सेना, तट रक्षक, निजी कंपनियों में सुरक्षा और इसके साथ-साथ कॉलेज में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहकर शैक्षिणक और व्यावसायिक विषयों की विस्तृत विविधता में उम्मीदवारों को पढ़ाते हैं, वे शोध भी करते हैं और किताबें व पेपर प्रकाशित करते हैं।

रक्षा अध्ययन विषय पर चर्चा करने हेतु महाविद्यालय में 3 नवम्बर 2023 को रक्षा अध्ययन विभाग में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसकी थीम, "वैरियस डाइमेंशन ऑफ डिफेंस स्ट्डीज" थी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व दिल्ली कमिश्नर तिलक राज कक्कड़ थे। जिन्होंने भारतीय सेना से सेवानिवृत्त होकर भारतीय पुलिस सेवा के पद को सुशोभित किया। उन्होंने महाविद्यालय के विद्यार्थीयों को भारत की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा पर विस्तार से प्रकाश डाला और साथ ही आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के लिए जो वर्तमान चुनौतियों के बारे में चर्चा की। साथ ही महाविद्यालय के विद्यार्थीयों को भविष्य में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया।

नितिन शर्मा

ललित कला विभाग

डीपीबीएस कॉलेज, अनूपशहर में ललित कला विभा (Drawing and Painting) विभाग को प्राचार्य प्रो० जी के सिंह के नेतृत्व में 2023 में स्थापित किया गया है। यह बहुत मेहनत और धैर्य के बाद ही संभव हो सका। जिसमें व्याख्यान हेतु देवांशी सेनी को सहायक प्राध्यापक पद पर सितम्बर 2023 में नियुक्त किया गया।

प्राचार्य जी के निरंतर प्रयास व संरक्षण से ललित कला विभाग द्वारा निरंतर प्रयास किए जाते रहे हैं। यहाँ सभी संभव सुविधाएं प्रदान की गई हैं, उदाहरण के लिए अलग प्रयोगशाला, उपकरण आदि। डिजिटल कक्षाएं, कम्प्यूटर लैब, सेमिनार आयोजित करना आदि जैसी अन्य सुविधाएं भी हैं। 2023-24 के ललित कला विभाग B.A. 1st सेम० के विद्यार्थियों को उनके इस विषय से अवगत कराया गया है और इस विषय का जीवन में महत्व से भी परिचित कराया गया है। अधिकतर विद्यार्थियों के लिए ये नया विषय है लेकिन विभाग के प्रयास से उनके लिए यह रूचि का विषय बन गया है। छात्रों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। ललित कला विभाग निरंतर प्रयासरत रहता है कि विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य तक पहुंचने के सफर को आसान बनाया जाए और उन्हें एक कलाकार का माहौलप्रदान किया जाए। विभाग में उन्हें थ्योरी के साथ-साथ प्रेक्टिकल के लिए सभी कलरों, माध्यमों का उपयोग करना व डिजिटल आर्ट (फोटोशॉप, कोरल ड्रा) से भी परिचित किया जाता है। थ्योरी को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से कला के इतिहास के साक्ष्यों द्वारा समझाने का प्रत्यन करते है। विभाग द्वारा समय-समय पर समाज के आधुनिक मुद्दे और समाज को जागरूक करने के लिए पोस्टर मेंकिंग, पेंटिंग प्रर्दशनी जैसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। हाल ही में गांधी जयंती, स्वतंत्रता दिवस, मतदान जागरूकता वे गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर मेंकिंग प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

आगे बढ़ते हुए, विभाग की योजना ललित कला शिक्षा से संबंधित व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भाग लेकर अपनी शिक्षण पद्धतियों को बढ़ाने की है। इसके अतिरिक्त, हमारा लक्ष्य व्यापक आबादी के बीच कला की सराहना और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए आउटरीच कार्यक्रम आयोजित करके स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ना है।

विभाग आशा करता हैं यहाँ से विषय की शिक्षा प्राप्त करने के बाद यहाँ के विद्यार्थी अनेक मुकामों को छुएंगे अैर एक कलाकार होने के नाते समाज व अपने आसपास के स्थान को अपनी कला के माध्यम से सुसज्जित व जागरूक करेंगे।

विभाग अपने छात्रों की सफलता के लिए समर्पित है, और ललित कला कार्यक्रम की निरंतर वृद्धि और विकास के लिए तत्पर हैं।

जीवंत कला परम्परा एक बार नष्ट हो गई तो शताब्दियों के लिए नष्ट हो जाती है और उसे पुनर्जीवित करना प्रायः असम्भव होता है।

ई वी हेवेल का उक्त कथन पराधीन भारत के सन्दर्भ में था मगर आज भी यह प्रासंगिक है।

देवांशी सैनी

गुमनाम दोस्त के लिए

ऐ दोस्त जी चाहता है कि तेरे लिए एक कविता लिखूँ किताब लिखूँ
उसमें तुझे न लिखूँ पर तेरे लिए मैं सब लिखूँ
हसरतें लिखूँ, बातें लिखूँ बता और क्या क्या लिखूँ
तेरा नाम तक न आए और मैं तेरा हर एक हाल लिखूँ
मेरे तेरे से जुड़ा हर एक सवाल या फिर बवाल लिखूँ

ऐ दोस्त जी चाहता है कि तेरे लिए एक कविता लिखूँ किताब लिखूँ
सुबह लिखूँ दोपहर लिखूँ या फिर सुरमई शाम लिखूँ
शरीके-हयात लिखूँ या तरसती प्रेयसी का नाम लिखूँ
इंतज़ार लिखूँ तड़प लिखूँ या आँसू का सैलाब लिखूँ
और बातों-बातों में बन जाना तेरा एक ख़्वाब लिखूँ

ऐ दोस्त जी चाहता है कि तेरे लिए एक कविता लिखूँ किताब लिखूँ
किसी कवि के ख़्वाबों की अधूरी सी तावीर लिखूँ
चित्रकार का अधूरा चित्र या के पत्थर की तासीर लिखूँ
काँटे की चुभन लिखूँ, फूल की खुशबू या किताब लिखूँ
तेरे जैसा ही है मेरा हाल चल फिर मैं अपना हाल लिखूँ

ऐ दोस्त जी चाहता है कि तेरे लिए एक कविता लिखूँ किताब लिखूँ

प्रो० जी०के० सिंह
(प्राचार्य)

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

संस्कारों का महत्व

एतद्देश प्रसूतस्य एकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् प्रथित्याः सर्वमानवाः॥

संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से था जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते हैं, इन्हीं संस्कारों के कारण हम सुसंस्कृत कहलाते हैं, साथ ही श्रेष्ठ गुणों को धारण कर उच्चता को प्राप्त करते है। हमारे हिन्दू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों का उन्नयन है।

संस्कार शब्द का अर्थ परिशोधन अथवा शुद्धीकरण है जीवात्मा जब एक शरीर को त्यागकर दूसरे शरीर में जन्म लेती है तो उसके पूर्व जन्म के प्रभाव उसके साथ आ जाते हैं। इन प्रभावों का वाहक सूक्ष्म शरीर होता है जो जीवात्मा के साथ एक स्थूल शरीर के दूसरे स्थूल शरीर में जाता है। इन प्रभावों में कुछ बुरे और कुछ प्रभाव भले भी होते हैं। बालक भले और बुरे दोनो ही प्रभावों को ग्रहण करके नवजीवन में प्रवेश करता है। संस्कारों का उद्देश्य है कि पर्वू जन्म के बुरे प्रभावों का धीरे-धीरे विनाश हो और सत्प्रभावों की उन्नति हो संस्कारों के दो रूप होते हैं एक आन्तरिक व दूसरा बाहन। इन्ही बाहन रूपों का नाम रीति-रिवाज है। यही बाहन रूप (रीति-रिवाज) व्यक्ति के आन्तरिक रूप की रक्षा करता है।

हमारे इस जीवन में प्रवेश करने का वास्तविक प्रयोजन यह है कि पूर्वजन्म में जिस अवस्था तक हम आत्मिक उन्नति कर चुके हैं। वर्तमान जन्म में उससे अधिक उन्नति करें। संस्कारों का आन्तरिक रूप हमारी जीवन चर्चा है अर्थात् हम अपना जीवन जिन नियमों पर जीना आरम्भ करते हैं हमारी प्रकृति वैसी ही होती जाती है। यह जीवन चर्चा कुछ नियमों पर आधारित हो तभी मनुष्य आत्मिक उन्नति कर सकता है। ऋग्वेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं है, किन्तु इस वेद के कुछ सूक्तों में गर्भाधान विवाह और अन्त्योष्टि से सम्बन्धित धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है।

यजुर्वेद में केवल श्रौत यज्ञों का उल्लेख है। श्रौत का अर्थ हैं जिसमें लेखन की विधि न हो, इसलिए इस ग्रन्थ के संस्कारों की विशेष जानकारी नहीं मिलती अथर्ववेद में गर्भाधान विवाह और अन्त्येष्टि का वर्णन विस्तृत रूप में है। गोपथ और शत्पथ ब्राह्मणों में उपनयन व गोदान संस्कारों के धार्मिक कृत्यों का उल्लेख मिलता है। तैन्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा-समाप्ति पर आचार्य की दीक्षान्त शिक्षा मिलती है।

मातृ-देवो भव। पित्तृ देवा भव। आचार्य-देवो भव। (तैन्तिरीय उपनिषद) इस प्रकार गृह्य-सूत्रों से पूर्व-हमें संस्कारों के पूर्ण-नियम नहीं मिलते। ऐसा प्रतीत होता है कि गृह्य सूत्रों से पूर्व पारम्परिक प्रथाओं के आधार पर ही संस्कार होते थे। संस्कारों से ही संस्कारों की पूरी पद्धति का वर्णन मिलता है। गृह्य सूत्रों में सबसे पहले विवाह संस्कार का उल्लेख है। इसके बाद गर्भाधान पुंसवन सीमन्तोन्नय न जातकर्म नाम करण निष्कमज अन्न प्राशन चूड़ा कर्म उपनयन और समावर्तन संस्कारों का वर्णन किया गया है।

अधिकतर गृह्य-सूत्रों में अन्त्योष्टि संस्कार का वर्णन नहीं मिलता, क्योंकि ऐसा करना अशुभ समझा जाता है। स्मृतियों के आचार-प्रकरणों में संस्कारों का उल्लेख है और तत्सम्बन्धी नियम दिए गए हैं इनमें उपनयन और विवाह-संस्कारों का वर्णन विस्तार के साथ दिया गया है क्योंकि उपनयन संस्कार के द्वारा व्यक्ति ब्रह्मचर्य आजम में और विवाह-संस्कार के द्वारा गृहस्थ आजम में प्रवेश करता है।

वैदिक साहित्य में संस्कार शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। संस्कारों का विवेचन केवल गृहन-सूत्रों में ही मिलता है परन्तु इनमें भी संस्कार शब्द का प्रयोग यज्ञ-सामग्री के पवित्रीकरण के अर्थ में किया गया है। वैखानस स्मृति-सूत्र में सबसे पहले शरीर सम्बन्धी संस्कारों और यज्ञों में स्पष्ट अन्तर मिलता है।

मनु और याज्ञवल्म्य के अनुसार संस्कारों से द्विजों के गर्भ और दोषादि (विकार) की शुद्धि होती है। कुमारिल (ई० आठवी सदी) ने तंत्रवार्तिक ग्रन्थ में इससे कुछ प्रकार से योग्य बनता है- पूर्व कर्म के दोषों को दूर करने से और ना० गुण के उत्पादन के संस्कार ये दोनों ही कार्य करते हैं-

गौतम धर्मसूत्र में संस्कारों की संख्या-चालीस (40) लिखी है जो निम्नलिखित है-

1.	गर्भाधान	2.	पुंसवन	3.	सीमन्तोन्नयन
4.	जातकर्म	5.	नामकरण	6.	अन्नप्राशन
7.	चूड़ा कर्म	8.	उपनयन	9-12	वेदों के चार व्रत
13.	स्नान	14.	विवाह	15-19	पच्च दैनिक महायज्ञ
20-26	सात पाक-यज्ञ	27-33	सात हविर्यज्ञ	34-40	सात सोमचज्ञ

किन्तु अधिकतर धर्म शास्त्रों ने वेदों के चार व्रतों पञ्च दैनिक महा यज्ञों सात पाक यज्ञों सात हवि यज्ञों और सात सोमयज्ञों का वर्णन संस्कारों में नहीं किया है।

मनु ने गर्भधान पुंसवन सीमन्तोन्नयन जातकर्म नामकरण निष्क्रमक अन्नप्राशन, चूडा कर्म उपनयन केशान्त समावर्तन विवाह और अन्त्येष्टि इन तेरह संस्कारों का उल्लेख किया है। केवल केशान्त का वर्णन उसमें नहीं मिलता क्योंकि इस काल-तक वैदिक ग्रन्धों का प्रचलन बन्द हो गया था।

बाद में रची गई पद्धतियों में संस्कारों की संख्या सोलह दी है किन्तु गौतम धर्मसूत्र और गृहन सूत्रों में अन्त्येष्टि संस्कार का उल्लेख नहीं है क्योंकि माना जाता है कि अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन करना अशुभ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी संस्कार विविध तथा पंडित भीमसंन शर्मा ने अपनी पोडश संस्कार विविध में मात्र सोलह (16) संस्कारों का ही वर्णन किया है। दोनों ने अन्त्येष्ट को सोलह-संस्कारों में साम्मिलित किया है। यह कहा जा सकता है कि परम पूजय गुरूदेव ने इन सारी विस्तृत व्यवस्थाओं को न केवल प्रगतिशील अपितु एकीकृत रूप प्रस्तुत किया।

गर्भावास्था में गर्भाधान पुंसवन और सीमंतोन्नयन तीन संस्कार होते है। इन तीनों का उद्देश्य माता-पिता की जीवनचर्या इस प्रकार की बनाना कि बालक अच्छे संस्कारों को लेकर जन्म ले। जात कर्म नायकरण निष्क्रमण अन्नप्राशन, मंडल कर्म वेध-ये छः (6) संस्कार पाँच वर्ष की आयु में समाप्त हो जाते है। बाल्यकाल में ही मनुष्य की आदतें बनती है, इसे कारण ये छः संस्कार जल्दी-2 रखे गये है। उपनयन व वेदारम्भ संस्कार बहनचर्याजम के प्रारम्भ में प्रायः साथ-साथ होते है। समावर्तन और विवाह संस्कार गृहस्थाज़म के पूर्व होते है। उन्हें भी साथ साथ समझना चाहिए। वानप्रस्थ और सन्यास संस्कार इन दोनों आजम की भूमिका मात्र है। इस प्रकार संस्कारों का हमारे जीवन में आधार भूत महत्व है। वर्तमान समय में इन संस्कारों का यथासम्भव प्रयोग करना चाहिए।

डॉ० सुनीता गौड़
विभागाध्यक्ष शिक्षक शिक्षा विभाग

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य में विद्यार्थिओं की विशेषताएं एवं कर्तव्य

भारत में भक्ति आंदोलन के पूज्य संत-कवि गोस्वामी तुलसीदास ने अपने गहन लेखन के माध्यम से साहित्य, आध्यात्मिकता और नैतिकता पर एक अमिट छाप छोड़ी है। वे अपनी महान कृति "रामचरितमानस" के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं, तुलसीदास की अन्य रचनाएँ भी विद्यार्थिओं की विशेषताओं और कर्तव्यों के बारे में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

विद्यार्थिओं की विशेषताएँ:

विद्यार्थिओं के बारे में तुलसीदास का चित्रण मानव स्वभाव, नैतिकता और ज्ञान की खोज के बारे में उनकी गहरी समझ को दर्शाता है। विभिन्न पात्रों और कथाओं के माध्यम से, वे उन आदर्श विशेषताओं को दर्शाते हैं जो छात्रों में होनी चाहिए:

- **आदर्शवादी मूल्य:** विद्यार्थिओंकी प्रमुख विशेषताओं में से एक आदर्शवादी मूल्यों का पालन करना है। "रामचरितमानस" में भरत और शत्रुघ्न जैसे पात्र धर्म और कर्तव्य के प्रति अपनी अटूट निष्ठा के माध्यम से इस गुण का उदाहरण देते हैं। वे धर्म और निस्वार्थता के आदर्शों को अपनाते हैं, जो छात्रों के लिए आदर्श हैं।
- **विनम्रता:** विनम्रता एक और गुण है जिसकी तुलसीदास विद्यार्थिओंमें प्रशंसा करते हैं। "रामचरितमानस" में हनुमान के चरित्र के माध्यम से, तुलसीदास विद्यार्थिओं के लिए आवश्यक विनम्रता और शालीनता को दर्शाते हैं। असाधारण शक्ति और बुद्धि होने के बावजूद, हनुमान विनम्र और भगवान राम के प्रति समर्पित रहते हैं, जो ज्ञान की खोज में विनम्रता के महत्व को दर्शाता है।
- **परिश्रमी:** तुलसीदास ने विद्यार्थिओं के लिए आवश्यक गुणों के रूप में परिश्रम और सीखने के प्रति समर्पण पर जोर दिया है। "विनय पत्रिका" में, तुलसीदास विद्यार्थिओं से अपने अध्ययन में परिश्रमी होने और उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने का आग्रह करते हैं।
- **बौद्धिक जिज्ञासा:** तुलसीदास छात्रों को एक विद्वान मानसिकता विकसित करने और साहित्य और ज्ञान की समृद्धि की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। विनय पत्रिका मेंतुलसीदास शास्त्रों का अध्ययन करने और ज्ञान प्राप्त करने के महत्व पर जोर देते हैं। रामायण के लेखक वाल्मीकि जैसे चरित्र, विद्वता और बौद्धिक जिज्ञासा की भावना को मूर्त रूप देते हैं, जो छात्रों को सीखने के साथ गहराई से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं।
- **शिक्षक एवं ईश्वर में निष्ठा:** अपने गुरु के प्रति समर्पण और ज्ञान की खोज तुलसीदास द्वारा उजागर की गई एक और विशेषता है। रामचरितमानस मेंलक्ष्मण जैसे चरित्र अपने गुरु वशिष्ठ, भगवान राम के प्रति अटूट भक्ति का उदाहरण देते हैं। अपने शिक्षक के प्रति उनकी पूर्ण आस्था और निष्ठा छात्र-शिक्षक सम्बंध के महत्व को रेखांकित करती है।

विद्यार्थियों के कर्तव्य:

गोस्वामी तुलसीदास ने विद्यार्थियों से अपेक्षित कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का भी वर्णन किया है:

- **गुरुभक्ति:** तुलसीदास के अनुसार विद्यार्थी का सबसे बड़ा कर्तव्य अपने गुरु का आदर और भक्तिभाव से सेवा करना है। रामचरितमानस में शबरी का चरित्र एक आदर्श शिष्या का चित्रण करता है जो अपने गुरुऋषि मतंग की अविचल भक्ति के साथ सेवा करती है। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने शिक्षक के मार्गदर्शन और निर्देशों का विनम्रता और आज्ञाकारिता के साथ पालन करें।
- **नैतिक आचरण:** नैतिक आचरण और नैतिक व्यवहार विद्यार्थी के कर्तव्य के अभिन्न अंग हैं, इस पर तुलसीदास ने जोर दिया है। विनय पत्रिका में तुलसीदास विद्यार्थियों से धार्मिक आचरण को बनाए रखने और अनैतिक व्यवहार से दूर रहने का आग्रह करते हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे दूसरों के प्रति ईमानदारी, निष्ठा और सम्मान के साथ आचरण करें।
- **अकादमिक उत्कृष्ट:** विद्यार्थी की प्राथमिक जिम्मेदारी सीखने और बौद्धिक गतिविधियों में ईमानदारी से संलग्न होना है। तुलसीदास शास्त्रों का अध्ययन करने, ज्ञान प्राप्त करने और अपने कौशल को निखारने के महत्व को रेखांकित करते हैं। छात्रों को अपनी पढ़ाई को प्राथमिकता देने और अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **सेवाभाव:** समाज की सेवा करना और दूसरों के कल्याण में योगदान देना विद्यार्थियों का कर्तव्य माना जाता है। रामचरितमानसमेंसुग्रीव और विभीषण जैसे पात्र अपने स्वामीभगवान राम के प्रति निस्वार्थ सेवा का प्रदर्शन करते हैं। विद्यार्थियों को सेवा और करुणा के कार्यों में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे वे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहनकरते हैं।
- **ज्ञान का प्रसार:** तुलसीदास अपने शिक्षक से प्राप्त ज्ञान और बुद्धि को दूसरों के साथ साझा करने के महत्व पर जोर देते हैं। विनय पत्रिका में तुलसीदास छात्रों से ईमानदारी और उदारता के साथ अपनी सीख साझा करने का आग्रह करते हैं। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे मार्गदर्शन चाहने वालों को ज्ञान और शिक्षा प्रदान करें, जिससे सीखने और ज्ञान के चक्र को बनाए रखा जा सके।

गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ विद्यार्थियों की विशेषताओं और कर्तव्यों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती हैं। अपने चरित्रों एवं विभिन्न दृष्टांतों के चित्रण के माध्यम से तुलसीदास विद्यार्थियों में आदर्शवाद, विनम्रता, परिश्रम, भक्ति और विद्वता के महत्व को रेखांकित करते हैं। इसके अलावा वे विद्यार्थियों के कर्तव्यों को भी रेखांकित करते हैं, जिसमें शिक्षक के प्रति समर्पण, नैतिक आचरण, अध्ययन, सेवा और ज्ञान का प्रसार शामिल है। तुलसीदास की शिक्षाएँ विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों को प्रेरित करती हैं, उन्हें धार्मिकता, ज्ञान और मानवता की सेवा के मार्ग पर मार्गदर्शन करती हैं।

डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

शिक्षक शिक्षा में नवाचार का महत्व

नवाचार का अर्थ किसी उत्पाद, प्रक्रिया या सेवा में थोड़ा या कुछ बड़ा परिवर्तन लाने से है इसके अंतर्गत कुछ नया और उपयोगी अपनाया जाता है जैसे- कोई नई विधा या नई तकनीकि। नवाचार का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को आदर्श रुप में स्थापित करना है। शिक्षण पद्धति में नवाचार शिक्षकों पर निर्भर करता है। शिक्षक प्रयोग, शोध और क्रियात्मक अनुसंधान पर आधारित नवाचारों का प्रयोग कर बच्चों का सर्वांगीण विकास कर उनको कौशल एवं प्रतिभा से अवगत करा सकते हैं। शिक्षक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग द्वारा परम्परागत शिक्षा पद्धति को वर्तमान परिवेश के अनुरुप परिवर्तित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द- शिक्षा, नवाचार, नवाचार की विशेषताएं -

नवाचार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो प्रावधान रखे गये हैं वह व्यावहारिक रुप में प्रभावी ढ़ंग से लागू हो सकेंगे तथा जिस उद्देश्य से इस नीति को बनाया गया है उसको प्राप्त कर सकेंगे।

नवाचार शब्द दो शब्द से मिलकर बना है- नव+आचार, नव का अर्थ है नया और आचार का अर्थ है आचरण या परिवर्तन। नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व स्थित विधियों और पदार्थ आदि में नवीनता का संचार करता है। नवाचार शब्द अंगेजी के इनोवेशन शब्द के इनोवेट शब्द से बना हुआ है। जिसका अर्थ होता है नवीनता लाना या परिवर्तन लाना। परिवर्तन एक गति शील एवं आवश्यक प्रक्रिया है जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के प्रति और अधिक उपयोगी तथा सार्थक बनाती है। परिवर्तन और नवाचार एक दूसरे के पूरक या पर्याय है।

"नवाचार कोई नया कार्य करना ही मात्र नहीं है वरन किसी कार्य को नये तरीके से करना भी नवाचार है।"

वारनेट के अनुसार "नवाचार एक विचार है, व्यवहार है अथवा पदार्थ है जो नवीन अथवा वर्तमान स्वरुप से गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।

ट्रायटेन के अनुसार-"शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वत: नहीं होता बल्कि उन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित तरीकों से इन्हें प्रयोग में लाना होता है ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाये रख सके।"

NESCO (1971) नवाचार एक नूतन विचार की "शुरूआत है। यह एक तकनीकि प्रकिया है। जिसका विस्तृत उपयोग प्रचलित व्यवहारों तथा तकनीकि के स्थान पर किया जाता है। यह मात्र परिवर्तन के लिये परिवर्तन नहीं हैं बल्कि इसका क्रियान्वयन और नियन्त्रण, परीक्षण और प्रयोगों के आधार पर किया जाता है।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ राष्ट्र और विश्व के विकास की धुरी भी है। बच्चे राष्ट्र निर्माण के प्रमुख आधार है और उनको परिवार,समाज व राष्ट्र का एक जिम्मेंदार नागरिक बनाने वाला शिक्षक उसका महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षक जितना अधिक क्रिया शील, प्रभावपूर्ण, साधन सम्पन्न, प्रतिबद्ध और दक्ष होगा शिक्षा उतनी ही उपयोगी होगी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षक के नवाचार को प्राथमिकता दी गयी है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार का प्रयोग वर्तमान शैक्षिक परिस्थियों में सुधार लाना है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार-

शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर के आगमन ने शिक्षकों का भार न्यूनतम समय में आधुनिकतम प्रणालियों की उपयोग क्षमता के विकास की आवश्यकता के साथ बढ़ गया है। सीखने सिखाने में कम्प्यूटर इन्टरनेट का प्रयोग अनिवार्य होता जा रहा हैं। शिक्षक शिक्षा में नवाचार का प्रयोग वर्तमान शैक्षिक परिस्थियों में सुधार लाने के लिये किया गया है। हमारे देश में शैक्षिक मानकों के उत्थान और सतत् विकास के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार के लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। नवीन शैक्षिक परिस्थियों में विद्याार्थियों के साथ संबंध बनाने के लिए शिक्षकों को स्वयं को नए तरीकों से अवगत होने की आवश्यकता है। आज वीडियो, इंटरनेट, ब्राडकास्ट का समय है। बच्चे इस इंटरेक्टिव मीडिया के माध्यम से आसानी से सीख सकते हैं। इसलिए शिक्षकों को वर्तमान प्रौधौगिकी के साथ अपने आपको अद्यतन बनाये रखना होगा। शिक्षक शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अधिगमकर्ता को ऐसे निर्देश देना है जिससे वे सूचनाओं को प्राप्त कर स्वयं ज्ञानार्जन कर सकें। शिक्षक शिक्षा में नवाचार को अपनाकर न केवल पाठ्यक्रम की पूर्ति की जा रही है अपितु भविष्य की संभावनाओं तथा प्रतिस्पर्धा में सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं जिसमें करके सीखने एवं अभ्यास द्वारा सीखने और प्रत्यक्ष अनुभवों को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हो।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार लाने के उद्धेश्य से ही शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में "राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् विनिमय-2014" के द्वारा कुछ प्रभावशाली परिवर्तन किए गए हैं जैसे- द्विवर्षीय शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षा में स्नातक (बी.एड.), शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम.एड.), तीन वर्षीय एकीकृत बी.एड.-एम.एड. चार वर्षीय एकीकृत बी.ए.-बी.एड. आदि। नवाचारों के रुप में विभिन्न कौशल, सामुदायिक सेवाएं तथा स्वाध्याय पर आधारित अभ्यास कार्यक्रम आदि को सम्मिलित किया गया है। सैद्धान्तिक भाग के साथ-साथ नवीन पाठ्यक्रम में भाषा का ज्ञान, विषय-वस्तु के अध्ययन के साथ ड्रामा एवं कला जैसी नवीनतम क्रियाओं का अध्ययन व संचालन नवाचार ही है। क्षेत्रीय कार्यक्रम के निर्धारित पाठ्यक्रम में शिक्षण शैली, अधिगम का मूल्यांकन, कम्प्यूटर शिक्षा, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद विवाद, पैनल चर्चा, योगशिक्षा आदि को सम्मिलित किया गया है। शिक्षक शिक्षा में

नवाचार के प्रयोग के द्वारा लाभान्वित वर्ग को क्या सीखना, कैसे सीखना, कब सीखना तथा क्यों सीखना के साथ-साथ सीखने की उपलब्धियों का पता लगाने के लिए मूल्यांकन के नवीन उपकरणों की जानकारी दी जाती है। एक नवाचारी शिक्षक शिक्षण संबंधी समस्याओं का समाधान स्वयं के स्तर पर करने के साथ ही दूसरे शिक्षकों को ऐसे समाधान द्वारा प्रेरणा भी प्रदान करते हैं शिक्षक शिक्षा की वास्तविकता एवं व्यावहारिक उपादेयता इनके क्रियान्वयन की सफलता नवाचारों की खोज से ही संभव है। नवाचारों के प्रयोग से कक्षा-कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण एवं अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय रखने का अवसर प्रदान किया जाता है। जिससे अधिगम की स्थिति ज्ञान स्तर से उठ कर चिन्तन स्तर तक पहुंच जाती है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार का उपयोग अनेक शैक्षिक समस्याओं का हल प्राप्त करने में उपयोगी है।

नवाचार की विशेषताएं-

1. नवाचार में क्रिया शीलता एंव प्रयोगिगता की प्रवृति उपस्थित रहती है।
2. यह प्रयासपूर्ण किया जाने वाला कार्य है।
3. नवाचार के द्वारा वर्तमान विधियों और परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।
4 शिक्षा में नवाचार के माध्यम से नवीनतम तकनीकि को संस्था में पहुंचाया जाता है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता-

शिक्षक समाज का वह हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है। शिक्षक प्रशिक्षण एवं स्कूली शिक्षा का गहन-संबंध है। ये दोनों ही एक-दूसरे को प्रभावित करते है। शिक्षक शिक्षा को स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम, आवश्यकता एवं अपेक्षाओं के साथ जोड़कर देखा जाना आवश्यक है। शिक्षक को केवल शिक्षण विधियों का ज्ञान ही नहीं बल्कि बच्चों को उनके सामाजिक-आर्थिक परिवेश को तथा सीखने की प्रक्रिया को समझना चाहिए। शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यक को निम्न संदर्भो में देखा जा सकता है-

1. छात्राध्यापकों को प्रत्यक्ष एवं स्थायी ज्ञान प्रदान करने योग्य बनाने हेतु।
2. अभिव्यक्ति क्षमता एवं शिक्षण दक्षता के विकास हेतु।
3. शिक्षण विधियों में नवीनता लाने हेतु।
4. शिक्षक शिक्षा संस्थानों एवं विद्याालय में समन्वय स्थापित करने के लिए।
5. छात्राध्यापकों को क्रियाशील बनाने के लिए।
6. छात्राध्यापकों में स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए।
7. शिक्षक शिक्षा को तकनीकी युक्त बनाने के लिए।
8. सामाजिक आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु।
9. शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए।
10. शिक्षक शिक्षा को समय सापेक्ष परिवर्तन युक्त बनाने के लिए।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार का महत्व-

1. नवाचार के माध्यम से शिक्षक परम्परागत शैक्षिक जड़ता को तोड़ते हुए नवीन दक्षताओं को विकसित कर सकता है।
2. नवाचार के द्वारा शिक्षक स्वयं सृजनशील एवं अध्ययनशील बनते हैं।
3. छात्राध्यापक शिक्षण में प्रयोगिक एवं व्यावहारिक कार्यो को संपादित करने हेतु आवश्यक तैयारी एंव प्रभावी क्रियान्वयन कर सकते हैं।
4. यह शिक्षक को अपने काम के प्रति रचनात्मक, जिम्मेदार एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने में सहयोग करता है।
5. नवाचार के माध्यम से विद्यालय एवं समुदाय के मौजूदा संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग किया जा सकता है।
6. नवाचार द्वारा शिक्षक बच्चों को बोझिल, उबाऊ और अरूचिकर शिक्षा से हटाकर आनंदमयी एवं रूचिकर शिक्षा देने में सक्षम होते हैं।
7. नवाचार से छात्राध्यापक बाल केन्द्रित उपागम एवं गतिविधि आधारित शिक्षण की प्रकिया को सीख सकते हैं।
8. नवाचार के द्वारा ही शिक्षणोत्तर गतिविधियों का आयोजन संभव है।
9. छात्राध्यापक सत्त एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।

सुझाव-

1. शिक्षा में नवाचार हेतु शिक्षकों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशाला जैसे कार्यक्रमों का सतत् आयोजन होना चाहिए।
2. अभिभावकों से शिक्षकों का सतत् सम्पर्क बनाये रखना चाहिए जिससे छात्रों की अधिक से अधिक समस्याओं का समाधान किया जा सके।
3. शैक्षणिक संस्थान शिक्षकों को समयानुसार अद्यतन (Update) करने हेतु प्रेरित करें।
4. शिक्षकों को शिक्षा में गुणवत्ता बनाये रखने हेतु सतत् शोध एवं प्रयोग करते रहना चाहिये।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफलता पूर्वक क्रियान्वयन हेतु शिक्षकों को बहु विषयों एवं कौशलों का ज्ञान विकसित कर दायित्व बोध का विकास करना होगा।

संदर्भ-

1. नई शिक्षा नीति 2020
2. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् विनिमय 2014
3. डॉ० विश्वनाथ बिहारी लाल एवं डॉ० नरेश चन्द्र त्रिपाठी-शिक्षा में नवाचार
4. भाई योगेन्द्रजीत- शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियां

डॉ. वीरेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

संस्कृति एवं शिक्षा : स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानन्द भारत के बहुमूल्य रत्न थे। वह एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि एक चमत्कार थे। आज से प्राय: एक सदी पहले पराधीन भारत के जिस एकांकी और अकिंचन योद्धा संयासी ने हजारों मील दूर विदेश में नितांत अपरिचितों के बीच अपनी ओजमयी वाणी में भारतीय धर्मसाधना के चिरंतन सत्य का जयघोष किया। स्वामी जी के विचार, चिंतन और संदेश प्रत्येक भारतीय के लिए अमूल्य धरोहर है तथा उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्येक युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत्र हैं।

स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य भारत के नैतिक तथा सामाजिक पुनरुद्धार के लिए अपना संपूर्ण जीवन खपा दिया। उनके विचारानुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं है, शब्दों को रटना मात्र शिक्षा नहीं है। अपितु उसका लक्ष्य जीवन चरित्र और मानव का निर्माण करना होता है। चूंकि वर्तमान शिक्षा उन तत्वों से युक्त नहीं है अत: वह श्रेष्ठ शिक्षा नहीं है। वे शिक्षा के वर्तमान रूप को अभावात्मक बताते थे, जिसमें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं होता। भारत की गुरु-शिष्य परंपरा जिसमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में निकटता के संपर्क रह सके तथा विद्यार्थियों में पवित्रता ज्ञान, धैर्य, विश्वास, विनम्रता आदि के श्रेष्ठ गुणों का विकास हो सके। वे धर्म के संबंध में किसी एक धर्म को प्राथमिकता नही देते थे, स्वामी जी मानव धर्म के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होने धार्मिक संकीर्णता से उपर उठते हुए यह घोषणा की कि "प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय जिस भाव में ईश्वर की आराधना करता है मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ठीक उसी भाव से आराधना करूंगा।" स्वामी जी के अनुसार- बाईबिल, वेद, गीता, कुरान तथा अन्य धर्मग्रंथ समूह मानो ईश्वर की पुस्तक के एक-एक पृष्ठ हैं। वे प्रत्येक धर्म को महत्व देते थे तथा उनके सारभूत तत्वों को जो मानव जीवन को उनका चरित्र तथा ज्योति प्रदान करने में सक्षम हो को अपनाने का आहवान करते थे जिसे एक नाम दिया गया "सर्व धर्म समभाव"।

स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था, उनका जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कलकता के अभिजात क्षत्रिय परिवार में हुआ। सन 1881 में उनकी मुलाकात रामकृष्ण परमहंस से हुई। सन 1886 में श्री रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के समय विवेकानंद उनके सर्वप्रिय शिष्य थे। 11 सितंबर 1893 ई. में शिकागों (अमरीका) के विश्व धर्म सम्मेलन में वे भारत के प्रतिनिधि बनकर गए। उन्होंने हिन्दू धर्म का आध्यात्मिक आधार पर सम्मलेन में जीवंत विवेचन दिया । इस विवेचन के समक्ष पश्चिमी धर्मो का दिवालियापन स्पष्ट हो गया। 4 जुलाई 1902 को स्वामी विवेकानंद की मृत्यु हो गई। स्वामी जी एक महान राष्ट्रवादी, देशभक्त तथा विश्व बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत थे ।

स्वामी विवेकानंद जी प्राचीन भारतीय संस्कृति के केवल मानने वाले ही नही बल्कि उनके सच्चे उपासक भी थे। स्वामी जी ने भारत के जन-समुदाय के सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को निकट से देखा तथा समझा था। इस जानकारी के पृष्ठभूमि में ही उनका दार्शनिक चिन्तन का उद्भव हुआ। स्वामी जी भारतीय संस्कृति के प्राचीनता और महत्व को जानने और समझने के लिए भारत वासियों को सदैव प्रेरित करते रहे। संस्कृति के संदर्भ में उनका मानना था कि वैदिक संस्कृति भारत की आत्मा है और यहां की आध्यामिकता (भारत वर्ष) इनका मेरूदण्ड है । स्वामी जी मानते थे कि जब व्यक्ति संस्कारवश अच्छे कार्य करता है तभी उसका चरित्र गठित होता है। वे कहते थे कि बुराईयों का कारण मनुष्य में ही निहित है। मनुष्य रेशम के कीड़े के समान है वह अपने आप से ही सूत निकालकर कोष बना लेता है और फिर उसी में बंदी हो जाता है । इस तुच्छ जाल को व्यक्ति स्वयं ही नष्ट कर सकता है कोई दूसरा नहीं। वे कहते थे तुम्हारे अंदर जो अपनी शक्तियाँ है उसका विकास करो पर कभी भी दूसरों का अनुसरण करके नही। स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति के विषय में जो भी कहा आज हमारे सामने परिणाम स्वरूप प्रकट हो रहा है। है जवानों उठो, ये देश है तुम्हारा माँ भारती पुकारती है अपनी सच्ची संस्कृति को पहचानों और मानसिक दासता की बेड़ियों से स्वतंत्र हो जाओ। स्वामी विवेकानंद के विचार, दर्शन और शिक्षा अत्यंत उच्चकोटि के है जीवन के मूल सत्यों, रहस्यों और तथ्यों को समझने की कुंजी है। वे मानवता के सच्चे प्रतीक थे, वे अद्वैत वेदांत के प्रबल समर्थक थे। वर्तमान में आज के युवा पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने मूल संस्कृति से परिचित हों और नैतिक गुणों से भरपूर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाए रखें। खुद को सर्वश्रेष्ठ समझकर या अधिक बुद्धिमान जानकर स्वयं को धोखे में न रखें बल्कि वर्तमान में हम किस रास्ते में जा रहें हैं जिसका परिणाम क्या होगा ? विचार करें। स्वामी जी के कार्यो को स्मरण करें और अपनी मातृभूमि माँ भारती के खोए हुए गौरव को समस्त भारतवासी मिलकर और दृढ़ संकल्प लेकर वापस लाने का प्रयास करें। यही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाजंली होगी और माँ भारती के प्रति सच्चा समर्पण। संस्कृति देश की धरोहर व पहचान है शिक्षा ज्योंति है। धर्म मानव होने का प्रतीक है। इसलिए संस्कारिक चरित्रवान उत्तम गुणों से अपने को सजाएंगे। शिक्षा के द्वारा देश के विकास को चरम पर ले जाएंगे। और सर्व धर्म के द्वारा सच्ची मानवता को अपनाकर ईश्वर की सेवा करें। तो आइए हम एक होकर राष्ट्रीय नवचेतना जगाएं, नए समाज एवं नवयुग का निमार्ण करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1 विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक - प्रोफेसर रमन बिहारी लाल
2 महान भारतीय शिक्षा शास्त्री प्रोफेसर गिरीश पचौरी
3 शिक्षा के दार्शनिक आधार - डॉ० एन आर स्वरूप सक्सेना
4 शिक्षा के दार्शनिक आधार डॉ० गिरीश पचौरी
5 https://www.artofliving.org/in-hi/culture/best-life-lessons-from-swami-vivekananda

देव स्वरूप गौतम
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

संस्कृत भाषा की वाग्व्यवहारता

भारतवर्ष में प्राचीनकाल से संस्कृत नाम की पावनी गंगा अनवरत रूप से प्रवाहित हो रही है। भाषावैज्ञानिक भारतीय अथवा वैदेशिक भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव मानते हैं। सांस्कृतिक रूप से भारतवर्ष को एकसूत्र में बांधने का काम संस्कृत भाषा द्वारा ही होता है। अनेकविध आक्रान्ताओं द्वारा इसे नष्ट करने का प्रयास किया गया परन्तु इसकी स्वाभाविक जीवनशक्ति इसे संरक्षित करती है। इसी कारण संस्कृत भाषा को देववाणी, गीर्वाणवाणी, इत्यादि कहा जाता है। इसी तथ्य को आचार्य दण्डी इस रूप में व्याख्यायित करते हैं–

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः। 1

आधुनिक विद्वानों का एक समूह संस्कृत भाषा को बोलचाल की भाषा नहीं स्वीकारता है। संस्कृत भाषा की वाग्व्यवहारता की सिद्धि हेतु कुछ साधक तर्क निम्नलिखित हैं–

1. आचार्य यास्क अपने ग्रन्थ निरूक्त में संस्कत के लिए भाषा शब्द का प्रयोग करते हैं–

नेतिप्रतिषेधार्थीयों भाषायाम्। 2

इसके अतिरिक्तत निरूक्त में बोलियों का भी वर्णन है। इससे स्पष्ट होता है कि संस्कृत यास्काचार्य के समय बोलचाल की भाषा थी।

2. बाल्मिकीय रामायण में द्विजातियों तथा सामान्य जनों द्वारा बोली जाने वाली संस्कृत भाषा में अन्तर बताया गया है। सीता से वार्तालाप करते हुए हनुमान् मन में कहते हैं कि यदि मैं परिनिष्ठित संस्कृत का प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भयभीत हो जाएगी।

यदि वांच प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावाणं मान्यमाना मां सीता भीता भविष्यति॥3

अन्यत्र भी रामायण में हनुमान् की परिनिष्ठित भाषा प्रयोग की प्रशंसा में कहा गया है–

नूंन व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपभाषितम्॥4

3. आचार्य पाणिनि भी यास्काचार्य के समान संस्कृत के लिए भाषा शब्द का प्रयोग करते हैं। यथा–

भाषायां सदवसश्रुवः 5
पूर्वं तु भाषायाम् 6

आचार्य पाणिनि ने आष्टाध्यायी में प्राच्य एवं उदीच्य जनों की संस्कृत भाषा में होने वाले भेदों को बहुत सूक्ष्मदृष्टि से परिभाषित किया है।

4. आचार्य काव्यायन अपने वार्तिककों में स्पष्ट कहते हैं कि लोक में प्रचलित शब्दों के आधार पर ही व्याकरण लिखा गया है।

लोकतोऽर्थप्रयुक्तते शब्दप्रयोगे शास्त्रेण धर्मनियमः 7

बौद्धकवि अश्वघोष में बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु संस्कृतभाषा का आश्रय लिया। जैन कवियों ने भी अपने ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे।

अनेक भारतीय राजाओं ने अपने अभिलेख, शिलालेख संस्कृत में लिखवाए। अभिलेख सामान्यवर्ग के बोधार्थ लिखे जाते थे। अभिलेखों में भी संस्कृत भाषा का प्रयोग संस्कृतभाषा की वाग्व्यवहारता को स्पष्ट करता है।

कश्मीरी कवि बिल्हण ने लिखा है कि कश्मीरी स्त्रियाँ संस्कृत, प्राकृत और देशभाषा तीनों का समानरूप से प्रयोग करती थी–

यत्र स्त्रीणामपि किमपरं मातृभाषादेव
प्रत्यावासं विलसति वचः संस्कृत प्राकृत च॥ 8

विदेशी विद्वानों में मैक्डोनल, विन्टरनित्स ने अपने संस्मरणों तथा तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि प्राचीन काल में ही नहीं, संस्कृत का आधुनिक युग में भी भाषा के रूप में बहुसंख्यक दर्शकों के मध्य मुद्राराक्षस व उत्तररामचरित के कुछ अंशों का अभिनय देखा गया। इससे सिद्ध होता है कि संस्कृत बोलचाल की भाषा थी।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी यदि देखा जाए तो संस्कृत भाषा में वार्तालाप, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, काव्यरचना, ग्रन्थलेखन, हिन्दू संस्कारों का अनुष्ठान इत्यादि होते हैं।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। कालान्तर में लोकभाषाओं के उदभव के पश्चात् इसके प्रयोग पर नकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हुआ।

संदर्भसूची

1. काव्यादर्श
2. निरूक्त1/4
3. वाल्मिकीय रामायण 5/30/18
4. वाल्मिकीय रामायण 4/3/30
5. अष्टाध्यायी 3/2/108
6. अष्टाध्यायी 8/2/98
7. महाभाष्य पस्पशाहिक
8. विक्रमांकदेवचरित 18/6
9. ए.ए. मैक्डोनल, संस्कृत साहित्य का इतिहास (हिन्दी अनुवाद) पृ. 19

श्री लक्ष्मण सिंह एवं सोहन आर्य
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग

वैश्वीकरण के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

वैश्वीकरण का अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। आर्थिक वैश्वीकरण को हम अलग-अलग दृष्टिकोणों से देख सकते हैं जैसे राजनीतिक दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और सामाजिक दृष्टिकोण यदि हम आर्थिक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण को देखें तो इसके अंतर्गत विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाएं जब आर्थिक रूप से एक दूसरे से जुड़ जाती हैं तथा उनकी आर्थिक क्रियाएं एक दूसरे पर परस्पर निर्भर करती हैं तो वह स्थिति आर्थिक वैश्वीकरण कहलाती है इसके अलावा सामाजिक वैश्वीकरण जिसमें अलग-अलग देशों के लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए तथा रोजगार प्राप्त करने के लिए अन्य देशों में प्रवास करते हैं अलग-अलग प्रकार की संस्कृतियों एवं भाषा बोलने वाले लोग एक देश में कार्य करते हैं तो ऐसी स्थिति सामाजिक वैश्वीकरण कहलाती हैं वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग अर्थशास्त्रियों के द्वारा 1980 में किया गया था तथा सामाजिक विज्ञान में इसका प्रयोग 1960 के दशक में किया गया था लेकिन यह अवधारणा 1990 में अधिक लोकप्रिय हुई जो अमेरिका के उद्यम मंत्री चार्ल्स तेज रसाल द्वारा अपनी कॉरपोरेट दिग्गजों की रचना में दिया गया था

भूमंडलीकरण और भारत

भारत भी भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसमें भारत ने आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से अपनी सीमाओं को 1990 के दशक में विश्व के अन्य देशों से भूमंडलीकरण के माध्यम से जोड़ा जो भारत के लिए एक आर्थिक एवं राजनीतिक महत्व रखता है 1990 के दशक में आर्थिक नीतियों में बदलाव करके भूमंडलीकरण को गति दी गई इसका परिणाम भारत में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए अपनी आर्थिक नीतियों में सुधार किया तथा विदेशी प्रतिबंधों को कम से काम किया और आर्थिक संबंधों में विश्व स्तरीय संबंध को प्रोत्साहित किया भारतीय अर्थव्यवस्था विदेशी निवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए नई निवेश नीतियों को लाया गया भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी निवेश को सुविधाजनक माहौल प्रदान करने के लिए निवेश नीतियां लाइन जिनके माध्यम से भारत में अधिक से अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित किया गया भारत ने विदेशी कंपनियों को अपने विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करने की सुविधा प्रदान की और आर्थिक नीतियों को सुधारने के परिणाम स्वरूप विदेशी निवेश भारतीय उद्योगों वित्तीय सेवाओं सूचना प्रौद्योगिकी पर्यटन आधुनिक बाजारों और अन्य क्षेत्रों में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हुआ।

भूमंडलीकरण ने भारतीय वित्तीय बाजारों को भी प्रभावित किया है। विदेशी निवेशकों को भारतीय पूंजीवादी बाजारों में निवेश करने की सुविधा प्रदान की गई है। भारतीय बैंकों ने विदेशी निवेशकों को विभिन्न वित्तीय उपकरणों के माध्यम से अपने पूंजीवादी बाजारों में निवेश करने की सुविधा प्रदान की है। इसके साथ ही, विदेशी निवेशकों को भारतीय कंपनियों में निवेश करने की अनुमति दी जा रही है, जो वृद्धि के अवसरों को बढ़ाता है और वित्तीय बाजारों को मजबूत करता है।

भूमंडलीकरण के अलावा, भारतीय संविधान, विश्वव्यापी संगठनों के सदस्यता, विदेशी नीतियों में बदलाव, और विदेशी संबंधों में सुधारों के माध्यम से भारत ने भूमंडलीकरण के प्रयासों में भी सक्रिय योगदान दिया है। भारत विभिन्न आर्थिक और सांस्कृतिक संगठनों में सक्रिय रूप से भाग लेता है और विश्व मानचित्र में अपनी गरिमा बढ़ाता है।

वैश्वीकरण के कुछ सामाजिक-आर्थिक प्रभाव-

राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय में सुधार, उद्योग-धंधे और कृषि उत्पादन में वृद्धि, निर्धनता में कमी, तकनीकी शिक्षा में सुधार, वैश्वीकरण से नई नौकरियों का सृजन, विदेशी कर्मचारियों के लिए राष्ट्रीय श्रम बाजार के खुलने से बेरोजगारी में कमी

वैश्वीकरण के कुछ अन्य प्रभाव-

पश्चिमी समाज और संस्कृतियों के कुछ बातों को आत्मसात करना, महिलाओं की स्वतंत्रता में वृद्धि, रूढ़िवादी तत्त्वों में कमी, शिक्षा की अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँच, शहरीकरण में वृद्धि, जनजागरूकता, संसाधनों की पहुँच में वृद्धि, पारंपरिक व्यवसायिक अवसरों को आकर्षक लाभकारी अवसरों में बदलना, वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि, पूँजी के प्रवाह में वृद्धि

वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव-

वैश्वीकरण के कई पहलू हैं और यह राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक हो सकते हैं, जिनमें से वित्तीय एकीकरण सबसे आम पहलू है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और अगले दशक में इसके शीर्ष तीन में पहुंचने का अनुमान है।

भारत की व्यापक आर्थिक वृद्धि काफी हद तक वैश्वीकरण के कारण है जो एक परिवर्तनकारी परिवर्तन था जो 1990 के दशक तक नहीं हुआ था। तब से, देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) तेजी से बढ़ा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

कुल मिलाकर, वैश्वीकरण ने भारत के विभिन्न पहलुओं में सुधार किया है।

- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंध
- अर्थव्यवस्था
- प्रौद्योगिकी और संचार
- संगठित दुनिया

- सामाजिक एवं सांस्कृतिक विस्तार

निर्यात सब्सिडी और आयात बाधाओं में कमी से मुक्त व्यापार सक्षम हुआ जिसने भारतीय बाजार को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए आकर्षक बना दिया। उभरते भारतीय बाजार की अप्रयुक्त क्षमता को वैश्विक बाजार के लिए खोल दिया गया और इसके औद्योगिक, वित्तीय और कृषि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए।

औद्योगिक क्षेत्र- इसमें विदेशी पूंजी निवेश का भारी प्रवाह देखा गया 'भारत फार्मास्युटिकल विनिर्माण, रसायन और पेट्रोलियम उद्योगों के लिए एक पसंदीदा अपतटीय बाजार बन गया। इससे उन्नत प्रौद्योगिकियां और प्रक्रियाएं आई जिससे भारतीय औद्योगिक क्षेत्र के आधुनिकीकरण में मदद मिली।

वित्तीय क्षेत्र- वैश्वीकरण और निजीकरण से पहले भारत के वित्तीय क्षेत्र को भ्रष्ट और अयोग्य सरकारी अधिकारियों के संयोजन द्वारा कुप्रबंधित किया गया था। वित्तीय क्षेत्र के निजीकरण ने बहुत अधिक गतिशील
वित्तीय सेवा क्षेत्र का निर्माण किया।

कृषि क्षेत्र- भारत में अभी भी बड़े पैमाने पर कृषि प्रधान समाज है देश की अधिकांश आबादी अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र पर निर्भर है। किसानों की नई तकनीकी क्षमताओं में वृद्धि हुई है जिससे चाय, कॉफी और चीनी जैसे भारतीय उत्पादों के वैश्विक निर्यात को बढ़ाने में मदद मिली है।

इन क्षेत्रों की बेहतरी से राष्ट्रीय आय रोजगार, निर्यात और जीडीपी वृद्धि में वृद्धि हुई है।

भारत के लिए वैश्वीकरण के लाभ-

1. भारत के बढ़ते वैश्वीकरण के कारण विशाल भारतीय बाजार में निवेश और संचालन करने की इच्छुक विदेशी कंपनियों की देश के बाजारों तक पहुंच हो गई है।
2. रोजगार के अवसर बढ़ें।
3. प्रारंभ में, वैश्वीकरण ने विदेशियों को एक सस्ती मजबूत श्रम शक्ति तक पहुंच प्रदान की। लेकिन जैसे-जैसे देश ने प्रगति की है, समय के साथ श्रम शक्ति अधिक कुशल और शिक्षित हो गई है। अब भारत में विदेशों में रहने वाले सबसे बड़े प्रवासी हैं।
4. संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर विचार करने वाले विदेशी निवेशकों के लिए भारत एक अच्छी तरह से विविध निर्यात नोकरी प्रदान करता है। भारत के आर्थिक सर्वेक्षण में भी इस बात को उजागर किया गया है।
5. भारतीय समाज पर वैश्वीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव
6. वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने पिछले कुछ वर्षों में टेलीविजन और अन्य मनोरंजन स्रोतों तक पहुंच बढ़ा दी है। यहां तक कि ग्रामीण इलाकों में भी सैटेलाइट टेलीविजन का एक स्थापित बाजार है। शहरों में इंटरनेट की सुविधा हर जगह है और इसे स्मार्ट सिटी मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ाया जा रहा है ।
7. भारत के शहरी क्षेत्रों में वैश्विक खाद्य श्रृंखला और रेस्तरां में वृद्धि हो रही है। हर शहर में कई मूवी हॉल, बड़े शॉपिंग मॉल और ऊंची इमारतें देखी जाती हैं।

भारतीय शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभाव-

वैश्वीकरण के कारण शैक्षिक क्षेत्र में गहरा प्रभाव देखा गया है जैसे साक्षरता दर का उच्च होना।

विदेशी विश्वविद्यालय अब विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग कर रहे हैं, जिससे भारतीय छात्रों तक पहुंच बढ़ रही है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैश्वीकरण को अपनाया और यह विकासात्मक शिक्षा में नए प्रतिमान विकसित करने के अवसर प्रदान करता है।

बड़े पैमाने पर अशिक्षित से औद्योगिक समाज से सूचना समाज में बदलाव ने धीरे-धीरे आकार ले लिया है।

वैश्वीकरण ई-लर्निंग, लचीली शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम और विदेशी प्रशिक्षण जैसे नए उपकरणों और तकनीकों को बढ़ावा देता है।

"नई शिक्षा नीति" जैसी कई सरकारी योजनाएं भारतीय छात्रों को जीवन के हर क्षेत्र में वैश्विक समुदाय के बराबर बनाने के लिए एक अधिक वैश्विक शिक्षा प्रणाली पर जोर दे रही हैं

सारांश

भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव कई गुना है और इस पर विस्तार से चर्चा की गई है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने लोगों के औद्योगिक पैटर्न और सामाजिक जीवन को बदल दिया है। इसका भारतीय व्यापार, वित्त और सांस्कृतिक व्यवस्था पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं का वैश्वीकरण एक साथ हुआ। पहले इस प्रक्रिया की गति धीमी थी लेकिन अब सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से हर क्षेत्र में बिजली की तेज गति से परिवर्तन हो रहा है।

वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप कई प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि हुई है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने दुनिया भर में विनिर्माण संयंत्र स्थापित किए हैं। इसका भारत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और प्रशासन कई बाधाओं को दूर करने और व्यापार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित करने के लिए वैश्विक नीतियों को अपनाने की पूरी कोशिश कर रहा है।

अनिल कुमार
सहायक आचार्य, समाज शास्त्र विभाग

मानविकी विषयों का महत्व तथा इतिहास की उपयोगिता

प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तू के अनुसार, "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है" अर्थात मनुष्य अपने जन्म से ही किसी न किसी सामाजिक बन्धन से जुड़ा हुआ होता है। गौरतलब है कि मानव तथा समाज को बेहतर समझने के लिए समाज का अध्ययन बहुत जरूरी हो जाता है। चूंकि समाज का अध्ययन मानविकी विषयों के अन्तर्गत किया जाता है किन्तु हमारे समाज में मानविकी विषयों को लेकर भ्रांति रहती है। दरअसल हमारे समाज में मानविकी के विषयों को थोड़ा हीनभावना के साथ देखा जाता है जबकि विज्ञान पढ़ने वालों को एक अलग सुपीरियोरिटी के साथ। यहां तक कि असिस्टेंट प्रोफेसर तथा शोध के क्षेत्र हेतु पात्रता हासिल करने के लिए आयोजित यूजीसी नेट/ जेआरएफ परीक्षा को लेकर भी यही भ्रम बना हुआ है कि मानविकी के विषयों में यह परीक्षा पास करनी आसान होती है जबकि विज्ञान के विषयों में काफी कठिन। हमारे समाज में यह बात व्याप्त हो गई है कि मानविकी के विषयों में अधिकतर रटना ही होता है, समझने जैसा कुछ नहीं होता लेकिन गणित या विज्ञान आदि विषयों को पढ़ना काफी मुश्किल होता है। अर्थात साइंस पृष्ठभूमि के लोग एक विषय गौरव या गर्व की भावना से प्रेरित होकर घूमते हैं। जिस प्रकार, हमारे समाज में तथाकथित उच्च जाति में एक श्रेष्ठता या गौरव की भावना काम करती है, उसी प्रकार विज्ञान वालो के भीतर भी मानविकी विषयों से श्रेष्ठता की भावना बलवती रहती है। यह बात भी आर्ट्स स्ट्रीम के विद्यार्थियों को कहीं न कहीं हतोत्साहित करती है। हमें लगता है कि आर्ट स्ट्रीम के सब्जेक्ट्स को पढ़ने में कोई दिमाग लगाना नही पड़ता है जबकि विज्ञान में तो खूब मेहनत परिश्रम करना होता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि विज्ञान कठिन विषय है या उसमें परिश्रम करना पड़ता है किंतु मानविकी विषयों में भी कॉन्सेप्ट होता है, अवधारणा होती है, विषय की एक समझ होती है।

हालांकि हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि "जिस प्रकार बिना बीज के कोई पौधा नहीं उगता, ठीक उसी प्रकार बिना कांसेप्ट या अवधारणा के कोई विषय नहीं बनता।" अर्थात जिस प्रकार हम बिना बीज के किसी पौधे की कल्पना नही कर सकते, तो फिर बिना कॉन्सेप्ट के कोई विषय कैसे अस्तित्व में रह सकता है? प्रत्येक विषय का एक कॉन्सेप्ट होता है, उसकी कुछ निश्चित अवधारणाएं होती हैं जोकि मानविकी के सभी विषयों में भी हैं, और जहां कॉन्सेप्ट की बात आती है, फिर वहां रटने वाला फैक्टर खत्म हो जाता है। इस प्रकार कोई भी विषय अच्छा या बुरा नहीं होता। उसे अच्छा या बुरा बनाने वाले आप स्वयं हैं। इसलिए मानविकी के विद्यार्थियों को अपने भीतर साइंस वाले विद्यार्थी से जरा सी भी हीन भावना नहीं रखनी चाहिए। आप स्वयं को बिलकुल भी कमतर ना आंके, इसके साथ ही समाज में यह जागरूकता भी फैलानी है। विज्ञान पृष्ठभूमि के छात्रों में भी आप जैसी ही बुद्धि है। प्रतिभा विज्ञान के विद्यार्थियों में भी हो सकती है और मानविकी के विद्यार्थियों में भी।

यदि सफ़लता की बात की जाए तो किसी भी व्यक्ति की सफलता उसके विषय तथा माध्यम पर निर्भर नहीं करती अपितु उस व्यक्ति विशेष के प्रयासों, मेहनत तथा लगन पर निर्भर करती है। विभिन्न देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले नेताओं तथा किसी देश का बागडोर संभालने वाले उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनने का मार्ग मानविकी के विषयों से ही प्रशस्त होता है। लोकतंत्र को मजबूत बनाने वाली पत्रकारिता, मीडिया आदि भी मानविकी के विषयों के अन्तर्गत आते हैं। समाज को दिशा देने वाले कवि, साहित्यकार, लेखक, दार्शनिक, चिन्तक आदि सभी मानविकी विषयों से ही पैदा होते हैं। दुनिया को जीवन तथा समाज के विभिन्न सूक्षम बिंदुओं पर गहन चिन्तन देने वाले दार्शनिक यथा सुकरात, अरस्तु, कौटिल्य, कांट, हीगल, रूसो तथा नीत्शे मानविकी विषयों की ही सौगात हैं। इस प्रकार देखा जाए तो मानविकी विषयों की दुनिया भी काफी विस्तृत हैं, सुन्दर है और तमाम संभावनाओं से भरी हुई है। बस आवश्यकता है तो अपने विषय में खूब मेहनत करने की; आप अपने विषय का गहनता से अध्ययन कीजिए, अपने विषय पर सूक्ष्म पकड़ बनाइए, सफलताएं अपार हैं।

अब हम बात करेगें इतिहास विषय पर... आखिर हम इतिहास क्यों पढ़े? इतिहास की क्या उपयोगिता है हमारे समाज में? नोबेल पुरस्कार विजेता रहीं अमेरिकी लेखिका पर्ल एकस कह कहती हैं "यदि आप इतिहास नहीं जानते तो आप कुछ नहीं जानते। आप वे पत्तियां हैं जिसे यह पता ही नहीं कि वे पेड़ का हिस्सा थीं।" दरअसल प्रत्येक विषयक का आपना विशेष महत्व है। विज्ञान के विषय यदि तर्कशक्ति तथा वैज्ञानिक दृष्किोण को बढ़ावा देते हैं तो वहीं, मानविकी के विषय तथा इतिहास, विशेषकर समाज तथा जीवन दोनों का दर्शन प्रदान करते हैं। इतिहास हमें समाज के प्रति संवेदनशील तो बनाता ही है, साथ ही साथ देश तथा समाज के प्रति परिपक्व भी बनाता है। यदि वर्तमान समय में विद्यमान सभी विषयों की बात की जाए तो प्रत्येक विषय को समझने के लिए उसके इतिहास को समझना बहुत जरूरी होता है। यदि आप समाजशास्त्र पढ़ते हैं तो समाज का भी अपना एक इतिहास है, राजनीति विज्ञान विषय भी मूल अवधारणा से इतिहास से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार यदि आप भूगोल या मनोविज्ञान भी पढ़ना चाहें तब भी आपको उस विशिष्ट विषय के इतिहास को उठाकर देखना ही होगा। यहाँ तक कि साइंस को बेहतर तरीके से समझने के लिए हिस्ट्री ऑफ साइंस (विज्ञान का इतिहास) पढ़ना भी आवश्यक हो जाता है। यही कारण है कि विभिन्न विद्वानों ने इतिहास को सभी विषयों की जननी (मदर ऑफ आल सब्जेक्ट) कहा है। दरअसल किसी भी देश या समाज के अतीत को समझने के लिए तथा भविष्य को बेहतर बनाने के लिए उसके अतीत को जानना बहुत जरूरी होता है। कन्फ्यूशियस ने भी कहा है, "भविष्य का निर्धारण करना है तो इतिहास पढ़ो।" इस प्रकार, अतीत को समझे बिना आप वर्तमान को सही से नहीं समझ सकते। इतिहास दर्शन के अध्ययन के तहत 20 वीं सदी में एक महान दार्शनिक तथा विद्वान, ई. एच. कार को भी पढ़ा जाता है। उन्होंने भी कहा है कि "इतिहास भविष्य को ध्यान में रखते हुए अतीत और वर्तमान के बीच चलने वाला एक अनवरत संवाद है।" अर्थात किसी भी समाज के अतीत तथा वर्तमान हमेशा जुड़ा रहता है तथा ये दोनों एक दूसरे से प्रभावित होते रहते हैं। यही वजह है कि किसी देश का इतिहास लेखन भी उस देश की वर्तमान परिस्थितियों पर निर्भर करता है क्योंकि इतिहासकार अतीत तो देखता है किंतु वह अतीत को वर्तमान की आंख से देखता है।

इसी संदर्भ में, इतिहास के भीतर एक कॉन्सेप्ट आता है ऑब्जेक्टिविटी (वस्तुनिष्ठता) का। अर्थात इतिहास लेखन के दौरान किसी भी इतिहासकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह वस्तुनिष्ठ होकर इतिहास लेखन करे। वह अपने चारों और विद्यमान परिस्थितियों, अपने पूर्वाग्रह आदि से प्रभावित हुए बिना निष्पक्ष होकर तथ्यों को चुने और उनका विश्लेषण करे। भले ही पूरी तरह से वस्तुनिष्ठता संभव ना हो किंतु यह किसी भी इतिहासकार को स्वयं से ऊपर उठकर समाज के नजरिए से देखने को प्रेरित करती है। यह कॉन्सेप्ट हम सभी को भी यही सीख देता है कि किस प्रकार हम अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर निष्पक्ष रूप से अपने देश, अपने समाज के उत्थान हेतु कार्य कर सकते हैं तथा राष्ट्र निर्माण में सहायक बन सकते हैं। यह हमें इतिहास सिखाता है।

इसी प्रकार इतिहास में कार्य-कारणत्व सिद्धान्त भी हमें एक कार्य कारण तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समृद्ध करती है। आज भी हम देखते हैं हमारे समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का काफी अभाव है कि घटनाएं और परिस्थितियां किस प्रकार पैदा हुई.. जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और हमारी तटस्थता हमें एक सुधार की भावना के लिए प्रेरित करती है। इतिहास हमें यह समझ देता है। दरअसल किसी भी समाज में एक ऐतिहासिक चेतना कार्य कर रही होती है क्योंकि अतीत में क्या हुआ? या क्या नहीं हुआ? इसके जीवंत उदाहरण सिर्फ इतिहास ही प्रस्तुत कर सकता है। जिनसे समाज सीखता है और आगे बढ़ता है। अम्बेडकर साहब ने भी कहा था, " जो कौम अपना इतिहास नहीं जानती, वह कभी इतिहास बना नहीं सकती।" यह बात हमें बताती है कि अपने वर्तमान को समझने तथा भविष्य को बेहतर बनाने के लिए इतिहास को जानना कितना आवश्यक है। प्रत्येक प्रकार की शिक्षा मानव उत्थान के लिए कार्य करती है और इतिहास भी कुछ अलग नहीं है। और मानव समाज के लिए इतिहास से ज्यादा लाभकारी विषय नहीं हो सकता है। हालांकि विज्ञान वैज्ञानिक विकास में लाभकारी होता है, अन्य विषय अपनी अपनी दिशाओं में किंतु मानव समाज के लिए तो इतिहास अति आवश्यक हो जाता है। आप ही हैं वो बच्चे.. जो देश के भविष्य का निर्धारण करेंगे। अपने विषय को मजबूत बनाएं और इतिहास को समृद्ध करें।

अंत में किसी लेखक की पंक्तियों के साथ अपनी बात को विराम दूंगा...

"हमें तो करनी हे, विचारों की खेती।
क्योंकि, बंदूके तो कभी कभार लिखती हैं।
विचार अक्सर लिखते हैं, परिवर्तन की कहानी।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. इतिहास क्या है? : ई.एच.कार
2. इतिहास दर्शन: कोलेश्वर रॉय
3. पढ़ो तो ऐसे पढ़ो: डॉ० विजय अग्रवाल
4. महाभारत जारी है: दिलबाग सिंह 'विर्क'

आशू सैनी (शोधार्थी)
इतिहास विभाग

शोध निर्देशक: प्रो० गिरीश कुमार सिंह

गुरू

"गुरूर्ब्रहमा, गुरूर्विष्णु:, गुरूर्देवो महेश्वर:।
गुरूसक्षात् परंब्रहम, तस्मै श्री गुरूवे नम:॥"

कोई शिल्पकार मानो पत्थर को देता आकार।
कोई कच्ची मिट्टी तपाकर, मिटाता हो विकार॥
भाग्य विधाता कहूँ तुम्हें या भाग्यरचियता।
ज्ञान का अविरल स्रोत, जिसमें हो बहता॥

जो नि:स्वार्थ पथ दिखलाता.....
किसी को बनाने में जो स्वयं मिट जाता।
वो ऐसा ज्ञान का भण्डार है.....
जिस पर हर निष्ठावान का अधिकार है॥

जहाँ गुरूरूपी प्रकाश विद्यमान हो.....
वहाँ कैसे फिर अज्ञानता का अंधकार हो।
ब्रहमा, विष्णु, महेश का प्रारूप है.....
वह गुरू धरती पर हमें 'देवस्वरूप' है॥

किस्सा, जिन्दगी का कभी शुरू ही न हुआ होता।
अगर जिन्दगी को, जिन्दगी बनाने वाला गुरू ही न हुआ होता॥

Day ho yaa Night,
A Teacher is always Right.
East or West,
A Teacher is always Best.

शिक्षक उस मोमबत्ती के समान है..., जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करती है।

भारती शर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

गंगा प्रदूषण-कारण एवं निवारण

ब्रह्मजी के कमण्डल में संरक्षित राजा भागीरथ की भागीरथी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवाजी की लटाओं के माध्यम से पृथ्वी पर अवतरित हुई माँ गंगा पृथ्वीवासियों को अमृत तुल्य वरदान है उतराखण्ड से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में होती हुई बिहार तथा पश्चिम बंगाल का सिंचन करती हुई यह हमारी जीवनदायनी शक्ति बन गई है इसके किनारे बसे नगर व ग्रामों के खेतों का सिंचन करने के साथ-साथ यह उस क्षेत्र की प्यास भी बुझाती है इसके अमृत तुल्य जल के कारण इसे पानी न कहकर गंगाजल पुकारते है हमारी सभी धार्मिक पूजा, विधि-विधान गंगा जल के बिना संभव नहीं है पूरे श्रावण मास में शिवजी पर केवल गंगा जल ही चढ़ता है यहाँ तक कि मृत्यु के समय भी व्यक्ति के मुँह में तुलसी दल एवं गंगा जल ही डाल जाता है इस परम पावन गंगा जल की एक विशेषता यह भी है कि इसके जल में कीड़े नहीं पड़ते।

जो जल इतना पवित्र एवं पावन है उस जल को हम पृथ्वीवासियों ने अपने निहित स्वार्थ के कारण इतना गंदा कर दिया है कि आज गंगा जल प्रदूषित हो गया है गंगा किनारे बसे नगर एवं ग्रामों का सीवेज भी गंगा में पड़ता है धार्मिक मनुष्यों द्वारा की गई धार्मिक क्रियाओं का सामान जैसे-हवन की राख आदि गंगा में ही किया जाता है मृतक व्यक्तियों का दाह संस्कार भी गंगा के किनारे ही किया जाता है गंगा जल जैसे को प्राकृतिक रूप से स्वच्छ करने वाले जलीय जीव जैसे-कछुआ एवं मछली अवैध शिकार के कारण गंगा में समाप्त होने जा रहे है जिस कारण गंगा प्रदूषण बढ़ता है। प्रशासन द्वारा ऐसी व्यवस्था कराई जाये जिससे रासायनिक पानी व रासायनिक कचरा परिशोधित करने के बाद ही गंगा में छोड़ा जाए ग ंगा किनारे बसे नगरों एवं ग्रामों में वाटर ट्रीटमेंट प्लांट लगाकर सिवेज को शुद्ध कर ही गंगा में छोड़ा जाये दुर्गा पूजा एवं गणेश पूजा में जो मूर्तियाँ बने वह कच्ची मिट्टी की बने एवं रासायनिक पेंट की जगह प्राकृतिक रंगो का प्रयोग करें मृतक व्यक्तियों का संस्कार अपने ग्राम एवं नगरों में कर केवल उनकी अस्थियों का विर्सजन ही गंगा में किया जाये गंगा द्वारा छोड़े गए भूमि पर पालेजों पर या तो पूर्ण प्रतिबंध हो या उनपमें जैविक कम्पोस्ट खाद का प्रयोग किया जाये। गंगा स्नान करते समय साबुन या शैम्पू का प्रयोग न किया जाये जल-जीवों के शिकार को दण्डनीय अपराध घोषित किया जाये इसका उल्लंघन करने वालों को न्यूनतम पाँच वर्ष जेल की सजा का प्रावधान है।

यदि हम सब अपने-अपने स्वार्थो को त्यागकर यह प्रण कर लें कि हम अपने क्षेत्र में न गंगा प्रदूषित करेंगे न करने देंगे और न ही प्रदूषित बहने देंगे तो यह सदा नीरा पूर्ण सलिला माँ गंगा युगों-युगों तक हम सबका कल्याण करती रहेंगी।

सृष्टि शर्मा
अंशकालिक प्रवक्ता, गृह विज्ञान

सदाचार का महत्व

सदाचार मनुष्य का आभूषण है सदाचार वह गुण है जिसको अपनाकर मनुष्य समाज, देश और यहाँ तक कि संसार में पूजा जाता है सदाचार का सभी स्थानों पर सम्मान होता है राम, कृष्ण, मौहम्मद, विवेकानन्द तथा गांधी जी आदि सदाचारी महापुरूष थे संसार आज भी इनकी महापुरूषों के रूप में वन्दना करता है नि:सन्देह सदाचार का पालन करना मनुष्य का परम धर्म है जिस समाज के व्यक्ति सदाचारी होते है वह समाज उन्नति को ओर अग्रसर होता है उन लोगों के चरित्र बल से यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाती है।

सदाचार का अर्थ है, श्रेष्ठ आचरण या व्यवहार करना जो व्यक्ति दूसरों के प्रति पीड़ा देने वाला व्यवहार करते है, उनको दुराचारी कहा जाता है जिस आचरण से दूसरों का कल्याण होता है, वह सदाचार होता है तथा जिस आचरण से दूसरों को कष्ट होता है, वह दुराचार होता है हमारे आचरण से अन्य लोगों को शान्ति मिले, हमारे द्वारा किये गये कार्य दूसरों के लिए हितकारी हों, हमारे हृदय में दूसरों के प्रति सहानुभूति तथा सद्भाव हो, यही सदाचार है सदाचार का दूसरा रूप परोपकार अर्थात् परहित है एक सदाचारी व्यति में विनम्रता, उदारता, सहानुभूति, करूणा, चरित्र-बल, शीघ्रता आदि सद्गुण पाये जाते हैं।

सदाचार से स्थान स्वर्ग बन जाता है और दुराचार से स्थान नरक बना जाता है दुराचारियों के लिए कहीं भी स्वर्ग नहीं होता सदाचारियों के लिए सब जगह स्वर्ग होता है इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त के ये उद्गार निम्न हैं-

"खलों को कहीं भी नहीं स्वर्ग है, भलों के लिए यही स्वर्ग है
सुनो स्वर्ग क्या है सदाचार है, मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।"

सदाचार सफलता की कुँजी है यह कल्याण का महामंत्र है सदाचार से मनुष्य ने हर कठिनाई पर विजय प्राप्त करते हुए मानवता का कल्याण किया है इस पृथ्वी पर सदैव ही सदाचारी व्यक्ति जन्म लेते रहे हैं जिन्होंने परहित में ही अपना जीवन लगा दिया तथा मानवता का कल्याण किया भारतीय इतिहास ऐसे महापुरूषों से भरा पड़ा है भगवान राम ने परहित को सर्वोच्च माना भगवान गौतमबुद्ध ने मानव कल्याण के लिए अर्थात् मनुष्यों के दुखों को दूर करने के लिए राजपाट को त्याग दिया कृष्ण ने परहित में अपना जीवन व्यतीत किया। कर्ण, हनुमान, राजा रन्ति देव जैसे सदाचारी महापुरूषों ने अपना जीवन दूसरों की भलाई में व्यतीत किया आधुनिक काल में भी सदाचारी महापुरूषों ने देश की उन्नति तथा मानव कल्याण में महान योगदान दिया है मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, पं० जवाहर लाल नेहरू आदि का आचरण तथा सच्चरित्रता भारत ही नहीं, अपितु संसार के सामने आदर्श बना हुआ है भार में केवल महापुरूषों ने ही नहीं, अपितु नारियों ने भी सदाचार से हमारे देश को गौरव प्रदान किया इन नारियों में सीता, अनुसूया, सावित्री, महारानी लक्ष्मीबाई आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

सदाचार वह गुण है जिसके अभाव के कारण आज का मनुष्य तरह-तरह के कष्टों को उठा रहा है सदाचार ही मनुष्यत्व प्रदान करता है सदाचार ही जीवन को सही दिशा प्रदान करता है, व्यक्ति को सही, गलत का मान कराता है जिस व्यक्ति का चरित्र गिर जाता है वह पशुता को ग्रहण करता है हम अपने चरित्र का निर्माण करके सदाचारी बन सकते है सदाचार वह श्रृगांर है जिसके द्वारा मनुष्य महापुरूषों की श्रेणी में आ जाता है और वह सर्वत्र पूजा जाता है हमको ध्यान रखना चाहिए - "सदाचार: प्रथमों धर्म:" अर्थात् सदाचार ही मनुष्य का प्रथम धर्म हैं।

सृष्टि शर्मा
अंशकालिक प्रवक्ता, गृह विज्ञान

भारत में रक्षा एवं सामरिक अध्ययनः एक अनिवार्य विषय के रूप में

युद्धों का इतिहास मानव जाति के इतिहास से माना जाता हैं, किंतु युद्ध शास्त्र अथवा रक्षाशास्त्र का एक पृथक विषय के रूप में इसका उद्‌गमन हो सका। जिस प्रकार अन्य विषयों को प्राथमिकता दी गई। उस प्रकार रक्षा अध्ययन विषय को नहीं दी गई। लेकिन आज के समय में हम इस विषय के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकते हैं क्योंकि आज का युग 'अतिमारक का युग' है। आज प्रत्येक देश के पास अत्याधुनिक हथियारों का भंडार है, और प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा के लिए इसको निरंतर बढ़ने के प्रयास मे लगा हुआ है। जहां एक देश हथियारो को बढ़ाना अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए उचित समझता है, वही वह दूसरे राष्ट्र के लिए चुनौती होती है। क्योंकि जब एक राष्ट्र शक्तिशाली हो जाता है, तो वह अपनी इच्छाओं को कमजोर राष्ट्र पर थोपने की कोशिश करता है। जिससे एक राष्ट्र की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को सीधी चुनौती होती है। ऐसे में रक्षा एवं सामरिकी अध्ययन विषय का अध्ययन देश के प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य हो जाता हैं।

भारत दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा देश है। जो सात देशों (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, म्यांमार, बांग्लादेश) के साथ अपनी स्थल सीमा साझा करता हैं। जिसमें से चीन और पाकिस्तान शत्रु के रूप में भारत को आजादी के बाद से ही विरासत में मिले। भारत-पाकिस्तान के साथ चार युद्ध क्रमशः 1947-48, 1965, 1971 तथा 1999 में और चीन के साथ एक युद्ध (1962) कर चुका है। ये दोनों राष्ट्र ही भारत के लिए बाह्य और आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती बने हुए हैं। अगर बाह्य और आंतरिक चुनौती की बात करे; जैसे पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवाद जैसे- 26/11 का भारत के ताज होटल पर आतंकी हमला, उरी अटैक, पुलवामा अटैक जो भारत की सुरक्षा को चुनौती देते रहे हैं तो वहीं, चीन द्वारा सीमा विवाद जैसे- डोकलाम संघर्ष, गलवान घाटी में भारतीय और चीनी सैनिकों में हिंसात्मक झड़प और उसके पश्चात अरुणाचल प्रदेश फिर से चीनी और भारतीय सैनिकों में तनातनी, भारत की बाह्य सुरक्षा को प्रभावित करती रही है। भारत-बांग्लादेश की सीमा विश्व की सबसे लंबी स्थलीय सीमाओं में से एक है व इस स्थान की भौगोलिक जटिलता के चलते शत-प्रतिशत तारबंदी नहीं कर सकते हैं जिसका फायदा उठा कर मानव तस्करी, मादक द्रव्य पदार्थ, हथियार तस्करी, आदि कृत्यों को अंजाम दिया जाता है जिसके कारण भारत की बाह्य और आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था खतरे मे पड़ जाती है।

नक्सलवाद जोकि भारत की आंतरिक सुरक्षा और भारतीय कानून व्यवस्था को सीधी चुनौती है। नक्सलवाद वह विचारधारा है जो 1967 में भारत के ही एक राज्य पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी गांव में पनपती है जो आगे चलकर सशस्त्र विद्रोह का रूप धारण कर भूमिहीन लोगों और निर्धन किसानों के द्वारा भारतीय कानून व्यवस्था और भूमिपतियों अथवा जमीदारों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह के रूप में उभरकर आती है। जिसका नेतृत्व चारू मजूमदार, जंगल संथाल तथा कानू सान्याल जैसे उग्र चरमपंथी साम्यवादी नेताओं द्वारा किया गया था जिनके नेतृत्व में भारत में नक्सलवाद फला-फूला। भारत में विभिन्न हिंसात्मक घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। यह आंदोलन केवल पश्चिम बंगाल तक ही सीमित नहीं रहता। यह नेपाल के तिरुपति से लेकर भारत के विभिन्न राज्यों (झारखंड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, आदि) को जोड़ कर एक लाल गलियारे (रेड कॉरिडोर) का निर्माण करता हैं। जो भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती माना गया।

जम्मू-कश्मीर में अलगाववाद की जब हम बात करते हैं तो पाकिस्तान द्वारा भारत पर चार बार आक्रमण किया गया जिसमें उसने चारों युद्धों में मुंह की खाई। जिसके पश्चात जम्मू एवं कश्मीर की प्राप्ति हेतु भारत के विरुद्ध छद्म युद्ध आरंभ कर दिया गया; जहां वह सीमा पर अस्थिरता बनाए रखने के साथ ही आतंकवादियों एवं अलगाववादयों को वित्त पोषित करने के साथ-साथ प्रशिक्षण तथा हथियार उपलब्ध करवाता है। जिससे जम्मू एवं कश्मीर में अलगाववाद को बढ़ावा मिले। क्योंकि पाकिस्तान नहीं चाहता कि भारत आंतरिक रूप से स्थिर हो एवं विकास की राह पर आगे बढ़े। पूर्वोत्तर भारत में भी अलगाववाद जैसी स्थिति बनी रहती है पूर्वोत्तर में भारत को तोड़ने के लिए भाषावाद, क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकतावाद जैसे आंदोलन निरंतर प्रयास करते रहते हैं । ऐसी और अनेक भारत विरोधी ताकतें हैं जो भारत के लिए आय दिन नई चुनौतियां पैदा करती रहती हैं जिससे भारत की सुरक्षा खतरे में रहती हैं।

भारत की इन सभी बाह्य और आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का संक्षेप में उल्लेख ऊपर इसलिए किया गया है जिससे भारत के प्रत्येक विद्यार्थी और नागरिक को इन सभी चुनौतियों के बारे में पता हो और भारतीय जनता सेना के साथ इन चुनौतियों का सामना करने में सहयोग प्रदान कर सके। यह तभी संभव हो सकता है जब रक्षा अध्ययन विषय का अध्ययन अनिवार्य रूप से सभी स्कूल और कॉलेजों में कराया जाए। इस विषय में हम केवल सुरक्षा से संबंधित समस्याओं का ही अध्ययन नहीं करते हैं। प्रो. के. एन. श्रीवास्तव ने कहा है कि, **"इस अध्ययन के अंतर्गत राजनीति, आर्थिक, नैतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संगठनों, साधनों एवं शैलियो का अध्ययन सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त युद्ध की विचारधारायें, उनका विकास, युद्ध कला एवं युद्ध इतिहास का भी पूर्णतः** समावेश है। **अतः सैन्य विज्ञान** समाज **का वह** अंग है जिसके अंतर्गत उपयुक्त सभी तत्वों का अध्ययन किया जाता है।" केवल इतना ही नहीं हम रक्षा अध्ययन विषय के अंतर्गत लगभग 19 विषयों का अध्ययन एक साथ कर लेते हैं जैसे- अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान, तकनीकी आदि ऐसे अनेक विषयों का अध्ययन किया जाता है। इन सभी विषयों का रक्षा के क्षेत्र में काफी गहरा संबंध है। किसी एक विषय के अभाव में रक्षा अध्ययन विषय अधूरा है क्योंकि रक्षानीति का सम्बंध केवल सैनिक और परमाणु शक्ति से ही नहीं बल्कि आर्थिक शक्ति से भी है और जब हम सुरक्षा की

बात करते हैं तो रॉबर्ट मैकनमारा के इस कथन, "सुरक्षा का अर्थ है विकास, सैनिक साज-सामान की प्राप्ति नहीं, क्योंकि विकास के बिना कोई सुरक्षा सम्भव नहीं है ।" की अनदेखी नहीं की जा सकती। प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र की शक्ति का ज्ञान होना चाहिए और युद्धकला की नई विचारधाराओं से भी परिचित होना चाहिए। रक्षा अध्ययन द्वारा नागरिकों को सैन्य शक्ति से परिचित कराना, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अस्मिता के प्रति भाव उत्पन्न कराना, नागरिकों में देश की सुरक्षा के प्रति भाव उत्पन्न कराना, मातृभूमि की रक्षा के लिए लोगों में समर्पण की भावना उत्पन्न कराना, सैन्य इतिहास से परिचित कराना, आपात परिस्थितियों में सैन्य शक्ति के योगदान से परिचित कराना, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में रक्षा अध्ययन की व्यापकता का बोध कराना, राष्ट्र की शक्ति, राष्ट्रीय गौरव और गरिमा का बोध कराना, राष्ट्रीय सुरक्षा नीति निर्धारण प्रक्रिया से बोध कराना, सेनाओं के वर्गीकरण एवं संगठन से परिचित कराना, राजनीतिक एवं सैन्य शिक्षाओं का ज्ञान करना, देश प्रेम की भावना कराना, अनुशासन और कर्तव्यों के प्रति जागरूक कराना, नेतृत्व का भाव जागृत कराना तथा नागरिकों में मनोबल उत्पन्न कराना आदि ऐसे कारण है जो केवल रक्षा अध्ययन द्वारा ही संभव है।

इन सभी चुनौतियों और समस्याओं के साथ हमनें जाना की रक्षा अध्ययन विषय का क्या महत्व है और क्यों भारत में इस विषय को अनिवार्य रूप से लागू कराने की अवश्यकता है। अत: भारत के प्रत्येक विद्यार्थी और नागरिक को रक्षा एवं सामरीकी अध्ययन विषय का ज्ञान होना आवश्यक हो जाता है क्योंकि राष्ट्र की सुरक्षा और अखंडता के लिए यह आवश्यक है कि देश के प्रत्येक नागरिक को रक्षा से संबंधित सभी पहलूओ का ज्ञान हो। यह तभी संभव हो सकता है जब इस विषय को स्नातक और परास्नातक के साथ-साथ जूनियर तथा माध्यमिक स्कूली पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से लागू किया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. युद्ध का अवधारणात्मक अध्ययनरू डॉ० बी. पी. सिंह, डॉ० राहुल कुमार एवं डॉ० अमित कुमार
2. राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा डॉ० बी. पी. सिंह
3. आंतरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन: दृष्टि आईएएस

नितिन शर्मा

ज्ञान की कोई सीमा नहीं है हमेशा सीखते रहना चाहिए

किसी गांव में एक कारीगर रहता था। जिसका एक लड़का था। कारीगर अपनी छोटी सी छोपड़ी में टोकरी बनाता था जिन्हे वह 20-20 रूपये में बेचा करता था। जब कारीगर बूढ़ा हो चुका था। उसने सोचा कि मैं अपने बेटे को यह टोकरी बनाने का काम सिखाता हूँ लड़के से कहा कि तुम उसे सीख लो मैने तुम्हारे दादा जी से सीखा है ये हमारी पीढ़ियों से चला आ रहा काम है।

अच्छा काम है लड़का भी मान गया टोकरी बानने का काम सीखने को। पिताजी ने लड़का को टोकरी बनानी सिखायी और उसे बाजार में बेचकर आने को कहा। लड़का टोकरी को लेकर बाजार गया। और बेचकर आया ही था। पिताजी ने पूछा कि उदास क्यों हो। लड़का बोला कि मेरी बनाई हुई टोकरी केवल दस रूपये में ही बिकी। पिताजी ने कहा चलो कोई बात नहीं आज तुम्हे और अच्छा टोकरा बनाना सिखाता हूँ।

पिताजी ने और अच्छी टोकरी बनाना सिखाई और उसे बाजार में बेचने को कहा। लड़का टोकरी को पन्द्रह रूपये में बेचकर आया। लड़का अब भी उदास था। पिताजी ने फिर उदासी का कारण पूछा तो लड़के ने कहा कि टोकरी केवल पन्द्रह रूपये में ही बिकी। पिताजी ने कहा कोई बात नहीं धीरे धीरे तुम्हारी बनाई हुई टोकरी अच्छे दामों में बिकने लगेगी तुम अच्छे से टोकरी बनाना सिखते रहो। पिताजी ने और अधिक अच्छी टोकरी सिखाई और बनाकर बेचने को कहा। लड़का बाजार गया और उस दिन उसकी टोकरी 30 रूपये में बिक गई। लड़का बहुत खुश हुआ। पिताजी ने पूछा कि आज कितने रूपये की टोकरी बेची। लड़के ने कहा आज मेरी बनाई टोकरी 30 रूपये की बिकी है पिताजी ने यह सब सुनकर लड़के से कहा बहुत अच्छा है। चलो आज तुम्हे ऐसी टोकरी सिखाऊगा जो 40 रूपये में बिक सके। लड़के ने कहा बस पिताजी आप खुद 20 रूपये की टोकरी बेचते आये हो मुझे 40 की टोकरी बनाना कैसे सिखाओगे। आप रहने दो आपसे ज्यादा रूपये की टोकरी तो मैं बनाना जानता हूँ। इतना सुनकर पिताजी ने कहा ऐसा ही कुछ मैने भी कहा था। जब मेरे पिताजी खुद 15 रूपये की टोकरी बेचते थे और एक दिन मेरी टोकरी 20 रूपये में बिक गयी। मेरे पिताजी ने मुझे 25 रूपये की टोकरी सिखाने को कहा था। तो मैने भी सिखने के लिए मना कर दिया था। और कहा था कि आप खुद 15 की बेचते आये है। आपसे ज्यादा की तो में बेचकर अया हूँ। और तब से जीवन भर बीस रूपये की ही टोकरी बेचता रह क्योंकि उससे ज्यादा की टोकरी में सीख ही नहीं पाया।

ये कहानी हमें सिखाती है। कि हमे थोड़ा सा सीखने पर यह घमंड नहीं होना चाहिए की अब में सब कुछ जानता हूँ। क्योंकि ऐसा हो सकता है। कि हर कोई कुछ ना कुछ आपसे अधिक जानता हो। हमे हमेशा कुछ ना कुछ सीखते रहना चाहिए।

मुस्कान गर्ग
बी.ए. द्वितीय वर्ष

नमस्कार सर! मुझे पहचाना?

"कौन"
"सर, मै आपका विद्यार्थी। 40 साल पहले का आपका विद्यार्थी।"

"ओह! अच्छा! आजकल ठीक से दिखता नहीं बेटा ओर याददाशत भी कमज़ोर हो गयी है। इसलिए नहीं पहचान पाया। खैर। आओ, बैठो। क्या करते हो आजकल ?" उन्होंने उसे प्यार से बैठाया और पीठ पर हाथ फेरते हुए पूछा।
"सर, मै भी आपकी ही तरह शिक्षक बन गया हूँ।"
"वाह! यह तो अच्छी बात है लेकिन शिक्षक की पगार तो बहुत कम होती है फिर तुम कैसे.... ?"
"सर! जब में कक्षा सातवीं में था तब हमारी कक्षा में एक घटना घटी थी। उसमें से आपने मुझे बचाया था। मैंने तभी शिक्षक बनने का निर्णय ले दिया था। वो घटना मैं आपको याद दिलाता हूँ। आपको मैं भी यदा आ जाऊँगा।"
"अच्छा! क्या हुआ था तब बेटा, मुझे ठीक से कुछ याद नहीं..... ?"
"सर, सातवीं में हमारी कक्षा में एक बहुम अमीर लड़का पढ़ता था। जबकि हम बाकी सब बहुत गरीब थे। एक दिन वह बहुत महंगी घड़ी पहनकर आया था और उसकी घड़ी चोरी हो गयी थी। कुछ याद आया सर ?"
"सातवी कक्षा ?"
"हाँ सर! उस दिन मेरा मन उस घड़ी पर आ गया था और खेल के पीरियड में जब उसने वह घड़ी अपने पेंसिल बॉक्स में रखी तो मैंने मौका देखकर वह घड़ी चुरा ली थी। उसके ठीक बाद आपका पीरियड था। उस लड़के ने आपके पास घड़ी चोरी होने की शिकायत की और बहुत जोर जोर से रोने लगा। आपने कहा कि जिसने भी वह घड़ी चुराई है उसे वापस कर दो। मैं उसे सजा नहीं दूँगा। लेकिन डर के मारे मेरी हिम्मत ही न हुई घड़ी वापस करने की।"
"उसके बाद फिर आपने कमरे का दरवाजा बंद किया और हम सबको एक लाइन से आँखें बंद कर खड़े होने को कहा और यह भी कहा कि आप सबकी जेब और झोला देखेंगे लेकिन जब तक घड़ी मिल नहीं जाती तब तक कोई भी अपनी आँखें नहीं खोलेगा वरना उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा और ऊपर से जबरदस्त मार पड़ेगी वो अलग... ।"
"हम सब आँखें बन्द कर खड़े हो गए। आप एक-एक कर सबकी जेब देख रहे थे। जब आप मेरे पास आये तो मेरी धड़कन तेज होने लगी। मेरी चोरी पकड़ी जानी थी। अब जिंदगी भर के लिए मेरे ऊपर चोर का ठप्पा लगने वाला था। मैं ग्लानि से भर उठा था। उसी समय जान देने का निश्चय कर लिया था लेकिन.....लेकिन मेरी जेब में घड़ी मिलने के बाद भी आप लाइन के अंत तक सबकी जेबें देखते रहे और घड़ी उसे लड़के को वापस देते हुए कहा, "अब ऐसी घड़ी पहनकर स्कूल नहीं आना जिसने भी यह चोरी की थी वह दोबारा ऐसा काम न करें। इतना कहकर आप फिर हमेशा की तरह पढ़ाने लगे थे" ये कहते कहते आँख भर आई।
वह रूंधे गले से बोला, "आपने उस समय मुझे सबके सामने शर्मिंदा होने से बचा लिया था सर। आगे भी कभी किसी पर भी आपने मेरा चोर होना जाहिर न होने दिया। आपने कभी मेरे साथ भेदभाव नहीं किया। उसी दिन मैंने तय कर लिया था कि मैं आपके जैसा एक आदर्श शिक्षक ही बनूँगा।"
"हाँ हाँ...मुझे याद आया।" उनकी आँखों में चमक आ गयी। फिर चकित हो बोले, "लेकिन बेटा... मैं. आजतक नहीं जानता था कि वह चोरी किसने की थी क्योंकि.... जब मैं तुम सबकी जेब देख रहा था तब मैंने भी अपनी आँखें बंद कर ली थी।"

गुरूर्ब्रह्मा गुरूविष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः!
गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः!!

आलोक कुमार तिवारी
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष

ध्येय वाक्य - एकता और अनुशासन

जैसा कि नाम से ही पता चलता है राष्ट्रीय कैडेट कोर में एकता और अनुशासन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

NCC अर्थात् राष्ट्रीय कैडेट कोर की स्थापना 16 अप्रैल 1948 को हुई थी। NCC की स्थापना करने वाले महान व्यक्ति H.N. कुजंरू है।

NCC का उद्देश्य युवाओं में चरित्र निर्माण, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण साहस की भावना तथा स्वयं सेवी के आदर्शो को विकसित करना है। इसके अलावा इसका उद्देश्य जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व गुणों के साथ संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं का पुल बनाना है। जो राष्ट्र की सेवा करेंगे चाहे वे किसी भी कैरियर को चुने।

NCC राष्ट्र में, युवाओं को सशस्त्र वलो शामिल होने के लिए प्रेरित करता है। तथा अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। NCC ने देशभक्ति, नैतिकता और सामरिकी सेवा को एक मजबूत आधार पर खड़ा किया है। NCC में प्रत्येक युवा सीखता है कि विभिन्न सामूहित परियोजनाओं में सहयोग करने का और जवानो की समर्पितता का क्या महत्व है।

NCC की प्रशिक्षण में युवा शक्ति न सिर्फ शारीरिक रूप से मजबूत होते है, बल्कि उन्हे सामूहिक और व्यक्तिगत विकास के लिए समर्पित किया जाता है।

नैतिक मूल्यों, योजना बनाने की क्षमता और अनुशासन के माध्यम से NCC न बस एक सेना संगठन है बल्कि एक नेतृत्व अकादमी भी है।

इस संगठन में शामिल होकर युवा अपनी सीमाओ को पार करता है। और नए होसले पैदा करता है। यहाँ उसको विभिन्न सैन्याग की तैयारी, नैतिक उन्नति और राष्ट्र के लिए सेवा करने का अद्वितीय अवसर मिलता है।

एक NCC कैडेट सिर्फ एक सेना सामरिक नहीं बन जाता , बल्कि एक सजग उदार और समर्पित नागरिक भी बनता है।

समर्पण साहस और सेना का यह संगठन युवा शक्ति को स्वतंत्र उधमी और सामरिकता के साथ सजीव बनाता है। जिससे कैडेट निरन्तर विकास और समृद्धि की ओर कदम बढ़ाता है।

NCC के नियम-

1. हमेशा मुस्कान के साथ आज्ञा का पालन कीजिए।
2. समय बहुत कीमती है, समय का खयाल रखे और पाबन्द रहें।
3. बिना किसी गड़बड़ के कठिन परिश्रम करे।
4. किसी भी परिस्थिति में झूठ मत बोलिए और बहाने मत बनाइए।

कैडेट अजिता मिश्रा
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत का नया गीत

आओ बच्चो तुम्हें दिखायें, शैतानी शैतान की।
नेताओं से बहुत दुखी है, जनता हिन्दुस्तान की॥
बड़े-बड़े नेता शामिल है, घोटालों की थाली में।
सुटकेश भर के चलते हैं,
अपने यहाँ दलाली में॥
देशधर्म की नहीं है चिन्ता, चिन्ता निज सन्तान की।
नेताओं से बहुत दुखी है, जनता हिन्दुस्तान की॥

चोर-लुटेरे भी अब देखो, सांसद और विधायक है।
सुरा-सुन्दरी के प्रेमी ये, सचमुच के खलनायक है॥
भिखमंगो में गिनती कर दी, भारत देश महान की।
नेताओं से बहुत दुखी हैं, जनता हिन्दुस्तान की॥

जनता के आंवटित धन को, आधा मंत्री खाते हैं।
बाकी में अफसर ठेकेदार, मिलकर मौज उड़ाते हैं॥
लूट खसोंट मचा रखी है, सरकारी अनुदान की।
नेताओं से बहुत दुखी है, जनता हिन्दुस्तान की॥

थर्ड क्लास अफसर बन जाता, फस्ट क्लास चपरासी।
होशियार बच्चों के मन में, छायी आज उदासी है॥
गंवार सारे मंत्री बन गये, मेधावी आज खलासी है।
आओ बच्चो तुम्हे दिखाये, शैतानी शैतान की।
नेताओं से बहुत दुखी है, जनता हिन्दुस्तान की॥

शिखा चौहान
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

मुस्कान

मुस्कान की कोई कीमत नहीं होती, मगर यह बहुत कुछ रचती है यह पाने वाले को खुशहाल करती है, देने वाले का कुछ घटता नहीं यह क्षणिक होती है लेकिन यह यादों में सदा के लिए रह सकती है।

कोई इतना अमीर नहीं कि इसके बगैर काम चला ले,
और कोई इतना गरीब नहीं कि इसके फायदों को न पा सके
यह घर में खुशहाली लाती है, व्यापार में ख्याति बढ़ाती है, और
यह दोस्तों की पहचान है।

यह थके हुओं के लिए आराम है, निराश लोगों के लिए
रोशनी, उदास के लिए सुनहरी धूप, और हर मुश्किल के लिए
कुदरत की सबसे अच्छी दवा।

तब भी न तो यह भीख में, न खरीदने से,
न उधार माँगने से, और न चुराने से मिलती है,
क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जो तब तक किसी
काम की नहीं जब तक आप इसे किसी को दे न दें।

दिनभर की भागदौड़ में कुछ परिचित हो सकते हैं
कि इतने थके हो कि मुस्करा न सकें।
तो उन्हें अपनी ही मुस्कान दीजिए।
किसी को मुस्कान की उतनी जरूरत नहीं होती,
जितनी की उसे
जो खुद किसी को अपनी मुस्कान न दे सकें।

कु0 प्रज्ञा
बी.ए. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

हमारे बहादुर सैनिक - अभिनंदन वर्धमान

अभिनंदन वर्धमान का जन्म जून 1983 में एक तमिल जैन परिवार में हुआ। काचीपुरम के पास स्थित गांव थिरूपनामूर में वे पैदा हुए। उनकी माँ डॉक्टर है, जबकि पिता भी वायुसेना एयर मार्शल से रिटायर्ड हुए। 19 जून 2004 को भारतीय वायुसेना में उनका कमीशनिंग हुई और वे फलाइंग ऑफिसर बनाए गए।

भारतीय वायु सेना में ग्रुप कैप्टन अभिनंदन वर्धमान एक बहुत ही बहादुर पायलट है। वह आसमान में पाकिस्तान के एक विमान से भिड़ गए और उसे मार गिराया। लेकिन तभी उनका अपना विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उन्हें 60 घंटे तक पाकिस्तान में रहना पड़ा इस लड़ाई में उनकी वीरता कें लिए भारत सरकार ने उन्हें एक विशेष पदक दिया जिसे वीर चक्र कहा जाता है।

पाकिस्तान में विडियो और तस्वीरें जारी की जिसमें वर्धमान को उसके सैनिको द्वारा ग्रामीणों की हिंसक भीड़ से बचाया गया, प्राथमिक उपचार दिया गया और आंखो पर पट्टी बांधकर पूछताछ की गई।

वर्धमान को बाद में पाकिस्तान ने मानवीय आधार पर रिहा कर दिया और 1 मार्च 2019 को भारत लौट आए।

27 फरवरी 2019 को वर्धमान एक मिग-2 को सॉर्टी के हिस्से के रूप में उड़ा रहा था। पाकिस्तानी वायु सेना द्वारा जम्मू और कश्मीर में हवाई हमले को रोकने के लिए हाथापाई की गई थी। डॉगफाइट के दौरान उनका IAF कमांड में पाकिस्तान हवाई क्षेत्र में चले गए, जिसके दौरान उनके विमान पर एक मिसाइल से हमला किया गया।

वर्धमान को बाहर निकाला गया और वह सुरक्षित रूप से पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के होरान गांव में उतर गए जो नियंत्रण रेखा है।

वर्तमान की मूंछों की शैली भारत में लोकप्रिय हो गई है और इसे व्यापक रूप से "अभिनंदन कट" कहा जाता है। या "वर्धमान शैली।" अभिनेता रणवीर सिंह 39 के नाई, दर्शन येवलेकर न कहा है कि "भारतीय वायुसेना के पायलट द्वारा रखी गई। दाढ़ी को जल्द ही भारत की अपनी वर्धमान शैली कहा जाएगा।

यह शैली गन्सलिंगर मूंछो और मटन चाप के संयोजन के समान है ऑस्ट्रिया के फ्रांज जोसेफ प्रामि द्वारा पहना गया। यह सूर्या सिंघम फिल्म सीरीज में अभिनेता सूर्या द्वारा पहनी गई मूंछो से मिलती जुलती है। और रजनीकांत की मूंछे पेट्टा।

खुशी शर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

ख्वाबों की जिंदगी

कभी जो देखता था हवाओं मे,
मैं आज धरती सा दब गया हूँ।
किसी की इच्छाओं के लिए मैं,
अपनी इच्छाओं को कोसता हूँ।
कैसे करू वो ख्वाब पूरे,
जिनके लिए जी रहा हूँ।
लोगों ने बता दी जो इच्छा,
उनको तो कर दूँगा पूरा,
पर क्या उन इच्छाओं के बल पर,
मैं प्रसन्न रहूँगा पूरा।
क्यों हम नहीं कर सकते वो कुछ
जो रत्ती भर इंसान करते,
सरकार का नौकर बनने से अच्छा,
वो खुद में ही सरकार बनते।
मैं हूँ आज अकेला भले ही
पर हुनर मेरा साथ आज भी देता,
मैं हुनर के साथ रहकर,
कर दूँगा वो ख्वाब पूरे-2,
जो रत्ती भी इंसान करते -2।

हर्षित पालीवाल
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

मातृ भूमि

मातृ भूमि की रक्षा करना।
इसके ही हित जीना मरना॥
मेहनत करके खाना भाई।
कभी न करना मित्र लड़ाई॥

सबसे मेल-जोल से रहना।
मुख से कभी कछु ना कहना॥
सुख में दुख में हाथ बटाना।
सबको अपना मित्र बनाना॥

कोई गलत काम न करना।
सत्य न्याय पर सदा विचरना॥
मातृ भूमि की शान न जाये।
ऐसी राहों को अपनायें॥

"जय हिन्द"

आर्यन रस्तोगी
बी.कॉम प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

हंसना जरूरी है जीवन में

1. **टीटू (अपने दोस्ते से)** - मैं सुबह जल्दी उठकर रोज घूमने जाता हूँ।

   दोस्त - पर मैं सुबह उठकर कभी घूमने नहीं जाता।

   टीटू - अच्छा क्यों ?

   दोस्त - जब धरती स्वयं घूम रही है तो फिर मैं क्यों कष्ट करूं ?

2. **पिंटू** - डॉक्टर साहब क्या आप मेरी बीमारी का पता लगा सकते हो ?

   डॉक्टर - हाँ आप की आँखे बहुत कमजोर हैं।

   पिंटू - इतनी जल्दी आप को कैसे पता चलगया ?

   डॉक्टर - तुमने बाहर बोर्ड पर नहीं पढ़ा कि मैं जानवरों का डॉक्टर हूँ

3 **टीचर** - संजू यमुना नदी कहाँ बहती हैं ?

   संजू - जमीन पर

   टीचर - नक्शे में बताओ कहाँ बहती हैं ?

   संजू - नक्शे में कैसे बह सकती है नक्शा गल नहीं जाएगा।

4 **चोर ने** - एक आदमी को बाजार में घेर लिया ।

   आदमी - मुझे घर जाने दो।

   चोर - तेरी जेब में जितना भी पैसा है सब निकाल के दे दे।

   आदमी - भाईसाहब जेब तो खाली है कहो तो Paytm कर दू।

मीनाक्षी चौहान
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

पेड़ है तो जीवन है

धरती की बस यही पुकार,
पेड़ लगाओ बारम्बार।
आओ मिलकर कसम खाएँ,
अपनी धरती हरित बनाए।
धरती पर हरियाली हो,
जीवन में खुशहाली हो।
पेड़ धरती की शान है,
जीवन की मुस्कान है।
पेड़ पौधों को पानी दे,
जीवन की यही निशानी दे।
आओ पेड़ लगाए हम,
पेड़ लगाकर जग महकाकर।
जीवन सुखी बनाए हम,
आओ पेड़ लगाए हम।

साक्षी चौहान
एम.कॉम प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

सूरज

रोज सुबह को सूरज आकर
सबको सदा जगाता है।
शाम हुई लाली फैलाकर,
अपने घर को जाता है।
दिनभर खुद को जल जलाकर,
यह प्रकाश फैलाता है।
उसका जीना ही जीना है,
जो काम सभी के आता है।
जो काम सभी के आता है।

सुविचार

"बेटी को चाँद जैसा मत
बनाओ की हर कोई
घूर के देखे बेटी को
सूरज जैसा बनाओ ताकि
घूरने से पहले सबकी
नजर झुक जाये।"

कीर्ति
बी.कॉम तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

मित्र कैसा हो

व्यक्ति के जीवन में मित्र का स्थान एक शिक्षक की भांति होता है, जैसे शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा देते हैं जिससे वह सही व गलत के बीच फर्क देख सकें और अपने समाज व राष्ट्र का पुन: निर्माण कर सकें/ ठीक उसी प्रकार यदि व्यक्ति अच्छे लोगों से मित्रता करता है तो उसके मित्र उसे सही शिक्षा देंगे व अच्छी सोच रखकर किसी कार्य को करने की प्रेरणा भी देंगे।

अच्छे शिक्षक कभी भी किसी भी हालत में अपने विद्यार्थियों का साथ नहीं छोड़ते जब तक विद्यार्थी अपने कार्य को करने में कुशल नहीं हो जाते/यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है, तो शिक्षक उसे स्कूल से नहीं निकालते हैं क्योंकि वे उसकी गलतियों को सुधारने की सलाह देते हैं और जब भी आवश्यक होता है वे अपने विद्यार्थी की गलती को सुधारने में भी मद्द करते हैं। इसी प्रकार एक अच्छा मित्र अपने मित्र को कभी भी अकेला नहीं छोड़ता, परिस्थिति चाहे जो भी हो वह हमेशा अपने मित्र के साथ खड़ा होता है और यदि उसका मित्र कोई गलती करे तो वह उस गलती को सुधारने में मद्द करता है।

नोट:- यदि आप चाहते हैं कि आपका मित्र आपके साथ हमेशा रहे और आपका हर मुश्किल में साथ दे, तो आपको भी अपने मित्र के साथ वैसा ही होना चाहिए। याद रखिये मित्रता में कभी भी झूठ का सहारा न लें, क्योंकि एक सच को छिपाने के लिए आप सिर्फ एक झूठ बोलोगे लेकिन उस एक झूठ का छिपाने के लिए आपको हजार झूठ बोलने पड़ेंगे और मित्रता ना रह कर झूठ का पिटारा हो जाएगी जिसमें सिर्फ विषैले सर्प होंगे मित्र नहीं।

रोहित सागर
एम.कॉम. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

मंगलाचरण

वागर्थविव संम्पृक्तौ वाग्र्थ प्रतिफ्तये।
ज्ञगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥

सार्थक जीवन

प्रायः व्यक्ति में गुण और अवगुण दोनो का समावेश होता है। हमारा चिंतन सदैव गुणों की ओर, सकारात्यकता की और, अच्छाई की और होना चाहिए। इसमें हमें वास्तविक शांति और प्रसन्नता का अनुभव होगा। निराशावादी और नकारात्यक, एवं अवगुणों से भरे मनुष्य अपने चारो ओर दोष का दर्शन करते है। वे अपने जीवन में शांति और प्रसंता का अनुभव कभी नहीं कर पाते। एक हि परिस्थिती और घटना को दो व्यक्ति भिन्न-2 प्रकार से ग्रहण करते है, लेनि जिनका चिंतन सकारात्मक होता है, वह दुख को सुख, अभाव को भाव, अशांति को शांत और अंधकार को प्रकाश में बदलने में सफल हो सकते है। जो इस तरह की कला जानते है, उन्ही का जीवन सार्थक है, वे ही सच्चे मानव हैं।

प्रत्येक व्यक्ति शांति के साथ जीना चाहता है। अशांत जीवन कोई नहीं जीना चाहता। प्रश्न है कि हम किसे शांति माने और किसे अशांति सदा अनुकूल परिस्थिति का निर्माण हो, सदैव ऐस नहीं होता। प्रतिकूल परिस्थितिया भी बनती रहती है। स्थायी शांति तो वहाँ है, जहाँ अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की स्थिति आने पर भी मनुष्य का मन क्षुब्ध नहीं होता। मनचाहा हुआ तब थी शांति मन का नहीं हुआ तब भी शांति। जब यह वृत्ति बनती है, तब ही शांति का अर्थ समझ मे आ सकता है। हालांकि हर एक व्यक्ति में सामर्थ्य नहीं है। जब तक सुख और दु:ख में समता और संतुलन का विकास करने की क्षमता विकसित नही होती, तब तक व्यक्ति दु:ख को सुख में बदलने की कला से सुसज्यित नहीं हो सकता।

सुख से प्यार और दु:ख से घृणा की मनोवृत्ति ने ही मनुष्य को इतना अधिक विरोधाभासी जीवन दिया है। जब मन में शांति के फूल खिलते है तो काँटो में भी फूलो का दर्शन होता है। जब मन में अंशांति के काँटे होते है तो फूलो में भी चुभन और पीड़ा का अनुभव होता है। यह सब दृष्टिकोण का फर्क होता है। सही दृष्टिकोण विकसित करने के लिए हमें अपनी दृष्टि बदलनी पड़ती है।

नीतू
बी.ए. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

भारतीय शिक्षा प्रणाली की वर्तमान स्थिति

भारत पूरी दुनिया में शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में लगभग 1.5 मिलियन स्कूल हैं जिनमें 260 मिलियन छात्र नामांकित हैं। इसके अलावा, देश में 751 विश्वविद्यालयों के अंतर्गत लगभग 35,539 कॉलेज हैं। इसलिए यह आसानी से कहा जा सकता है कि शिक्षा का सबसे बड़ा और सबसे उन्नत ढाँचा भारत में मौजूद है। हालाँकि, भारतीय शिक्षा ढाँचे में सुधार की बहुत संभावना है। यह कहा जा सकता है कि आने वाले वर्षों में भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार हो सकता है। प्रशिक्षण और शिक्षा क्षेत्र में अतीत में कुछ महत्वपूर्ण सुधार देखे गये हैं।

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समस्या

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित समस्याओं को रेखांकित किया है:

- क्षमता उपयोग: वर्तमान समय में रचनात्मक दिमाग की बहुत आवश्यकता है। इसलिए, भारत सरकार को स्कूलों को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि वे छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा दें और यह सुनिश्चित करें कि छात्रों के विचारों को अनसुना न किया जाए।
- ब्रांडिंग और मान्यता: गुणवत्ता मानक।
- पीपीपी मॉडल: उचित रूप से डिजाइन किया गया पीपीपी मॉडल स्कूल प्रणाली के भीतर शिक्षा को सुविधाजनक बना सकता है। इन पीपीपी मॉडल या निजी सार्वजनिक मॉडल को ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- शिक्षक-छात्र अनुपात: यह देखा जा सकता है कि उचित शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या उपलब्ध शिक्षकों और संकायों की तुलना में बहुत अधिक है। इसलिए, उचित रूप से योग्य शिक्षकों को नियुक्त करने की आवश्यकता है ताकि वे देश की बेहतरी के लिए ज्ञान प्रदान कर सकें।

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याओं का समाधान

भारतीय शिक्षा प्रणाली में पहचानी गई समस्या के कुछ समाधान निम्नलिखित रूप में रेखांकित किये हैं:

- शैक्षिक गुणवत्ता: शहरी क्षेत्रों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा में बहुत अंतर है। पूरे भारत में शिक्षा के समग्र विकास के लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का एक मानकीकृत रूप प्रदान करने के लिए उचित कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।
- नवाचारों की आवश्यकता: वर्तमान में भारत डिजिटल शिक्षा को अपना रहा है। इससे छात्रों के नवोन्मेषी दिमाग के साथ-साथ देश के युवाओं के दिमाग को भी बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।
- सभी के लिए शिक्षा को किफायती बनाना: भारत में सरकारी शिक्षण संस्थान किफायती हैं। हालाँकि, उनमें गुणवत्ता और बुनियादी ढाँचे की कमी है। सरकार को शिक्षण संस्थानों के बुनियादी ढाँचे को बेहतर बनाने के साथ-साथ उन्हें सभी प्रकार के छात्रों के लिए किफायती बनाने की दिशा में काम करना चाहिए।

अंत में यह समग्र लेख भारत में शिक्षा की वर्तमान स्थिति के मूल विषय पर अपनी स्थिति दर्शाता है। इसका विश्लेषण करने के लिए सबसे पहले भारत में शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की गई है। इसके बाद, भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मौजूद समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। तत्पश्चात इन समस्याओं को पहचान कर उन समस्याओं के लिए कुछ समाधान रखने का प्रयास किया गया हैं।

मोनू शर्मा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

अनुशासन

Dear discipline .....
पहले तुम बन जाते हो
ना पालन करने पर हमारी बैंड बजाते हो।
तुमको जो पा जाता है,
जग में प्रसिद्ध हो जाता है।
हो जाए अगर कोई गलती हमसे,
तो हमको सजा दिलाते हो।
झूठ का मार्ग छोड़
सच की ओर ले जाते हो।
प्रसिद्धि हासिल हमको कराके,
मान हमारा बढ़ाते हो।
हमें अनुशासन का असली महत्व तुम,
शिक्षको व बड़ो के द्वारा समझाते हो।
तुमको हासिल करने वाला,
जग में नाम बना जाता है।
अनुशासन ही सर्वश्रेष्ठ है,
इसको ना तोड़ो तुम।
अनुशासन का पालन करने वाला,
कामयाबी हासिल कर जाता है।
आज कहते हैं उस अनुशासन को,
बड़ा-सा Thankuuuuuu.....
जिसने हमें इस काबिल बनाया।

खुशबू चौधरी
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

बचपन

जाने कहाँ गया वो बचपन,
जब हम बिना टेंशन के रहते थे
हँसना, खाना खेलना यही जिंदगी थी,
बचपन चला गया जिम्मेदारियों बढ़ गई।
है कुछ अधूँरी ख्वाहिशे,
जो सपना बनकर रह गई।
एक अलग ही जिंदगी थी,
बचपन की जिदंगी क्या जिदंगी थी।
बचपन निकलने के बाद समझ आया,
कि जन्नत थी वो जिंदगी।
जहाँ हर छोटी-से-छोटी चीज,
बड़ी-से-बड़ी खुशी दे जाती थी।
और जहाँ पैसे सिर्फ उतने ही काफी थे,
जिनसे दो टॉफी और कुछ खिलौने आ जाएँ।
बाल अवस्था सबसे न्यारी,
यही बनाती हमें संस्कारी।
बचपन खुशियों का खजाना था,
जहाँ चाहत चाँह को पाने की थी।
पर दिल खिलौनो का दिखाना था,
स्कूल की वो प्रेयर जो आज तक नहीं आई।
सच कहूँ तो मैं बचपन में दुबारा जाना चाहती हूँ।
जाने कहाँ गया वो बचपन.....

पूजा चौधरी
बी.कॉम द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

कैसी दुर्दशा हुई भगवन तेरे नामो की

राम चला रहे है हल खेतो में
सीता लगा रही पौध धानो की
लक्ष्मण कर रहे है कटिंग बालो की
हनुमान कर रहे है खेती बाँसो की
ये कहानी है कलयुग वालो की
कैसी दुर्दशा हुई भगवन तेरे नामो की।
शंकर पी रहे है दारू सूखी
पार्वती सो रही है महलो में भूखी
कार्तिक गलियो में घूमता है आवारा
गणेश घर पर बैठा है अभी कुँवारा
ये कहानी है कलयुग वालो की
कैसी दुर्दशा हुई भगवन तेरे नामो की।
राधा काढ़ रही है भैंसो की धार
जुआ खेलना है कृष्ण के जीवन का आधार
रूकमणी डाल रही है इंस्टा पर पोस्ट
सुदामा डरा रहे है सबको बनकर घोस्ट
ये कहानी है कलयुग वालो की
कैसी दुर्दशा हुई भगवन तेरे नामो की
दुर्गा बढ़ा रही है सोशल मीडिया पर फोलोअर
क्या लक्ष्मी माँगती रहेगी भीख फोरइवर
विष्णु फँसे है माया के जाल में
शिव पड़े है सड़क पर नशे के हाल में।
ये कहानी है कलयुग वालो की
कैसी दुर्दशा हुई भगवन तेरे नामो की।

नीतू सिंह
बी.ए.

चिंगारी

धधकती है, चिंगारी सुलगने के लिए
धधकती है, चिंगारी भड़कने के लिए
धधकती है, चिंगारी धमकने के लिए
धधकती है, चिंगारी कहरने के लिए
धधकती है, चिंगारी प्रलय के लिए
पर सहसा एक हवा का झोका
उसकी लौ को महकाने लगता है,
विस्मृत कर देता है उसके स्वपन को

भूला देता उसके ललाट पर बधें कफन को,
भूल जाता वह इष्ट को दिए वचन को
भूल जाता वह रक्षक अविस्मरणीय
पुण्य काल का, है अभिनय करना
उसे माँ के अद्‌भुत लाल का, और
चलने लगता चाल वह काभी, मुर्ख उत्कर्ष की
जो घिन तुम्हे लगी वह घिन मुझे भी लगी है,
माया ने पुन: एक बार मेरी साधना ठगी है,
किंतु तार अटका है, जो अंतर में रचा वसा है
जब भी बढ़ती कामना लड़ती मेरी साधना
विजय हार से ना होता सामना पर आकार
आस का मुझे थामना, मै पुन संगठित होने लगता हूँ।
है, कुटिलं चक्र तुम्हारा, कि साधु ही लगता बेचारा,
बड़े-बड़े सूरज भी लालिमा भूल जाते है
और मर्यादा के उपदेशक ही मर्यादा भूल जाते है,
पर गिरकर गर्त में अवतार ही निकलते है,
जहाँ ना जा सके सभला वह वीर ही संभलते है,
भूल सकता मैं नही मुझको बचानी सैंकड़ो लाज है,
भूल सकता मैं नहीं मुझमें दफन जो राज है।
भू सकता मैं नहीं, हम नही ढोंगी हम
योगियो में सरताज है,
मुझको बचानी है धरा, सर्वस्व बलिदान
की परम्परा, मै भूलुँगा नहीं बचन,
अपने दिए बचन को पर भूल ना
जाना राख पे मेरी अपने हाथो
सिले काफन को।

करन
बी.ए. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

सफलता की कुँजी

सफलता से तो ज्यादातर आप सभी वाकिफ होगें। आइए आज मैं आपको सफलता प्राप्ति की शुरूआत के महत्वपूर्ण अंग से मिलवाती हूँ। वह महत्वपूर्ण अंग 'क्यों' शब्द है। जब भी हम किसी चीज या व्यापार की शुरूआत करते है तो हमारा क्यों शब्द Clear होना चाहिए। कि हम वह कार्य क्यों कर रहे है। उदाहरण के रूप में मान लिजिए कि आपको यू०पी०एस०सी० Clear या Crack करना है या इसमें जो-जो विषय है वही क्यों पढ़ने है। अगर आपका क्यों Clear है तो आपको आपकी सफलता तक पहुचने से कोई नहीं रोक सकता। जय हिंद

बनना है तो बाज बन
कबूतर का शिकार तो हर कोई करता है,
आसमान में बाज की तरह उठना सीख ले
जमीन से बैठकर जमाना आसमान देखता है।

मुस्कान
बी.ए.सी. तृतीय वर्ष

छोटी सी कहानी बड़ी सीख

एक बार एक चोर ने कसम खाई के जिंदगी में मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा। परन्तु पेशे से वो चोर था। और आप सब जानते है की झूठ तो चोर का सबसे महत्त्वपूर्ण हथियार होता है। एक दिन वो अपनी तीन चार गधी पर समान के गट्ठर रखे हुए जा रहा था। रास्ते में पुलिस चेक पोस्ट पड़ी उसके पास एक रोगा आया ओर पूछा। कि तुम कौन हो और क्या करते हो। सामने से जवाब मिला मैं नसरूद्दीन हूँ और चोरी करता हूँ। दरोगा हैरान हो गया उसने सारे गट्ठर खुलबाए और चेक किया ज्यादा कुछ मिला। नहीं सिवाय कुछ लकड़ियाँ के। उसने नसरूद्दीन को जाने दिया। कुछ दिनो बाद नसरूद्दीन फिर वही चेक पोस्ट पार कर रहा था। फिर वही दरोगा मिला और पूछा अब भी चोरी करते हो क्या ? नसरूद्दीन ने कहा हाँ चोर हूँ तो चोरी ही करूँगा। दरोगा ने फिर से सारा समान खुलवाया ओर चेक किया और फिर से कुछ नहीं मिला। ये सिलसिला पूरे 20 सालो तक चलता रहा, वो दरोगा रिटायर हो गया लेकिन उसे यही एक बात खलती रही की चोर सामने से कुबूल किया के वो चोर है। फिर भी वो कुछ बरामद नहीं कर पाया चोरी साबित नही कर पाया। एक दिन नसरूद्दीन दरोगा जी को बाजार में मिल गया वो लपक के नसरूद्दीन के पास पहुँचा और खींच कर चाय की दुकान पर ले गया चाय ऑर्डर किया और बोला। मेरे माईड में ये सवाल रोज चुभता है के तुम आखिर चुराते क्या थे। अब तो में दरोगा भी नहीं रहा तुम्हारा कुछ बिगाड़ भी नही सकता, तो मेरी शांति के लिए मुझे बस एक बार बता दो की आखिर तुम चुराते क्या थे। सो बार मैने तुम्हारे गधों की और तुम्हारी तलाशी ली पर मिला कुछ भी न नहीं एसी कौन सी चीज तुम चुराकर चेक पोस्ट पार करते थे नसरूद्दीन ने चाय की एक चुस्की ली और बोला। अबे गधे में गधे चुराता था, दरोगा जी पूरी जिदंगी गधों पर लधी हुई गट्ठरी देखते रहे ये नहीं देख पाए की चोरी तो दरअसल गधे की हो रही है।

वर्षा
बी.ए. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

क्लोरीन की आत्मकथा

जीवन परिचय – मेरा शुभ नाम क्लोरीन है। मनुष्य मुझे छोटे नाम Cl_2 से भी जानते है। मेरा जन्म 1744 में हुआ था। मेरे पिता का नाम HC1 तथा माता का नाम Mno_2 है। केवल 13 वर्ष की अल्प आयु में मेरा विवाह calcium hydroxide से हो गया। तीन वर्ष बाद मैने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम bleaching powder रखा गया। वह बड़ा होकर होनहार सिद्ध हुआ उसने सभी प्रकार के कीटाणुओ का विनास किया जिसके कारण डॉक्टर भी इसका सम्मान करते है।

वेश भूषा – मुझे हरे-पीले रंग से अत्यंत प्रेम है यही कारण है। कि मै हमेशा हरे-पीले रंग की साड़ी पहने रखती हूँ। मेरा नाम क्लोरीन इसलिए पढ़ा कि ग्रीक भाषा में क्लोरस का अर्थ हरा-पीला है क्लोरस से क्लोरीन शब्द का निर्माण हुआ मेरी खूबसूरती पर हरे-पीले रंग की साड़ी चार चाँद लगा देती है। मेरे सौन्दर्य पर नवयुवक मुगध हो जाते है। मेरे शरीर की प्यारी सुगंध को सूंधकर नव युवक मेरे प्यार में झूमने लगते है। कभी-कभी तो झूमते-झूमते बेहोश हो जाते हैं।

उपयोग – जब मुझे कोई दवाता है। या ठण्डी करता है। तो मै द्रवित हो जाती हूँ। मेरे पिता है। यह ये बता चूकी हूँ। कि वह एक भयंकर पुरूष है जब ये $CaCo_3$ से मिलते है। तो वह सास छोड़ने लगता है। अत: गांव में मेरे पिताजी का बहुत सम्मान है।

स्वभाव – मै भाव से जहरीली हूँ। जब मैं अपने भाई H_2o से मिलती हूँ। तो मनुष्य मुझे क्लोरीन जल की संज्ञा दे देते है। मैं स्वभाव से चिड़चिड़ी भी हूँ। जब मे क्रोधित होती हूँ तो मुँह व गले पर वारे करती हूँ जो फूल आपने आप को अधिक सुन्दर मानते है। वे मेरे सौन्दर्य से डर कर रंगहीन हो जाते है।

कार्य – मै पानी को साफ करती हूँ। मुझसे सोना चाँदी साफ किया जाता है। मेरा काम कीटाणुओं से भयंकर युद्ध करके नष्ट करना है। अब मै क्या बताऊँ ? मै देश प्रेम के कारण अपने देश की लड़ाई मै भी काम करती हूँ। लड़ाई के समय मुझे स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है जिससे सभी सैनिक शान्त हो जाते है।

गौरव मीणा
बी.ए.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

जिंदगी

जिदंगी.....
आ बैठ...
जरा खुल के बात करते हैं
पुरानी सी सभी बातों का आजा हिसाब करते है... !
थक गई होगी बहुत तू भी
यहाँ दूर तक चलते-चलते
आ फुरसत से थोड़ा आ राम करते हैं... !
साथ तू भी नहीं होगी
कल... शायद मेरे
आ छुप कर की बाते तमाम करते हैं... !
संग तुझको भी नही
भाया है मेरा... शायद औरो की तरह
आ सभी शिकवों को मिटाकर थोड़ा बढ़ते है... !
मत पूछ जख्म कहाँ-कहाँ
कितने और क्यों दिये है तूने मुझे
आ कुछ प्यारी-सी सौगातो की बात करते है... !
कुछ लम्हे मैने भी चुराए थे
छुपाकर रखे थे तुझसे...
तेरी ही खातिर...
आज उनकी नहीं बाकि के सफर
की बात करते है... !

कुछ रिश्तों को जी भर कर
जीया था बस तेरी ही खातिर
अब वो नहीं है तो चल-चलने की बात करते है... !

छवि गोयल
बी.ए. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

मैं किताब हूँ

कभी किसी के मन की,
कभी अपने मन की बताती मैं।
बड़बोलना नहीं आता मुझे,
फिर भी सब बताती मैं।
कभी किसी को हँसाती हूँ,
कभी किसी को रूलाती हूँ,
कभी कभी दो शब्दो में,
दुनिया का सार बताती मैं।
कभी मेरे कुछ पन्नो से,
जीवन सफल बनाती मैं।
विद्यार्थी के भविष्य को,
उज्जवल बनाती मै।
कभी मेरे पन्नो की कहानी,
सबको अपना बनाती है।
अपने देश का गौरव मैं,
फिर भी मुझे अभिमान नहीं।
कभी किसी अलमारी से,
तुम्हे मैं पुकारती हूँ
फिर भी कम्प्यूटर के आगे,
तुम्हारी राते गुजरती क्यु ?
मेरे अन्दर कितनी भाषा,
ना जाने कितनी परिभाषा
दिखती में साधारण हूँ,
मैं किताब हूँ।

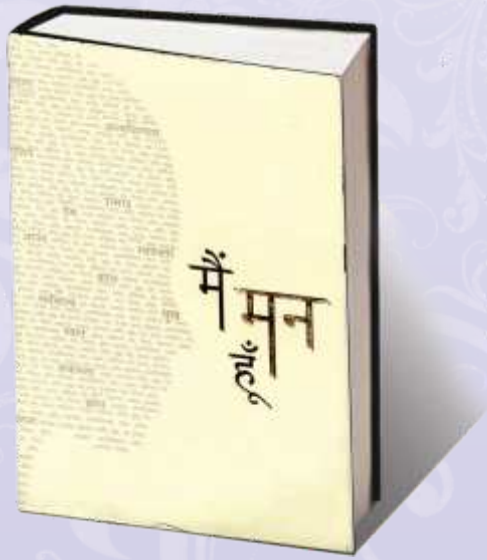

कृतिका शर्मा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

अब ना मैं रहा इंसान

अब ना मैं रहा इंसान, कैसी माया तेरी भगवान
जब पड़ा शरीर पर मेरे कफन
लोग देखकर रह गए मुझे दंग
जिन लोगों को पसंद न था मेरा चेहरा
उठाकर बार-बार देखने लगे कफन
ये कैसा संसार का अनुमान
अब ना मैं रहा इंसान, कैसी माया तेरी भगवान।

जब मैं मरा तो लोग मुझे मेरे नाम से न पुकारा
मिट्टी कहकर पुकाने लगे, कहर कहाँ पहुँच गई
मिट्टी, जानकर कहते मेरे सब सगे
चार दु:ख तो चार खुश, कैसे देखू मैं उनका मुख
ये जग की रीत का कैसा अपमान
अब ना मै रहा इंसान
कैसी माया तेरी भगवान

जो लोग मुझे लेटा देखकर
खेला था मै उनके संग हसँकर
रोकर बोलने लगे, खोल दो एक बार आँख
कैसे बताऊँ जा चुके है मेरे प्राण
अब ना मैं रहा इंसान
कैसी माया तेरी भगवान

जिनसे ना बनती थी मेरी
आकर वो मिट्टी पर मेरी
कहने लगे अच्छा था इंसान
कैसी माया तेरी भगवान
अब ना रहा मैं इंसान
कैसी माया तेरी भगवान

लेकर लोग चले मुझे श्मशान
तब भी दिखाई मैने दादागिरी
लोग चले थे पैदल, मै चला कंधो पर
भीड़ चली पीछे मेरी
पुकारने लगे सब राम नाम
अब ना रहा मै इंसान
कैसी माया तेरी भगवान
अब ना रहा मैं इंसान

योगिता कुमारी
बी.ए.सी. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

एकाग्रता सफलता की कुन्जी

अमेरिका में भ्रमण करते हुये स्वामी विवेकानन्द जी ने एक जगह देखा कि पुल पर खड़े कुछ लड़के नदी में तैर रहे अण्डे के छिलकों पर बन्दूकों से निशाना लगाने की कोशिश कर रहे है। किसी का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। तब वे एक लड़के से बन्दूक लेकर खुद निशाना लगाने लगे। फिर एक के बाद एक उन्होंने 12 निशाने सही लगाये।

लड़कों ने आश्चर्य से पूछा "आप यह कैसे कर लेते है" स्वामी विवेकानन्द बोले, 'तुम जो भी कर रहे हो, अपना पूरा दिमाग उसी एक काम में लगाओ। अगर तुम निशाना लगा रहे हो तो तुम्हारा पूरा ध्यान अपने लक्ष्य पर ही होना चाहिये। फिर कभी चूकोगे नहीं। अगर आप अपना पाठ पढ़ रहे हो, तो केवल पाठ के बारे में सोचो। एकाग्रता ही सफलता की कुन्जी है।

मनोज राजपूत
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

मेहनत का फल

एक बार भोले शंकर ने दुनिया पर बड़ा क्रोप किया। प्रण लिया कि जब तक दुष्ट दुनिया सुधरेगी नहीं तब तक शंख नहीं बजाऊंगा। अकाल-पर-अकाल पड़ते गये। पानी की बूँद तक नहीं बरसी और कलेश की सीमा ना रही, दुनिया ने खूब ही प्रायश्चित किया किन्तु महादेव अपने प्रण से तनिक भी नहीं डिगे।

सहयोग की बात ऐसी बनी कि एक बार शंकर-पार्वती गगन मार्ग से जा रहे थे। उन्होने देखा की एक किसान भरी दुपहरिया सूखे खेत की जुताई कर रहा था। पसीने में भीगा हुआ और अपनी धुन में मगन था। भोले शंकर को बड़ा आश्चर्य हुआ कि पानी बरसे तो एक युग बीत गया, तब यह मुर्ख क्या पागलपन कर रहा है।

शंकर-पार्वती नीचे उतरे और किसान से पूछा- अरे बावले। क्यों बेकार कष्ट उठा रहा है। सूखी धरती में केवल पसीना बहाने से ही खेती नहीं होती और वर्षा का तो अब सपना भी दूभर है।

किसान ने हल चलाते-चलाते ही उत्तर दिया सच कह रहे है आप, किन्तु हल चलाने की आदत भूल ना जाऊँ, इसलिए मैं हर साल इसी भांति पूरी लगन के साथ जुताई करता हूँ। जुताई करना भूल गया तो केवल वर्षा से ही क्या फसल उग सकेगी ?

किसान के ये बोल शंकर भगवान के मन में बैठ गए। सोचने लगे-मुझे शंख बजाए बरसो बीत गए। कही मैं शंख बजाना भूल तो नहीं गया।

शंकर भगवान ने खेत में खड़े-खड़े ही झोली से शंख निकाला और जोर से बजाया (फूँका) बस फिर क्या था, चारो ओर घटाएँ घुमड़-पड़ी और आकाश में गड़गड़ाहट गूँजने लगी और फिर बेशुमार पानी बरसा।

वास्तव में विद्यार्थी को इसी प्रकार से मेहन्त करते रहना चाहिए जिसका फल एक दिन जरूर प्राप्त होता है।

हिमांशु तोमर
बी.ए. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

माता पिता का प्रेम

एक माँ जो अपनी सन्तान को 9 माह अपने गर्भ में रखकर उसको जन्म देती है।

और सारे जीवन भर हमारा पालन-पोषण करती हैं किन्तु हम कुछ बच्चे उनका यह प्रेम भूलकर गलत रास्ते पर निकल जाते है और अपने माता-पिता के प्रति अपना कर्मभूल जाते है माता-पिता मेहनत मजदूरी करे अपने चार बच्चो को पालते है। परन्तु बड़े होकर चार बच्चे अपने माता-पिता को नहीं पाल पाते है। क्या यह आज कल के संस्कार है कि अपने बूढ़े माता-पिता के प्रति अपना कर्म पूरा नहीं कर पाते है अथति जैसे हम सब करते है वैसा हम आगे चलकर अपने जीवन में भोगना पड़ता है यह एक नियम है कि जो जैसा करता है उसका वैसा ही भरना पड़ता है। यह सृष्टि का बनाया गया एक नियम है जिसका सबको पालन करना पड़ता है इसीलिए हमे अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए क्योकि अगर हम अच्छा करेगे तो हमारे साथ अच्छा हो होगा।

कुलदीप कुमार
बी.ए.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

यही है

जीवन भी यही है, मरना भी यही है।
फिर किस बात की चिंता जब तेरा सफर यहीं है।
होती है तकलीफे जिनको जिदंगी में है,
काबिल-ए-तारीफ जिन्हे दिखता सही है।

जब तेरे अपने भी यही है, और सपने भी यही है।
जीवन के दुखो से यूँ डरते नहीं है।
ऐसे बच के सच से गुजरते नहीं हे।
सुख की चाह तो दुख भी सहना है।
क्योंकि इतनी जल्दी मुसाफिर थकते नहीं है।

गुजरे हुए वक्त से सीखना भी यही है।
कि होता नहीं कोई साथ
अकेला चलना भी यही है।

आती है, मुसीबत तो निराश होना नहीं है।
क्योंकि मुश्किलों से भाग जाना समाधान नहीं है।
मुश्किलों का समाधान तो खुद में सही है।
क्योंकि ओरे में तो उलझने नयी है।

छाया चौधरी
बी.ए. प्रथम वर्ष
(संकलन कर्ता)

महान व्यक्ति की प्रार्थना

जगजीवन में जो चिर महान
सौन्द्रर्यपूर्ण और सत्यप्राण
मैं उसका प्रेमी बनूँ, नाथ!
जो थे मानव के हित समान!
जिससे जीवन में मिलें ऐसी शक्ति
छुटे भय, संशय, ओर अंन्धशक्ति
मैं वह प्रकाश बन सकूँ, नाथ!
मिल जायें जिसमें अखिल व्यक्ति
पाकर प्रभु! तुमसे अमर, वरदान,
जिससे व्यक्ति का हो कल्याण
ला सकूँ विश्व में एक बार
फिर से नवजीवन का विहान!
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
अगर सूरज की तरह चमकना है। तो सूरज की तरह जलना भी होगा
मुश्किल का सामना करने वाले व्यक्ति की कभी हार नहीं होती है।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्

चन्द्रवीर
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

भारत ने असंभव को संभव का दिखाया

भारत ने यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वह हासिल कर दिखाया जिसे भू-राजनीतिक संकटों के समाधान के लिए बने मंत्र हासिल नहीं कर पा रहे थे। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और आम सभा जैसे मंचों के प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित न हो पाने के कारण निष्प्रभावी प्रतीत होते हैं। इसलिए भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में संपन्न जी-20 शिखर सम्मेलन के कुछ दिन पहले तक किसी को उम्मीद नहीं थी कि घोषणा-पत्र पर सहमति बन पाएगी परंतु भारतीय राजनायिकों के कौशल और अतंरराष्ट्रीय पटल पर भारत के बढ़ते कद ने असंभव को संभव कर दिखाया। शिखर सम्मेलन के पहले दिन ही घोषणा-पत्र पर आम सहमति जुटा कर भारत ने सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता की अपनी दावेदारी को भी मजबूत किया। भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन की थीम **"वसुधैव कुटुंवकम्"** रखी और **"एक पृथ्वी, एक कुटुम्ब, एक भविष्य"** को आदर्श वाक्य बनाया। इसके माध्यम से भारत ने यही संदेश दिया कि वह विश्व कल्याण के लिए तत्पर है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर भारत ने खेमों में बंटी दुनिया को एक कुटुम्ब के रूप में जोड़ने में ऐतिहासिक सफलता हासिल की है। जी-20 शिखर सम्मेलन के पहले जो अनेक बैठकें हुई, उनसे भारत विश्व को अपनी सांस्कृतिक विरासत और विविधता से परिचित कराने में सफल रहा। इस आयोजन के लिए नई दिल्ली को जो कायाकल्प हुआ, वह भी चमत्कृत करने वाला है। जी-20 शिखर सम्मेलन जिस स्थल यानी 'भारत मंडपम' में सम्पन्न हुआ, वहाँ भी भारत की सांस्कृतिक छटा का भव्य प्रदर्शन किया गया। उल्लेखनीय यह भी रहा कि देश ने जी-20 शिखर सम्मेलन में स्वयं को '**भारत**' के रूप में प्रस्तुत किया ना कि इंडिया के रूप में। ने केवल राष्ट्रपति के निमंत्रण-पत्र में भारत शब्द का उपयोग हुआ, बल्कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सामने रखी पट्टिका में भी। इससे दुनिया को यही बताया गया कि इस देश की पहचान भारत के रूप में है। और वह एक प्राचीन एवं समृद्ध विरासत का प्रतिनिधि है।

सोनू कुमार शर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

न ठहर बस चलता चल

हार के पीछे जीत छुपी है,
तेरे कर्मो पर तेरी तकदीर टिकी है;
हिम्मत मत हार बस आगे बढ़,
हर रात के पीछे सुबह खड़ी है।

रख होंसलों में इतना दम,
के दुखों की कमर तोड़ दे;
जिस पथ पे काटे ही बिछे,
उस पथ पे कलियाँ बिखेर दे।

न बाल बाका कर सके,
तेरी कोई कही कभी;
तू ऐसी एक चट्टान बन;
जो शत्रुओं का रास्ता रोक दे।

तु याद बस अपना लक्ष्य रख,
बनके अर्जुन तरकश तैयार रख;
जिन्दगी की रूकावटों को,
अपने हित में लेके चल।

न मिले जीत कोई बात नहीं,
अपनी हार से सीख लेके चल;
ये जीवन एक परीक्षास्थल है,
कोई उत्तीर्ण तो कोई विफल है।

तेरी हार में भी जीत है,
एक तजुर्बा, एक विश्वास है;
तू फिर से उठ और कोशिश कर,
बढ़के आगे अपनी जीत हासिल कर।

मुस्कान
बी.ए.सी. तृतीय वर्ष
(संकलन कर्ता)

शिक्षक दिवस पर शिक्षकों का सम्मान

पतंजलि अर्न्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वामी कर्मवीर जी महाराज विभिन्न औषधीय पौधों के गुणों की जानकारी देते हुए

15 अगस्त 2023 स्वतन्त्रता दिवस पर प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण

शपथ ग्रहण कराते हुए प्राचार्य

निरोगी काया के लिए जानकारी देते हुए स्वामी कर्मवीर जी महाराज

O.N.G.C. द्वारा कॉलेज में चलाये जा रहे प्रोजेक्ट के अन्तर्गत छात्राओं को परामर्श देते हूए चिकित्सक

महाविद्यालय में प्रथम बार होली मिलन समारोह का श्री गणेश

होली मिलन समारोह में महाविद्यालय परिवार

टैगोर भवन में गौरी शंकर प्रतिमा का अनावरण

लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती मनाते हुए

शिक्षक दिवस समारोह

संस्कृत विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

महाविद्यालय स्थापना दिवस पर यज्ञ का आयोजन
(15 जुलाई 2023)

महाविद्यालय की NSS इकाई द्वारा स्वच्छता सप्ताह मनाया गया

शिक्षक दिवस समारोह पर डॉ रेनू चौधरी (अध्यक्ष, भूगोल विभाग)
विचार रखते हुए

नव निर्मित मंदिर भवन में देवों की प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम की विभिन्न झलकियाँ

प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के अवसर पर उपस्थित अतिथिगण

महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव रिद्म- 2024 के विहंगम दृष्य

वार्षिकोत्सव रिद्म-2024 के मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध उद्योगपति आदरणीय श्रद्धेय श्री जय प्रकाश जी गौड़ तथा छात्र-छात्राएं

फ्रेशर पार्टी भौतिकी विभाग

फ्रेशर पार्टी वाणिज्य विभाग

फ्रेशर पार्टी संस्कृत विभाग

फ्रेशर पार्टी रसायन विभाग

राष्ट्रीय चेतना मिशन के सौजन्य से आयोजित रक्तदान शिवर में रक्तदान करते प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह, साथ में डिबाई विधायक मा. सी.पी. सिंह जी

रक्त दान शिविर में रक्त दान करते छात्र-छात्राएं

दीक्षारम्भ कार्यक्रम - सत्र 2023-24

दीक्षारम्भ कार्यक्रम सत्र- 2023-24

महाविद्यालय में रोजगार मेले का सरस्वती पूजन द्वारा शुभारम्भ करते हुए अनूपशहर के माननीय विद्यायक श्री संजय शर्मा जी, प्राचार्य प्रो. जी. के. सिंह जी तथा डॉ तरूण श्रीवास्तव जी

रोजगार मेले के अवसर पर मंच पर उपस्थित अतिथिगण

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में पधारे अतिथिगण पी.एन.बी. के प्रबंधक श्री दुष्यंत कुमार

जीवन बीमा निगम द्वारा स्वरोजगार अपनाने की प्रेरणा देते LIC के पदाधिकारी गण

ईरा टेक्नोलॉजी लिमिटेड में चयनित विद्यार्थियों का ज्वायनिंग लेटर देते हुए कॉलेज प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह एवं रोजगार सेल के प्रभारी श्री पंकज गुप्ता

रोजगार सेल द्वारा आयोजित Campus Placement में साक्षात्कार देते हुए विद्यार्थी

ईरा टेक्नोलॉजी लिमिटेड में चयनित विद्यार्थी

रोजगार सेल द्वारा आयोजित Campus Placement में साक्षात्कार मंडल

कौशल विकास कार्यक्रम – 2023–24

मधु मक्खी पालन

परिधान (अपैरल) डिजाइनिंग

खुशहालगढ़ गांव को म. द्वारा गोद लिया गया चित्र में प्राचार्य के साथ ग्राम प्रधान श्री ब्रजवीर सिंह, प्रो. पी.के. त्यागी, डॉ० तरूण श्रीवास्तव, श्री एवं लक्ष्मण सिंह

नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र

स्वामी कर्मवीर जी के साथ हस्ताक्षर लेते हुए श्री लक्ष्मण सिंह तथा हिमांशु कुमार

ए.एस. कॉलेज, लखवाटी के प्राचार्य प्रो. राजेन्द्र सिंह तथा डीपीबीएस के प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह ने एक MOU हस्ताक्षरित किया

कु० नम्रता सिंह को UP PCS 3rd Rank प्राप्त करने पर महाविद्यालय परिवार द्वारा शुभकामनाए देते हुए

महाविद्यालय की प्रोफेसर चन्द्रावती की पुत्री ने UPPCS में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर महाविद्यालय प्राचार्य शुभकामनाएं देते हुए

प्राचार्य द्वारा सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई

आकाशवाणी रामपुर से अपनी वार्ता प्रस्तुत करते प्राचार्य

अद्भुत पुस्तक घड़ी के साथ कॉलेज प्राचार्य

ड्रॉइंग एवं पेंटिंग विभाग द्वारा तितली दिवस पर बनाई गई विभिन्न पेंटिंग्स

विद्यार्थी की सुविधा के लिए प्रांगण में ही नव स्थापित कॉलेज साइबर कैफे

खुशहाल गढ़ गांव में NSS के कैम्प में उपस्थित प्राचार्य, अतिथिगण तथा छात्र छात्राएं

सड़क सुरक्षा सप्ताह के अन्तर्गत पोस्टर प्रतियोगिता के प्रतिभागी

महाविद्यालय में कॉन्फ्रेंस हॉल तथा गंगा डिजिटल लाइब्रेरी का बुलन्दशहर के जिलाधिकारी आदरणीय श्री सी0पी0 सिंह (IAS) द्वारा लोकार्पण किया गया

डी पी बी एस महाविद्यालय B.A. तथा M.Com. के विभिन्न पाठ्यक्रमों का शुभारम्भ सत्र-2023-24 से किया गया

नये पाठयक्रम खुलने हेतु निरीक्षण मण्डल

होम साईंस लैब का निरीक्षण

भूगोल लैब का निरीक्षण

चित्र कला विभाग के मेधावी छात्रों को सम्मानित करते प्राचार्य

गृह विज्ञान विभाग की पहली थाली

गृह विज्ञान की रसोई में छात्राएं

भूगोल के विद्यार्थी प्रायोगिक कार्य सीखते हुए

इंटरएक्टिव पैनल पर विद्यार्थियों को व्याख्यान देती हुई विभाग प्रभारी

डी पी बी एस कॉलेज में प्रथम जिलास्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

ICSSR द्वारा प्रायोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में काशी विद्यापीठ के कुलपति आदरणीय प्रो. आनंद त्यागी, हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद के प्राचार्य प्रो. एस.वी.एस. रावत, ए.के. कॉलेज की प्राचार्या प्रो. डिम्पल विज, के.जी.के. कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सुनील चौधरी, कालिका धाम पी.जी. कॉलिज के प्राचार्य प्रो. अनिल कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

काशी विद्यापीठ के कुलपति आदरणीय प्रो० आनंद त्यागी जी

मेरी माटी मेरा देश के अन्तर्गत शपथ लेते हुए

NSS ईकाई द्वारा खुशहालगढ़ गांव में सफाई का संदेश देते विद्यार्थी

NSS ईकाई के अर्न्तगत पौधा रोपण करते हुए

सर्दी में विद्यार्थी को जर्सी देते हुए

डी पी बी एस कॉलेज, अनूपशहर तथा महर्षि पंतजलि अर्न्तराष्ट्रीय योग पीठ पुरकाजी के संयुक्त तत्वाधान में सभी के लिए आयोजित विशाल योग शिविर के विहंगम छाया चित्र

अन्तर्महाविद्यालय बास्केट बॉल पुरूष प्रतियोगिता 2023-24 के आयोजन का डी पी बी एस कॉलेज को सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रकीर्ण छवियाँ

डीपीबीएस कॉलेज की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता
Boost – 2023–24 के विभिन्न दृश्य

महाविद्यालय में पौधारोपण कार्यक्रम

कृमि मुक्ति दिवस पर नि:शुल्क ऐल्बेंडा ज़ोल वितरण

कृमि मुक्ति दिवस पर नि:शुल्क ऐल्बेडा ज़ोल का वितरण

G20 कार्यक्रम के अन्तर्गत कविता पाठ

डाटा सांइस पर प्रो. सुजीत कुमार शर्मा, IIM नागपुर द्वारा अतिथि व्याख्यान

छात्र-छात्राओं से संवाद - कार्यक्रम

सड़क सुरक्षा सप्ताह के अर्न्तगत पोस्टर प्रतियोगिता

रसायन विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय सेमीनार

26 जनवरी - 2024 के अवसर पर डी.पी.बी.एस कॉलेज प्राचार्य द्वारा ध्वाजारोहण

विभाग द्वारा रामानुजन के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय गणित दिवस मानते हुए

महाविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर की आरक्षण विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता

समसामयिक विषय पर महाविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन

चन्द्रयान-3 के संदर्भ में पोस्टर प्रतियोगिता

शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा योग दिवस का आयोजन।

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के अन्तर्गत समस्त कॉलेज स्टाफ को नियमों की जानकारी दी गई

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के अन्तर्गत रैली का आयोजन

अभिभावक तथा शिक्षको की बैठक/मीटिंग

NCC, NSS द्वारा सड़क सुरक्षा पखवाड़े में निकाली गई रैली

छात्राओं को नव निर्मित संसद भवन के भ्रमण हेतु रवाना करते हुए प्राचार्य तथा अन्य

नवनिर्मित संसद भवन के समक्ष छात्रायें
नारी शक्ति

एकल तथा सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती छात्राए

एकल तथा सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती छात्राए

विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपना स्थान सुनिश्चित करने वाली छात्रायें साथ में डॉ. सुधा उपाध्याय तथा डी.पी.बी.एस. के पूर्व छात्र तथा वर्तमान में मेरठ विश्व विद्यालय के प्रो. योगेन्द्र गौतम

बुलन्दशहर के मा. सांसद डॉ भोला सिंह जी की उपस्थिति में मोबाइल वितरति किये गये

मोबाइल फोन वितरति करते हुए जे.पी. वि.वि. के रजिस्ट्रार श्री संजय अग्रवाल और प्रो. पी.के. त्यागी साथ में प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह तथा अध्यक्ष श्री अजय गर्ग जी

मोबाइल फोन वितरण कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं के साथ सेल्फी लेते मा. सांसद डॉ. भोला सिंह जी

छात्र छात्राओ को रक्षा अध्यन तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की उपयोगिता के विषय में अतिथि व्याठयान देते पूर्व कमिश्नर श्री टी.आर. कक्कड़ साथ में हैं प्रसिद्ध उद्योग श्री जे.पी. गौड़ जी, प्रबंध समिति के अध्यक्ष तथा प्राचार्य

डी.पी.बी.एस कॉलेज की सामूहिक रसोई के तत्वाधान में गंगा स्थान करने वालें श्रृद्धालुओं को चाय, बिस्कुट वितरित करते कॉलेज प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह तथा डॉ. तरूण श्री वास्तव

स्वामी विवेकानन्द की स्मृति में युवा दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रम

स्वच्छ गंगा, निर्मल की शपथ लेते छात्र-छात्राये प्राध्यापक तथा प्राचार्य

संस्कृत सप्ताह के अर्न्तगत श्लोक गायन में प्राचार्य द्वारा पुरूस्कृत विद्यार्थी

कॉलेज की NCC ईकाई के तत्वाधान में वृक्षारोपण, गंगा स्वच्छता, सड़क सुरक्षा आदि के सम्बन्ध में की गई विभिन्न गतिविधियाँ

शिक्षकों को कर्मठता तथा कर्तव्यनिष्ठता के सम्बध में सम्बोधित करते हुए परम श्रद्धेय श्री जे.पी. गौड़ जी

पतित पावनी माँ गंगा के मस्तराम घाट पर गणमान्य लोंगो की एक सभा में आदरणीय श्री जे.पी. गौड जी

परिसर में स्थित मंदिर में देव प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में सम्मलित प्रसिद्ध उद्योग पति आदणीय श्री मनोज गौड़ जी शिक्षाविद तथा जयपुर यूयनीवर्सिटी के कुलपति कनिष्क शर्मा

मा. सांसद डॉ. भोला सिंह, तथा डिबाई से विधायक श्री सी.पी. सिंह के साथ में प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह, प्रो. पी.के. त्यागी तथा श्री अभय गर्ग

स्वतंत्रता दिवस 2023 के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में प्रबंध समिति के साथ प्राचार्य

कॉलेज के सामने डॉ. सुधीर कुमार का स्मृति में बनाये गये द्वार के समक्ष नारियल फोड़ते प्राचार्य

CCSU मेरठ के दीक्षांत समारोह में प्राचार्य प्रो. जी. के. सिंह

कॉलेज के NCC कैडेट के साथ प्राचार्य प्रो० जी.के. सिंह

Biodiversity: Nature's Ecological Tapestry

Abstract:

Biodiversity, the intricate web of life on Earth, is a fundamental aspect of our planet's health and resilience. This abstract explores the significance of biodiversity, emphasizing its role in maintaining ecosystem stability, providing essential ecosystem services, and supporting human well-being. It delves into the threats faced by biodiversity due to human activities, including habitat destruction, overexploitation, pollution, and climate change. Moreover, this abstract highlights the urgent need for conservation efforts and sustainable practices to protect and restore biodiversity. Ultimately, the preservation of biodiversity is not merely an environmental concern; it is a vital component of our collective future, offering a blueprint for a more sustainable and harmonious coexistence between humans and the natural world.

Introduction:

Biodiversity, the variety of life on Earth, is a critical component of ecosystem health and human well-being. This literature review explores the current state of knowledge about biodiversity, its importance, threats, and conservation efforts. Objectives: To assess the significance of biodiversity in maintaining ecosystem stability. To examine the major threats to biodiversity, including habitat loss, climate change, and invasive species. To evaluate the effectiveness of various conservation strategies and policies. To identify gaps in current research and suggest potential future directions. Hypothesis: The loss of biodiversity has profound negative consequences for ecosystems and human societies, and effective conservation efforts are essential to mitigate these impacts. Research

Methodology:

Literature Search: Conducted a comprehensive review of peer-reviewed articles, books, reports, and relevant online resources. Data Collection: Compiled and analyzed data on biodiversity trends, habitat loss, climate change impacts, and conservation strategies.Data Synthesis: Summarized and synthesized findings from various sources to draw meaningful conclusions.Case Studies: Examined specific case studies of successful and unsuccessful conservation efforts. Comparative Analysis: Compared and contrasted different conservation approaches and policies.

Result and discussion:

Biodiversity refers to the variety of life on Earth, encompassing the diversity of species, ecosystems, and genetic diversity within species. A detailed study on biodiversity involves exploring these components and their interconnections.

1. Species Diversity:
- Examining the different species in an ecosystem.
- Understanding their distribution, population dynamics, and ecological roles.
- Identifying endangered or threatened species.
2. Ecosystem Diversity:
- Analyzing various ecosystems like forests, wetlands, deserts, and aquatic systems. -Investigating the relationships between different ecosystems and their resilience to disturbances.
3. Genetic Diversity:
- Investigating the genetic variation within species..
- Understanding the importance of genetic diversity for adaptation and resilience.
4. Human Impact:
- Assessing the impact of human activities on biodiversity, such as habitat destruction, pollution, and climate change.
- Exploring conservation strategies to mitigate these impacts.
5. Ecological Interactions:
- Studying symbiotic relationships, predation, and competition among species.
- Investigating how these interactions contribute to the stability and functioning of ecosystems.
6. Biodiversity Hotspots:
- Identifying regions with exceptionally high biodiversity.
- Understanding the factors that contribute to the richness of species in these areas.
7. Conservation Biology:
- Developing strategies for the conservation and sustainable use of biodiversity. - Assessing the effectiveness of protected areas and conservation policies.
8. Biogeography:
- Examining the geographical distribution of species and ecosystems.

- Understanding how historical and current factors influence biodiversity patterns.

9. Monitoring and Assessment:
- Implementing monitoring programs to track changes in biodiversity over time.
- Utilizing indicators to assess the health of ecosystems and the effectiveness of conservation efforts.

10. Ethical and Cultural Considerations:
- Recognizing the cultural significance of biodiversity for indigenous communities.
- Addressing ethical concerns related to genetic modification and bioprospecting.

A comprehensive study on biodiversity involves interdisciplinary approaches, combining biology, ecology, genetics, geography, and environmental science. It's crucial for developing effective conservation strategies and ensuring the sustainable coexistence of diverse life forms on our planet.

References:

Here are some key references for your literature review:

1. Dirzo, R. et al. (2014).
2. Defaunation in the Anthropocene. Science, 345(6195), 401-406.CBD (Convention on Biological Diversity). (2010).
3. Strategic Plan for Biodiversity 2011-2020.Sala, O. E. et al. (2000).
4. Global biodiversity scenarios for the year 2100. Science, 287(5459), 1770-1774.Millennium Ecosystem Assessment. (2005).
5. Ecosystems and Human Well-being: Biodiversity Synthesis. Pimm, S. L. et al. (2014).
6. The biodiversity of species and their rates of extinction, distribution, and protection. Science, 344(6187), 1246752.Butchart, S. H. M. et al. (2010).
7. Global biodiversity: indicators of recent declines. Science, 328(5982), 1164-1168.Margules, C. R. & Pressey, R. L. (2000).
8. Systematic conservation planning. Nature, 405(6783), 243-253.IUCN (International Union for Conservation of Nature). (2020).

Prof. Chandrawati
Head, Chemistry Department

AN OVERVIEW ON HOW TO MAINTAIN FITNESS OF OUR BODY

Abstract

Maintaining physical fitness is essential for overall health, reducing the risk of chronic diseases, enhancing mental well-being, and improving quality of life. This paper provides an in-depth overview of strategies to maintain body fitness, focusing on exercise regimens, nutritional guidelines, and lifestyle habits. By analyzing current research and guidelines, this paper outlines effective methods for achieving and sustaining fitness, emphasizing the importance of individualized plans and consistent practices.

Introduction

Physical fitness is a state of health and well-being achieved through regular physical activity, balanced nutrition, and healthy lifestyle choices. It encompasses various components, including cardiovascular endurance, muscular strength, flexibility, and body composition. Despite the known benefits, maintaining fitness can be challenging due to modern sedentary lifestyles, poor dietary habits, and lack of time. This paper aims to provide a comprehensive overview of effective strategies to maintain body fitness, drawing on recent scientific research and expert recommendations.

Methods

This paper reviews existing literature on fitness maintenance, including peer-reviewed journal articles, guidelines from health organizations, and expert opinions. The review focuses on practical approaches to exercise, nutrition, and lifestyle modifications that have been proven effective in maintaining physical fitness. The aim is to synthesize this information into actionable strategies for individuals seeking to improve or maintain their fitness levels.

Results

The review identifies several key strategies for maintaining body fitness:

1. **Exercise Regimens**:

Cardiovascular Exercise: Activities such as running, cycling, swimming, and brisk walking improve heart health and endurance. The American Heart Association recommends at least 150 minutes of moderate-intensity or 75 minutes of high-intensity cardio per week.

Strength Training: Incorporating resistance exercises at least two days per week helps build and maintain muscle mass, improve metabolism, and enhance bone density. This includes weightlifting, body weight exercises, and resistance band **workouts.**

Flexibility and Balance: Practices such as yoga, Pilates, and stretching exercises improve flexibility, balance, and joint health, reducing the risk of injuries.

2. **Nutritional Guidelines:**

Balanced Diet: Consuming a variety of nutrient-dense foods, including fruits, vegetables, lean proteins, whole grains, and healthy fats, supports overall health and fitness.

Hydration: Staying well-hydrated is crucial for optimal physical performance and recovery. The general recommendation is to drink at least 8 cups (2 liters) of water per day, with adjustments based on activity level and climate.

Meal Timing and Frequency: Eating regular, balanced meals and snacks helps maintain energy levels and metabolic rate. Consuming protein-rich foods post-exercise aids muscle recovery and growth.

3. **Lifestyle Habits:**

Sleep: Adequate sleep (7-9 hours per night) is essential for recovery, hormonal balance, and overall health.

Stress Management: Practices such as mindfulness, meditation, and regular physical activity can help manage stress, which is important for maintaining fitness.

Avoiding Harmful Habits: Limiting alcohol consumption, avoiding smoking, and reducing intake of processed and sugary foods contribute to better health and fitness.

Discussion

Maintaining body fitness requires a multifaceted approach that combines regular exercise, proper nutrition, and healthy lifestyle habits. Personalized fitness plans that cater to individual preferences, goals, and limitations are more likely to be successful. Common barriers to maintaining fitness, such as time constraints, lack of motivation, and access to resources, can be addressed through setting realistic goals, finding enjoyable activities, and seeking support from friends, family, or fitness communities. Additionaly, education and awareness about the long-term benefits of fitness can motivate individuals to adhere to their routines. Technological tools like fitness trackers and apps can provide valuable feedback and keep individuals engaged and accountable.

Conclusion

Achieving and maintaining body fitness is a continuous process that involves regular physical activity, balanced nutrition, and healthy lifestyle choices. By understanding and implementing effective strategies, individuals can enhance their overall health and quality of life. Future research should focus on developing more accessible and personalized fitness programs to cater to diverse populations and overcome common barriers to fitness.

References

1. American College of Sports Medicine. (2018). ACSM's Guidelines for Exercise Testing and Prescription. 10th ed. Lippincott Williams & Wilkins.
2. Warburton, D. E., & Bredin, S. S. (2017). Health benefits of physical activity: a systematic review of current systematic reviews. Current Opinion in Cardiology, 32(5), 541-556.
3. Physical Activity Guidelines Advisory Committee. (2018). Physical Activity Guidelines for Americans, 2nd edition. U.S. Department of Health and Human Services.
4. Sallis, R. E., Matuszak, J. M., Baggish, A. L., Franklin, B., Chodzko-Zajko, W., Fletcher, B., . & Puffer, J. C. (2016). Call to action on making physical activity assessment and prescription a medical standard of care. Current Sports Medicine Reports, 15(3), 207-214.
5. Mozaffarian, D., Rosenberg, I., & Uauy, R. (2018). History of modern nutrition science—implications for current research, dietary guidelines, and food policy. BMJ, 361, k2392.

Prof. Seemant Kumar Dubey

Head, Department of Physical Education

FUTURITY OF THE VIRTUAL CLASSROOM

The way we learn will undergo substantial changes in the upcoming years. Education may now be provided at a far lower cost than with more traditional approaches because to recent advancements in digital media, communication and bandwidth. Students may access a vast array of resources on the internet, such asinteractive and collaborative tools, text, audio and video information. Eighty five percent of today's online students who were asked whether they believed distance learning was as good as or better than traditional classroom-based courses said they did Virtual classrooms and video-on-demand courses badly lack the human connection, which is a crucial component of classroom learning.

An online location that imitates a real-world classroom is known as a "virtual classroom." Lessons are often conducted synchronously, meaning that the educator and the learners are all present in the same online location at the same time to engage with one another. On the other hand, the demands of the educator or the student often dictate the inclusion of pre-recorded components in some virtual classes. Virtual classrooms, much like traditional ones, are adaptable to each user's learning preferences and requirements.

TYPES OF VIRTUAL CLASSROOMS

1. Completely Online

As the term suggests, there's no need for or restriction on students communicating with one another in person or through other means in a virtual classroom. The distinction between synchronous and asynchronous courses lies on the use of pre-recorded videos and minimal real-time interaction via online meeting software.

2. Blend and Blend

With the help of this model, students may select a learning strategy that best suits their requirements and helps them absorb as much material as possible. It is a hybrid of many digital education paradigms, and depending on who is in control, it can be either student-led or institution-governed.

3. Low Price

This is the main advantage of learning on the internet as opposed to more traditional means. Online learning does not necessitate the accompanying infrastructure that drives up the unreasonably high cost of education.

4. Adaptability and Practicality

There is no comparison for the simplicity and versatility of virtual classrooms. From their homes, workplaces, internet cafes, and other public locations, students may access a virtual classroom from anywhere there is an internet connection. There are no time or financial requirements when it comes to travel.

5. Tearing down the Borders

There won't be any geographical restrictions when virtual reality is used in the classroom. The lack of resources and opportunity in a place will no longer prevent students in less populous locations from acheiveing their full potential in school.

6. Working together with foreign peers

Having the opportunity to collaborate on projects with students who live all over the world is one benefit of taking part in an online classroom. In addition to learning about a range of cultures, students are exposed to a diversity of points of view and are given a peek into the daily lives, thought processes and study habits of their fellow students.

7. Adjustable

The virtual classroom is open and available to the students at all times, so they are free to enter whenever it is convenient. Other than that, small-group instruction is recommended. If students need assistance, they can go back to the virutal classroom.

8. Rotation

Turnround Frequently, the flipped classroom approach incorporates rotation as one of its components. According to a set of criteria, it involves rotating between using online and offline classes. Significant learning occurs online rather frequently.

9. Virtual Classroom's Future

It appears that the future of education is bright. Virtualizations will help bring down costs to a far smaller percentage than they currently are Merit will be given more weight in the teaching profession. Expert teachers will be as popular as superstars, and they will make good money.

Summary

The number of individuals enrolled in online courses has increased rapidly and this trend is expected to continue. There is no good reason that every educational activity should happen in one place. Greater connectivity enables greater flexibility for teachers and students. The way you configure student interaction in your virtual classroom will be greatly influenced by the features of the solution you choose. They may, under certain conditions, need to work together on an electronic whiteboard.

A Google search to learn more about an online alternative education program will bring up many options, most of which focus on the safety of children and offer them free access to virtual classes.

Dr. Bhuvnesh Kumar
Head, Faculty of Commerce

Harnessing Artificial Intelligence in Statistics for Human Welfare

In the era of exponential data growth and technological advancement, the fusion of Artificial Intelligence (AI) with statistics has emerged as a potent force driving innovation and progress across various domains. From healthcare to socio-economic development and environmental sustainability, the application of AI in statistical analysis holds immense potential to enhance human welfare. This article explores the multifaceted role of AI in statistics and its transformative impact on improving the well-being of individuals and communities worldwide.

1. The Evolution of Artificial Intelligence in Statistics:

- The intersection of AI and statistics traces back to the early developments in machine learning and data mining algorithms.
- Traditional statistical methods laid the groundwork for AI-powered techniques such as neural networks, deep learning, and predictive analytics.
- The proliferation of big data and advancements in computing capabilities have accelerated the integration of AI into statistical modeling and analysis, unlocking new avenues for knowledge discovery and decision-making.

2. Advancements in Healthcare:

- AI-enabled statistical models play a pivotal role in revolutionizing healthcare delivery, from disease diagnosis to treatment optimization and patient care.
- Machine learning algorithms analyze vast amounts of medical data, including electronic health records, imaging scans, and genomic sequences, to extract actionable insights and support clinical decision-

making.

- Predictive analytics helps healthcare providers anticipate disease outbreaks, identify high-risk patient populations, and personalize treatment plans, leading to improved outcomes and reduced healthcare costs.

3. **Socio-Economic Impact:**
   - In the realm of socio-economic development, AI-driven statistical analysis empowers policymakers and practitioners to address complex societal challenges effectively.
   - By harnessing AI to analyze demographic trends, economic indicators, and social welfare data, governments can formulate evidence-based policies to combat poverty, inequality, and unemployment.
   - Predictive modeling facilitates resource allocation, urban planning, and disaster preparedness, fostering resilient communities and sustainable development.
4. **Environmental Stewardship:**
   - The integration of AI and statistics holds great promise for enhancing environmental monitoring, conservation efforts, and climate change mitigation strategies.
   - Statistical analysis of environmental data, including satellite imagery, weather patterns, and biodiversity records, enables scientists to assess ecosystem health, identify environmental risks, and guide conservation interventions.
   - AI-powered predictive models forecast climate change impacts, inform adaptation strategies, and support sustainable resource management practices, promoting environmental sustainability and resilience.
5. **Ethical Considerations and Responsible AI:**
   - While AI-driven statistical analysis offers unprecedented opportunities for human welfare, it also raises ethical concerns related to privacy, bias, and algorithmic accountability.
   - Safeguarding data privacy, ensuring algorithmic fairness, and promoting transparency and accountability are paramount to fostering trust and ethical AI deployment.
   - Interdisciplinary collaboration among statisticians, ethicists, policymakers, and technologists is essential to develop ethical frameworks, regulatory guidelines, and best practices for responsible AI implementation.

The convergence of Artificial Intelligence and statistics heralds a new era of data-driven decision-making and societal transformation, with profound implications for human welfare. By harnessing AI-powered statistical tools and techniques, we can address complex challenges, drive innovation, and promote inclusive development. However, it is imperative to navigate ethical considerations and ensure responsible AI deployment to maximize its benefits while mitigating potential risks. As we strive towards a future where AI empowers us to build a more equitable, sustainable, and resilient world, collaboration, innovation, and ethical stewardship will be key drivers of progress and human welfare enhancement.

Prof. Pradeep Kumar Tyagi
Head, Department of Statistics

Boundary Value Problems

A boundary-value problem is a differential equation that is subjected to limitations that are referred to as boundary conditions. This problem is studied in the field of differential equations. A solution to a boundary value problem is a solution to the differential equation that also satisfies the boundary conditions. This is the definition of a boundary value problem.

Due to the fact that boundary value problems are included in every physical differential equation, they are encountered in a number of distinct subfields of physics. When dealing with problems that involve the wave equation, such as determining normal modes, it is common practice to refer to these problems as boundary value problems. In the realm of boundary value problems, the Sturm- Liouville problems constitute a significant and extensive category. When it comes to the linear case, the analysis of these problems includes the eigenfunctions of a differential operator.

If a boundary value problem is to be relevant in applications, it must be addressed in an appropriate manner. This indicates that there is a one-of-a-kind solution to the problem, which is contingent on the input in a continuous manner, given the input. In the subject of partial differential equations, a significant amount of theoretical effort is dedicated to demonstrating that boundary value problems that arise from scientific and practical applications are, in fact, well-posed.

The Dirichlet problem, which consisted of locating the harmonic functions (solutions to Laplace's equation), was one of the early boundary value problems that was investigated. The solution to this problem was provided by the Dirichlet's principle.

Boundary value problems are similar to initial value problems. A boundary value problem has conditions specified at the extremes ("boundaries") of the independent variable in the equation whereas an initial value problem has all of the conditions specified at the same value of the independent variable (and that value is at the lower boundary of the domain, thus the term "initial" value). A boundary value is a data value that corresponds to a minimum or maximum input, internal, or output value specified for a system or component.

For example, if the independent variable is time over the domain [0,1], a boundary value problem would specify values for y(t) at both t = 0 and t = 1 whereas an initial value problem would specify a value of y(t) and y' (t) at time t = 0.

Finding the temperature at all points of an iron bar with one end kept at absolute zero and the other end at the freezing point of water would be a boundary value problem.

If the problem is dependent on both space and time, one could specify the value of the problem at a given point for all time or at a given time for all space.

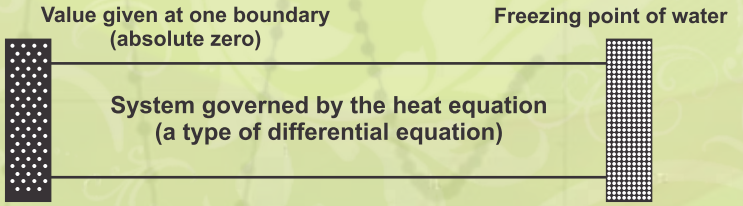

Applications:

In electrostatics, a common problem is to find a function which describes the electric potential of a given region. If the region does not contain charge, the potential must be a solution to Laplace's equation (a so-called harmonic function). The boundary conditions in this case are the Interface conditions for electromagnetic fields. If there is no current density in the region, it is also possible to define a magnetic scalar potential using a similar procedure.

Harender Kumar,
Prof. R.K. Agarwal
Department of Mathematics

Value Education & its impact on Universal Peace

Introduction

Value education is not a separate subject or domain. Education process cannot be perceived without value orientation. Value education is to be seen as an investment in building the foundation for life-long learning, promoting human excellence, ensuring social cohesion, national integration & global unity. Value education encompasses various social issues & concerns like environmental conservation, inter-faith harmony, gender equality, inclusivity, increasing influence of science & technology. Value education is to develop four core qualities: truth, selfless love, compassion & forgiveness.

Today the focus of knowledge is centered on money. Professional degrees are earned for the purpose of securing jobs to earn money for livelihood. Passion has replaced compassion. Today the race for material progress & urge for physical comfort have dictated new social equation.

Peace which is fundamental to human nature is eluding. Every day there are cases of corruption. thefts, physical violations, and murders. Peace is not utopian dream but ultimate reality and can be experienced by every human irrespective of social, economic, cultural, religious and natural diversity. Peace is feasible only if evolves from within. The process of evolution from within does require human values as support system. It is true that everyone wants peace from within however the process of internalization is the requirement which takes its roots from moral values and ethics.

What lacks in Education:

Most important reason for reorienting education for values is the fact that the current model of education contributes to the fractured & lopsided development of student. This model of education puts exclusive focus on cognitive to the total neglect of the affective domain and presents an alienation between head and heart. Students are nurtured in a spirit of excessive competition and are trained right from the beginning to relate to aggressive competition and facts detached from contexts. The individualistic idea of excellence is promoted at the coast of emotional and relational skills. Young learners barely understand why they are in school, why they are studying different subjects and how their schooling will be helpful to the.

Effect of Technology:

Technology has altered our attitude & lives. The frenzied pace of changes is now so fast that it has almost instilled tendencies to attack symptoms instead of warding off disease in graduated manner. Personally, we tend to live with short term plans instead of long term sustainable perspective. Instead we drive technology, the technology dictates to us as to how we should plan our lives. If a satellite is disturbed due to technical reasons, the relationships & human interactions may get jeopardized as the mobiles & phone will get affected. Social skills have already taken backseats because of overshelming domination of technology. Small things, such as common courtesy, appearance, and our ability to network with others, have all deteriorated in the workplace. We may be effective in communicating electronically, but we are becoming complete failures in communicating socially. We are concerned for tremendously fast paced technology driven advancements which have galvanized the world spectrum but also introduced robotic & mechanized influences threatening the existence of human kind as such. Our present generation is suffering from multi pronged malnutrition-social, physical mental & spiritual. Most people appreciate technological advancements as the same has put the imagination into reality. Cell phones that act like. SMS have long time eliminated the requirements of personally wishing family members happy birthday or congratulate them on their recent success. This has created a barrier in personable, face-to-face communication amongst people. Technology has handed over the instrument named remote in the hands of humans which has made

people lazier and laid back.

Consumerism:

In last 20 years, focus has shifted from personal dynamics to market dynamics. People are conscious of their status which is signified by details like, the balance in their bank account, the number of shopping bags on their arms, and the brand of sunglasses upon their faces. There is a feverish clamoring for more and more, better and better, newer and newer. Some of the core inherent characteristics of modern technology and business world are:

a. **Mass production:** It ensures more productivity, lesser manufacturing cost, better quality of items with minimized human errors through automation.
b. **Reductionism:** It is by definition anti holistic & anti ecological with central approach of reducing the cost of production. Depletion of resources however invites ecological backlash of unparalleled nature.
c. **Ethics of abundance:** The stress is on optimized application of all resources. Availability of water and electricity at the turn of knob has set the ball rolling for brutal display of tendencies of carelessness & wastefulness.

Modern Day Turmoil

The meaning of happiness is confused with physical comforts. Individual is deemed the basic unit instead of family and prosperity mingled with wealth. Only right values can differentiate prosperity (feelings of having more than required physical facilities) from wealth (mere money & assets without feelings). Recent TV report confirms that India is likely to witness 60% heart cases of heart ailment in the age group starting from 30 years. The main cause appears stress, insomnia and restlessness. Stress is toxic to mind & distorts vision, logic and reduces ability. On the surface, life seems to be going fantastically however underneath the current flows opposite. We hear about millions of people not able to sleep today without anti depressive medicines. The joy is not determined by what you have but if you have the understanding to feel that joy. There is a serious contradiction with gaps between inner and outer beings of a man. External progression does not guarantee inner well-being.

In our country we witness growing menace of commerce through corruption, generation particularly the one which breathed after 80's growing away from joint families maturing without Panchatantra stories & grandma's homely tips. We are concerned from the generation which opened eyes in the period in which the cable network already invaded the houses and replaced the parental and elderly sermons/discussions and carton channels replaced Chadamama and Mulla Nasiruddin tales. We are concerned for tremendously fast paced technology driven advancement which has galvanized the world spectrum but also introduced robotic and mechanized influences threatening the existence of human kind as such.

Value Education

Education is a tool for inculcating values to equip the learner to lead a kind of life that is satisfying to the individual in accordance with the cherished values and ideals of the society. Philosophers, spiritual leaders and educationists of our country, in various ways, have emphasized the role of education for 'character development', 'bringing out the latent potentialities and inherent qualities' and developing an 'integrated personality' for the well-being of the individual and the society at large. Whatever term we may use, the importance of developing values has long been embedded in the age old traditions of India's civilization and cultural heritage, spanning over the centuries. The diverse and rich cultural heritage that we are so fortunate to inherit in our country is in many ways symbolic of the foundation and wellspring of values from which we draw our values nourishment. There is a need to reaffirm our commitment to the concept of equality amidst diversity, mutual interdependence of humans to promote values that foster peace, humaneness and tolerance in a multi-cultural society. Enabling children to experience dignity, confidence to learn, development of self-esteem and ethics, need. In a competitive environment, to provide access to education through innovations, flexibility in pace

and place and multimedia technological support to all sections of the community, to provide quality education, to ensure learners satisfaction, and the performance of the learning resource centers (study centres) is crucial besides, instructional activities and learning programmes. In the emerging knowledge society ODL institutions well equipped to use new innovative teachnig learning methods, process the materials with the new ICT tools for learning. Learners will be exposed to knowledge based society, which prepares them for the competitive employment market besides ensuring life long learning environment.

References:-

1. Annotated Bibliography on value Education in India. New Delhi: NCERT, 2002.
2. Avinashilingam T.S., Education (Swami Vivekananda). Shri S Ramakrishna Mission Vidhyalaya Tamil Nadu.
3. Bajwa, G.S., Human Rights in India : Implementation and Violations, New Delhi: D.K. Publishers 1996.
4. बाल अधिकार समझौता, नई दिल्ली, यूनीसेफ।
5. Chatterjce P.C., Secular Values for Secular India. New Delhi: Manohar, 1995.
6. डागर, बी०एस० शिक्षा तथा मानव मूल्य: चण्डीगढ़ हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ 1992।
7. Kale, Rekha, Easy Guide to Relationship Building, New Delhi: Diamond Pocket Book, 2006.
8. पाण्डेय, रामशकल, मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्प, मेरठ, आर लाल बुक डिपो, 2000।
9. Ruhela, S.P., Indian Society; Structure and Change (Zvols), Gurgaon: Subhi Publication 2006.
10. Vivekananda, Swami (Edu), Swami Vivekananda on India and her Problems, Calcutta: Advaid Ashram, 1992.

Dr. Sudha Upadhyaya
Assistant Professor
Department of Teacher Education

Israel - Hamas War : Causes & Consequences

Israel - Hamas War : Causes & Consequences

The ongoing armed conflict between Israel and The Palestinian military group lead by Hamas is a burning issue of international politics with wide range of implications for the future course of international politics. It has divided the world into two groups one supporting Hamas and the other sideng with Israel. Human rights violations are taking place from both the sides on a large scale and thousands of people have lost their lives and property so far. It is therefore, worthy to examine the root causes of the conflict and its consequences for the future course of international politics.

Beginning of the current phase of conflict

The current phase of Israel - Hamas armed conflict began on October 7, 2023 when the Hamas lead Palestinian militants launched a multi-pronged invasion of southern Israel from the Gaza strip. The surprise attack comprised a barrage of rockets, while around 3000 militants breached the Gaza-Israeli barrier and attacked Israeli military bases and civilian population Centres. At least 846 Israeli civilians and 416 soldiers and police were killed during the attacks and an estimated 240 Israelis and foreign nationals were taken as hostages to the Gaza strip. Israeli women and girls were repeatedly raped, assaulted and mutiated by Hamas militants.

According to the Hamas, its attack was in response to the blockade of the Gaza strip, the expulsion of illegal Israeli settlements, rising Israli settler violence and recent escalations. The response of the Israel was quick and harsh. After clearing Hamas militants, the Israeli military responded by conducting an extensive aerial attacks. Bombs were dropped on Gaza targets causing heavy civilian deaths. It also imposed a total blockade of Gaza strip. The stated goal of Israel was has been to free hostages taken by Hamas militants and eliminate Hamas military capabilities.

Roots of the Problem

The Israel - Palestinian conflict can be traced back to the late

nineteenth century when Zionist sought to establish a homeland for the Jewish people in ottoman controlled Palestine, a region roughly corresponding to the land of Israel in Jewish tradition.
The Balfour Declaration of 1917, issued by the British Government endorsed the idea of Jewish homeland in Palestine, which led to an influx of Jewish immigrants to the region. Following world war-II and the Holeraust, international pressure mounted for the establishment of a Jewish state in Palestine. In 1947 the United Nations adopted the Resolution 181, known as the Palestinian plan, which sought to divide the British Mandate of Palestine into Arab and Jewish stabs.
While the state of Israel was established on 15th May 1948 and admitted to the United Nations, a Palestinian state was not established. The remaining territories of pre-1948 Palestine, the west bank including the Jerusalem and Gaza strip were administered from 1948 to 1967 by Jordan and Egypt respectively.
Since the occupation of these territories by Israel in 1967, the international community has upheld the need for implementation of Security concil Resolutions 242 and 338, which call for withdrawal of Israel from the occupied territories.

Peace Efforts

The Palestinian liberation organization (PLO), representing the Palestinian people, and the Government of Israel since 1993, aimed at ending decades of armed conflate through implementation of the two state solution. The Period since 1993 saw the Israeli military withdrawal from some parts of the 'Occupied Palestinian Territory and the establishment of the 'Palestinian National Authority by the PLO in 1994 to assume the tasks of government in these areas. The international community was quick to support Palestinian State building and development efforts with financial resources and technical assistance to public and private sector institutions.
However, the intensification of the conflict and the black political horizon since september 2000, Gaza's blockade since June 2007, the tightening of the Israeli movement restrictionist the OPT Which has been declared as a 'Flagrant Violation of international law by the security council resolution 2334 (23 Dec. 2016) disrupts the peace process and threaten the Palestinian state formation process.
Nevertheless, the legitimacy of Palestinian statehood, long upheld by the United Nations General Assembly, was given additional support by security council Resolution 1397 of 2002, which affirmed the international community vision of two stabs, Israel and Palestinian, living side by within secure and recognized boarders. This global consensus has since become one of the major goals of initiatives to achieve a permanent peace agreement.

The Consequences

The Present Ongoing conflate has had disastrous consequences so far. According to the United Nations Report around 1.9 million Palestinians, more than 84% of Gaza's population and around 5 lakh Israelis have been internally displaced. The war has led to a severe humanitarian crisis in Gaza. The health system is in a state of partial collapse. Most hospitals are out of service. There are acute shortages of drinking water, food, fuel and medical supplies.
The UN has warned of the immediate possibility of starvation and spread of disease in the region due to the cut off of water, fuel, food and electricity by Israel. The United Nations resolutions calling for an immediate and indefinite cease-fire has been violated by United States saying that such a cease-fire would unduly benefit Hamas and lead to further conflict.
Thus there seems to be no immediate end to the Israel. Hamas war with disastrous consequences for the world peace and security.

Prof. U.K. Jha
Head, Department of
Political Science

Career Opportunities after doing Graduation/Post Graduation In Computer Application

Beginning your journey to pursue a Bachelor/Master of Computer Applications (BCA/MCA) degree open doors to a field of unparalleled opportunities in the evolving field of information technology. The graduate/postgraduate program, spanning three/two years in Indian Universities, meticulously combines theoretical foundations with hands-on practical knowledge, equipping aspiring IT professionals with a diverse skill set. As the digital landscape advances. the demand for proficient individuals with BCA/MCA qualifications is reaching unprecedented heights, leading to a number of jobs after BCA/MCA.

BCA/MCA graduates/postgraduates find themselves at the crossroads of multiple career options, each leading to potential success. The industry's hunger for well-trained IT professionals increases the BCA/MCA job opportunities.

Career Options After MCA

Following is a list of some great Job positions after BCA/MCA that you can opt:

1. Software Developer
2. Hardware Engineer
3. Database Engineer
4. Cloud Architect
5. Data Scientist
6. Business Analyst
7. Technical Writer
8. Web Designer/Developer
9. IT Architect
10. Software Consultant
11. Manual Tester
12. Troubleshooter
13. Network Engineer
14. Social Media Manager
15. Ethical Hacker
16. Quality Assurance Analyst
17. Project Manager
18. Systems Analyst
19. Software Engineer
20. Database Administrator
21. Cloud Engineer
22. UX Designer

1. Software Developer

As a software developer, you would have a central role in building, testing, installing, and maintaining software systems for your clients. You would apply your analytical prowess and problem-solving techniques to meet the

specific needs of a business or customer. Software developers are as much engaged in recommending upgradations in existing programs than they are in making all the application system pieces work together.

2. Hardware Engineer

Hardware engineers take care of the crucial physical components of computers. They come up with innovative and functional designs for computers and other related equipment. Additionally, they supervise the production process, testing, installation, and repairs of the building blocks. Computer systems, chips, circuit boards, keyboards, routers, and printers are some examples of hardware parts. Ensuring the proper internet functioning is another responsibility of these IT professionals.

3. Database Engineer

As a database administrator or engineer, you would be tasked with creating and managing databases, which store and organize data. Besides building new databases, you would also configure existing systems and ensure that everything remains functional. Typically, database job openings require a sound working knowledge of SQL and analytics.

4. Cloud Architect

Cloud technology offers flexible and affordable storage options to both companies and individuals. As more and more users move to cloud storage, the demand for cloud architects is also on the rise.

If you decide to go for a career in cloud technologies, you would be handling massive amounts of data. And your primary duties would be to design, develop, and maintain remotely located servers that house this data.

5. Data Scientist

Businesses want to utilize and benefit from the enormous

mounds of data generated every day. And data scientists assist the management by providing insights and lending structure to the decision-making process which makes data scientists more valuable to the company.

6. Business Analyst

Business analysts assess business models and their technology integration by analyzing the processes and systems in place. Critical thinking, problem-solving capabilities, and knowledge of analytical techniques are a must for these jobs.

7. Technical Writer

If you are someone with a flair for writing, you can combine your creative talent with your BCA/MCA background to get hired as a technical writer. You would use your written communication skills to convey complex information simply. This documentation may be in the following formats:

- Product descriptions
- Design specifications
- User manuals and guides
- White papers and articles

8. Web Designer/Developer

Web designers/developers enable back end functionality and also ensure that the front end looks appealing. After all, your customers can judge your products and services based on what they see on the internet. Application. development is another potential occupation with similar prerequisites.

9. IT Architect

IT Architect is one of the many pivotal job roles in an organization. Those who are fond of getting behind the workings of application systems can consider taking the job of an IT architect.

The responsibilities would include reviewing and analyzing the infrastructure and suggesting changes to optimize performance.

10. Software Consultant

A software consultant is another expert level job profile that comprises giving recommendations about software. These specialists are generally hired on a project basis. They know more than one computer language and guide businesses towards solutions that optimize their software technology efforts.

12. Troubleshooter

Troubleshooters resolve roadblocks in the functioning of both software and hardware. They also possess adequate knowhow of networking and contribute to timely project delivery to the client. So, the role of troubleshooters is versatile.

13. Network Engineer

Tech firms employ network architects to maintain network connectivity in terms of data, calls, videos, and wireless services. And enterprises with massive IT infrastructures need trained professionals to support in- house tasks as well. So, network engineers are also required to undertake day-to-day maintenance and administration duties.

14. Social Media Manager

Social media forms a significant portion of the neganization's contact with its stakeholders, including the customers. Companies look for specialists who are adept at navigating this virtual world when it comes to utilizing social channels to manage a brand's digital image. Social media managers are responsible for partnering with other nds in addition to creating and sharing content on
platforms such as Instagram, Facebook, Twitter, etc. Hence, they strategize, execute, and optimize a vital component of the overall marketing plan.

15. Ethical Hacker

Ethical hackers access computer systems and networks without proper authorization. They do so to find security vulnerabilities and to protect the owners from malicious attacks. It is the perfect job for individuals who love challenges.

16. Quality Assurance Analyst

As a quality assurance analyst, you use your logical ability and reasoning skills to evaluate IT systems. QA analysts are individuals who can identify the strengths and weaknesses of software, devise innovative solutions, and communicate them effectively to the relevant teams throughout the development life cycle.

17. Project Manager

Computer science graduates and MCA holders with 5-8 years of experience can be hired for managerial positions directly.

18. System Analyst

The system analysts are responsible for creating a highly efficient and smooth user experience with the aid of program optimizations. They are also responsible for providing improved business solutions that navigate through the need of developers and clients.

19. Software Engineer

The role of a Software Engineer is required for every business that is there. They are responsible for building robust software for the clients by performing multiple maintaining the software applications. testing and operations. They are also responsible for maintaining the software applications.

20. Database Administrator

The world runs on data, and the database administrator works in managing the data systems. Their role is crucial as they ensure the proper functioning of all modules. If the backend system will not be maintained, the whole system could get triggered and the work could get delayed by constant time and money to the organizations.

21. Cloud Engineer

The organizations are turning their way towards adopting the cloud for storage and privacy purposes. Big companies like Google, Dropbox. and Microsoft are providing cloud-based services. Cloud computing allows for building inexpensive ways to build a computing infrastructure.

22. UX Designer

Organizations require website to look flawless and have a smooth and error-free user experience happens by the efforts of UX Designer. The UX Designers use various tools such as Adobe Photoshop and others tools and creatively use them for creating beautiful layouts as well.

Pankaj Kumar Gupta
Head, BCA Department

The Essential Constituents of our Food

There are necessary air, water and food for the **life.**
There are five main constituents of **our food.**

1. **Proteins: -** body-building foods
2. **Carbohydrates: -** energy giving foods
3. **Fats: -** energy giving foods
4. **Vitamins: -** protective foods
5. **Minerals: -** protective food

1. Proteins:

Proteins are body-building food. They are essential for the growth and repair of the body tissues. They occur in all living cells. Without proteins life would not be possible.

Proteins are polymers of α-amino acids. Proteins are formed by different combinations of 20 α- amino acids. Each amino acid contains carbon, nitrogen, hydrogen and oxygen. Some proteins contain contain elements like sulphur, phosphorus and iron as well.

- The 9 essential acids that the human body does not synthesize are: histidine, isoleucine, leucine, lysine, methionine, phenylalanine, threonine, tryptophan, and valine. So, they must come from the diet.
- Proteins also help to repair damaged body tissues. Proteins can also be utilized to provide energy during starvation. One gram of protein when burnt yields about 4 calories. Proteins also work as neurotransmitters.

2. Carbohydrates:

They are the chief source of energy in our diet. They are chemical compound containing carbon, hydrogen and oxygen. They provide instant energy to our body.
Carbohydrates are of three types-

i) Sugars ii) Starch iii) Cellulose

Sugars are called simple carbohydrates. They provide instant energy. Sugars are present in milk and fruits like grapes, banana, sugarcane and beetroot.

Starch is found in potato, rice wheat, maize, etc. Starch is the

main carbohydrate in out diet, since it is present in cereals, which form the major part of our diet.

Carbohydrates are broken down to produce carbon dioxide, water and energy. This process is known as oxidation and can be represented in the form of a chemical reaction:

Oxidation of Foodstuffs takes place in our body during the respiration process.

Respiration takes place in our body at the normal body temperature, i.e., 37^0C.

A calorie is defined as the amount of heat required to raise the temperature of one gram of water by 1^0C.

3. Fats:

Fats like carbohydrates are energy-giving foods but are gram of fat when burnt gives 9 calories of energy. Fats are made up of carbon, hydrogen and oxygen.

Fats can be classifies as animal fats and vegetable fats depending on their source. butter, ghee, milk fish, meat, etc., are sources of animal fat while nuts and vegetable oils like groundnut oil, sunflower oil, mustard oil and sesame oil are sources of vegetable fat.

Fats help in the absorption of vitamins A, D, E and K as these vitamins are soluble in fats.

4. Vitamins:

They are protective foods. Vitamins are necessary for normal growth and health. Vitamins do not provide energy like the carbohydrates and fats. They are therefore required in very small quantities in many metabolic processes of the body and are essential for proper utiliztion of carbohydrates, fats, proteins and minerals by the body. The various vitamins are named as vitamins A, B, C, D, E, K, etc. most of the vitamins cannot be produced by our body. They must, therefore, be supplied by our diet. Since no single food item contains all the vitamins, we must eat a variety of foods to obtain all the vitamins our body requires.

Vitamins Are grouped into two categories:

1. **Fat-soluble vitamins (Vitamins A, D, E, and K) and**
2. **Water-soluble vitamins (Vitamins B and C)**

There are 13 essential vitamins.

5. Minerals:

In addition to carbohydrates, fats, proteins and vitamins, our body also requires minerals for its growth and proper functioning. Both vitamins and minerals are required in small quantities by our body. 29 elements found in our body. We get many minerals from plants which in turn absorb them from the soil. Salts or calcium are needed for the formation of strong bones and teeth. Iron is required to from gaemogobin which transports oxygen to the tissues. Deficiency of minerals in our diet lads to deficiency diseases.

Iron is the main component of hemoglobin that transports oxygen to tissues. Calcium is required from the formation of bones and teeth. Likewise, each of the minerals has a role in maintaining body functions.

Water:

Water constitutes 70% of our body and is required for all the biological processes in our body. It is essential for transporting food, hormones and other nutrients throughout the body. It flushes out toxins and other wastes out of the body in the from of urine and sweat. It regulates body temperature.

Roughage:

The fiber content of our diet that help in easy movement of food in the alimentary canal is known as roughage. It is essential for the proper functioning of the digestive system. Fruits, vegetables, corn, salads and cereals are highly fibrous foods.

Dr. G.K. Bansal
Assistant Professor
Department of Chemistry

Dr. Jagriti Singh
Assistant Professor
Department of Chemistry

Importance of E-Commerce

- Electronic commerce or e-commerce is a business model that lets firms and individuals buy and sell things over the Internet.
- Propelled by rising smart phone penetration, the launch of 4G networks and increasing consumer wealth, the Indian e-commerce market is expected to grow to US$ 200 billion by 2026 from US$ 38.5 billion in 2017.
- India's e-commerce revenue is expected to jump from US$ 39 billion in 2017 to US$ 120 billion in 2020, growing at an annual rate of 51%, the highest in the world.
- The Indian e-commerce industry has been on an upward growth trajectory and is expected to surpass the US to become the second-largest e-commerce market in the world by 2034.

Advantages of e-Commerce

- The process of e-commerce enables sellers to come closer to customers that lead to increased productivity and perfect competition. The customer can also choose between different sellers and buy the most relevant products as per requirements, preferences, and budget. Moreover, customers now have access to virtual stores 24/7.
- e-Commerce also leads to significant transaction cost reduction for consumers.
- e-commerce has emerged as one of the fast-growing trade channels available for the cross-border trade of goods and services.
- It provides a wider reach and reception across the global market, with minimum investments. It enables sellers to sell to a global audience and also customers to make a global choice. Geographical boundaries and challenges are eradicated/drastically reduced.
- Through direct interaction with final customers, this e-commerce process cuts the product distribution chain to a significant extent. A direct and transparent channel between the producer or service provider and the final customer is made. This way products and services that are created to cater to the individual preferences of the target audience.
- Customers can easily locate products since e-commerce can be one store set up for all the customers' business needs
- Ease of doing business: It makes starting, managing business easy and simple.
- The e-commerce industry has been directly impacting the micro, small & medium enterprises (MSME) in India by providing means of financing, technology and training and has a favorable cascading effect on other industries as well.

Disadvantages of e-Commerce

- There is lesser accountability on part of e-commerce companies and the product quality may or may not meet the expectations of the customers.
- It depends strongly on network connectivity and information technology. Mechanical failures can cause unpredictable effects on total processes.
- Definite legislations both domestically and internationally to regulate e-commerce transactions are still to be framed leading to lack of regulation of the sector.
- At times, there is a loss of privacy, culture or economic identity of the customer.
- There is a chance of fraudulent financial transactions and loss of sensitive financial information.
- The Internet is borderless with minimum regulation, and therefore protecting intellectual property rights (IPR) on the Internet is a growing concern. There are currently several significant IPR issues including misuse of trademark rights.

Government Initiatives Regarding e-Commerce in India

- In February 2019, a draft National e-Commerce policy has been prepared and placed in the public domain, which addresses six broad issues of the e-commerce ecosystem viz. e-commerce marketplaces; regulatory issues; infrastructure development; data; stimulating domestic digital economy and export promotion through e-commerce.
- The Department of Commerce initiated an exercise and established a Think Tank on 'Framework for National Policy on e-Commerce' and a Task Force under it to deliberate on the challenges confronting India in the arena of the digital economy and electronic commerce (e-commerce).

- The Reserve Bank of India (RBI) has decided to allow "interoperability" among Prepaid Payment Instruments (PPIs) such as digital wallets, prepaid cash coupons and prepaid telephone top-up cards. RBI has also instructed banks and companies to make all know-your-customer (KYC)-compliant prepaid payment instruments (PPIs), like mobile wallets, interoperable amongst themselves via Unified Payments Interface (UPI).
- FDI guidelines for e-commerce by DIPP: In order to increase the participation of foreign players in the e-commerce field, the Government has increased the limit of foreign direct investment (FDI) in the e-commerce marketplace model for up to 100% (in B2B models).
- Government e-Marketplace (GeM) signed a Memorandum of Understanding (MoU) with Union Bank of India to facilitate a cashless, paperless and transparent payment system for an array of services in October 2019.
- The heavy investment of Government of India in rolling out the fibre network for 5G will help boost e-commerce in India
- In the Union Budget of 2018-19, the government has allocated Rs 8,000 crore (US$ 1.24 billion) to BharatNet Project, to provide broadband services to 150,000-gram panchayats.

Way Ahead

- e-Commerce has become an important part of many multilateral negotiations such as Regional Comprehensive Economic Partnership (RCEP), WTO, BRICS etc.
- e-Commerce still faces various issues like international trade, domestic trade, competition policy, consumer protection, information technology etc. As a growing sector with huge interest from both domestic and international players, it becomes pertinent to regulate it keeping in mind the interest of both entrepreneurs and consumers. A conducive environment and a level playing field should be encouraged.
- Policymakers should also be mindful of shaping a vibrant domestic industry. A comprehensive policy is of utmost importance to reflect India's position in both domestic and international or multilateral forums.

E Commerce is all about User Experience

Getting on with your product development is not an easy task. It is imperative to have a narrative for each of the business cases. This is the part of e Commerce UX in essence. It allows you to see how the user starts off a process, what are the forms/buttons/boxes they will go on clicking, tapping or typing and how they will reach to the end of the process.

This is called as prototyping which is usually part of the e Commerce design elements. It helps in giving businesses a graphical layout of all the stated use cases.

By having mock-up screens and user flows, companies get the much-needed visibility about the product (how it will look and feel).They can also identify any edge cases or corner scenarios that can be catered for. This will save precious time, instead of going through development and finding out that a certain aspect is not taken care of. You want to know about it now, than to have users be on your solution and find out about the issue. Think of saving money and your reputation in this phase.

Custom e Commerce Development or exploring existing e Commerce Platforms

It is true that there is nothing like getting your own customized e Commerce solution for your business.

But there a lot of existing e Commerce platforms that help you showcase your products to the world. You don't even have to worry about logistics and shipping aspects with these e-commerce marketplaces. All you need to do is pay a fee to the commercial shopping cart systems against every purchase. So that your products are still accessible to users across the world.

Once they get results, they can transition towards custom e Commerce solution later on. However, the decision of going solo or attaching yourself with an existing platform, is dependent on what your plans are for your company. At times, you don't want to be too ambitious in online retail.

But still take a small risk by having our own website and starting your e Commerce business for a smaller area within your reach is the way to go. This is usually a workable option selected by majority of businesses. It helps you test the waters and also see how you can bank on this opportunity in the long-run.

Mayank Sharma
Assistant Professor
Department of BCA

Importance of Artificial Intelligence

Artificial intelligence, or AI, refers to the simulation of human intelligence by software-coded heuristics. Nowadays this code is prevalent in everything from cloud-based, enterprise applications to consumer apps and even embedded firmware.

The most popular applications are OpenAI's DALL-E text-to-image tool and ChatGPT. The widespread fascination with ChatGPT made it synonymous with AI in the minds of most consumers. However, it represents only a small portion of the ways that AI technology is being used today.

The ideal characteristic of artificial intelligence is its ability to rationalize and take actions that have the best chance of achieving a specific goal. A subset of artificial intelligence is machine learning (ML), which refers to the concept that computer programs can automatically learn from and adapt to new data without being assisted by humans. Deep learning techniques enable this automatic learning through the absorption of huge amounts of unstructured data such as text, images, or video.

When most people hear the term artificial intelligence, the firs thing they usually think of is robots. That's because big-budget films and novels weave stories about human-like machines that wreak havoc on Earth. But nothing could be further from the truth.

Artificial intelligence is based on the principle that human intelligence can be defined in a way that a machine can easily mimic it and execute tasks, from the most simple to those that are even more complex. The goals of artificial intelligence include mimicking human cognitive activity. Researchers and developers in the field are making surprisingly rapid strides in mimicking activities such as learning, reasoning, and perception, to the extent that these can be concretely defined. Some believe that innovators may soon be able to develop systems that exceed the capacity of humans to learn or reason out any subject. But others remain skeptical because all cognitive activity is laced with value judgments that are subject to human experience.

As technology advances, previous benchmarks that defined artificial intelligence become outdated. For example, machines that calculate basic functions or recognize text through optical character recognition are no longer considered to embody artificial intelligence, since this function is now taken for granted as an inherent computer function.

AI is continuously evolving to benefit many different industries. Machines are wired using a cross-disciplinary approach based on mathematics, computer science, linguistics, psychology, and more.

Applications of Artificial Intelligence

The applications for artificial intelligence are endless. The technology can be applied to many different sectors and industries. AI is being tested and used in the healthcare industry for suggesting drug dosages, identifying treatments, and for aiding in surgical procedures in the operating room.

Other examples of machines with artificial intelligence include computers that play chess and self-driving cars. Each of these machines must weigh the consequences of any action they take, as each action will impact the end result. In chess, the end result is winning the game. For self-driving cars, the computer system must account for all external data and compute it to act in a way that prevents a collision.

Artificial intelligence also has applications in the financial industry, where it is used to detect and flag activity in banking and finance such as unusual debit card usage and large account deposits—all of which help a bank's fraud department. Applications for AI are also being used to help streamline and make trading easier. This is done by making supply, demand, and pricing of securities easier to estimate.

Types of Artificial Intelligence

Artificial intelligence can be divided into two different categories: weak and strong. Weak artificial intelligence embodies a system designed to carry out one particular job. Weak AI systems include video games such as the chess example from above and personal assistants such as Amazon's Alexa and Apple's Siri. You ask the assistant a question, and it answers it for you.

Strong artificial intelligence systems are systems that carry on the tasks considered to be human-like. These tend to be more complex and complicated systems. They are programmed to handle situations in which they may be required to problem solve without having a person intervene. These kinds of systems can be found in applications like self-driving cars or in hospital operating rooms.

Artificial General Intelligence (AGI), refers to a proposed type of artificial intelligence that has the ability to understand, learn, and apply its intelligence to a wide range of problems, much like a human being. Unlike narrow or weak AI, which is designed to perform specific tasks (like image recognition, language translation, or playing chess), AGI can theoretically perform any intellectual task that a human being can--and more.

Special Considerations

Machines can hack into people's privacy and even be weaponized. Other arguments debate the ethics of artificial intelligence and whether intelligent systems such as robots should be treated with the same rights as humans.

Self-driving cars have been fairly controversial as their machines tend to be designed for the lowest possible risk and the least casualties. If presented with a scenario of colliding with one person or another at the same time, these cars would calculate the option that would cause the least amount of damage.

Another contentious issue many people have with artificial intelligence is how it may affect human employment. With many industries looking to automate certain jobs through the use of intelligent machinery, there is a concern that people would be pushed out of the workforce. Self-driving cars may remove the need for taxis and car-share programs, while manufacturers may easily replace human labor with machines, making people's skills obsolete.

Artificial intelligence can be categorized into one of four types:

- **Reactive AI** uses algorithms to optimize outputs based on a set of inputs. Chess-playing AIs, for example, are reactive systems that optimize the best strategy to win the game. Reactive AI tends to be fairly static, unable to learn or adapt to novel situations. Thus, it will produce the same output given identical inputs.
- **Limited memory AI** can adapt to past experience or update itself based on new observations or data. Often, the amount of updating is limited (hence the name), and the length of memory is relatively short. Autonomous vehicles, for example, can "read the road" and adapt to novel situations, even "learning" from past experience.
- **Theory-of-mind AI** are fully-adaptive and have an extensive ability to learn and retain past experiences. These types of AI include advanced chat-bots that could pass the Turing Test, fooling a person into believing the AI was a human being. While advanced and impressive, these AI are not self-aware.
- **Self-aware AI,** as the name suggests, become sentient and aware of their own existence. Still in the realm of science fiction, some experts believe that an AI will never become conscious or "alive".

Sachin Agrawal
Assistant Professor
Department of BCA

NEED FOR IMPROVING QUALITY IN TEACHER EDUCATION

What is the nature of this challenge in 21st Century and the need for improving quality at present ? If we look at the present scenario of B.Ed. Colleges, in India we find that they are suffering from following aliments :-

1. Majority of B. Ed. Colleges in suffering from dearth of financial resources or physical resources. Especially in big cities they are sharing their building with schools and with other educational institutions. There are limited facilities. They have to finish there multiple activities in the allotted time, where there are shifts for various institutions. There is no academic freedom, as well their working is strictly regulated by the University and the State. They are further restricted by the local managerial bodies.
2. Because of his strict control, they lack flexibility as regards inclusion of subjects, choosing core subjects and non-core optional subjects, time schedule, work allotment for teachers, undertaking of research and extension activities and so on.
3. Due to rigidity and a very short duration compared to the activities involved in the B.Ed. course, and innovative approaches is generally absent. It is exam oriented and it aims at mass education.
4. All the cream of student community goes to other high valued professions such as engineering, Management, Technology & Medical and because of low merit norms, only 'no other go' students enter the B.Ed. colleges, At present for reserve categories only 40% of marks at degree level are required for admission.
5. Teaching learning process mainly depends on oral communication skills. At present there is no provision of weight age for the skill at the entry level. Hence ineffective communications or handicapped communications (students with low voice defect in speech and dialer) enter the profession. As a result whole learning – learning process becomes dull and boring and inaccessible for school learners.
6. Most alarming ailment is that in majority of B.Ed. Deptt. / Colleges, age-old methods of teaching learning are still followed. Self-learning methods, project, creativity, multi-media methods, modern management techniques & personality & leadership development techniques are totally absent in the field of teacher training. How can we avoid all these drawbacks ? I think quality improvement is the only answer to all these problems.

RISING DEMAND FOR QUALITY :-

Quality has become the key word in current educational scenario in India. If we have to survive in this highly competitive and market oriented world, where boundaries of the countries are fast diminishing, then there is no existence without quality.

Everybody demands quality from household product's to the service products. But there is emotional market value to our products & to our services as teaching. In the last two decades there is a rising demand for the quality due to following considerations :-

1. People firmly believe that higher education provides the means for upward economic social mobility.
2. In a highly competitive environment, students are attracted to the best quality institutions that are available.
3. Funding bodies of education are asking for commitment to quality before providing assistance.
4. Now there is more awareness in the society that like other form of society, education must be responsible to the society that supports it.
5. Due to advance of information technology is every field, the concept of quality expected from educational institutions and teacher's working there in has undergone a radical change. Connotations & denotations of the concept of quality are extending day by day.
6. As a result of privatization, only quality institution are supported by society even with rising cost but in return of its monetary investment, society demands exclusive quality products.

Due to Globalization, foreign universities & educational institutions are entering the vast Indian market at an increasing rate. For competing with them and for attracting our own as well as foreign student's quality enhancement is the only instrument.

Due to liberalization and industrialization, there is a demand for a variety of new skills, techniques & knowledge related to it. Student wants a vide range of higher education institutions which can satisfy their post changing market oriented needs. Hence there is a need for

standard, quality and self-supporting institutions. Now let us understand what the exact meaning of quality is.

MEANING OF QUALITY :-

Quality itself is an elusive attribute, an attribute of values, which can't be easily measured or quantified, it is difficult to define.

According to Webster's Dictionary quality means degree of excellence and superiority in kind in the field of education, while discussing quality the focus of students may be, the facilities provided, of teachers on the teaching/ learning process, of management and parents on the scores of grades achieved and of prospective employers on the nature of the output.

Green and Harvey (1993) have identified 5 approaches to the viewing of quality in higher education. Firstly, quality may be viewed in terms of exceptional (higher standards.) and secondary in term of consistency (without defects and getting it right the first time as fitness for purpose, like value for money and as a transformative (transformation of the participant).

Quality is defined "In the totality of features and characteristics of a product or service that bear on its ability to satisfy stated or impiled needs (Bureau of Indian standards (1988).

For maintenance of quality it is necessary to device and accountability-evaluation system, which shifts the emphasis from legal accountability to moral accountability. The main purpose of an accountability system is not to show that the things are not done properly nut to facilitate the process to improvement of performance. Hence accountability procedure should not result in the feeling of failure but should generate a felling of responsibility. The quality of education imparted by an institution is dependent on the performance of its teachers. The concept of academic freedom is related to the performance of the teachers. Tight (1988) points out that academic freedom refers to the freedom of individual academics to study, tech, research and publish without being subject to or cause under interference. It is privilege that carries with it the responsibility of ensuring that it is used primarily for the improvement of the quality of education, the good of the parents university and the welfare of academic community.

It is rightly pointed out by Henderikx (1992), In the field of education the assessment of quality of education cannot be only student oriented, for It is mainly society that pays for the operation of educational system. The views of the other constituents of the society therefore have to be considered. Let us see which the other constituents of society are.

Beside students, teaching and non-teaching staff, parents, funding agencies for education and employers should also be taken into consideration while striving for quality. With reference to these constituents, quality for teaching education should be defined so that all of them will support the concept of quality education. Hence definition of quality, which is adopted by most educationists, is that of 'fitness for purpose'. In other words it means the ability to meet the stated purpose for which the service was offered. Unless the objective of an institution or a program are clearly defined, it would difficult to assess if quality is being maintained or not.

SUGGESTIONS FOR IMPROVING QUALITY OF TEACHER EDUCATION:-

1. In spite of affiliation, autonomy should be given for curricular & co-curricular activities.
2. A lot of option for core-subjects and non-core subjects should be there. Practical should be need best in relation to school requirement, social service & works experience relate to far-reaching goals for the battlement of communality.
3. Apart from these criteria, NAAC has also identified other good practices, which add to the academic quality of an institution and they are as follows :-

- Educational innovations.
- Working with specific mission and goals
- Master plan for the institutional growth
- Feedback from Stake holders for improvement of institutional functions.
- Innovations in Management and Communications.
- Quality enhancement strategies.

4. Peer group assessment is a novel idea in teacher-education. Students can be very well understand the competency of the teachers. The service courses should be conducted to teacher-educators, so that the classroom may be improved. The methods and subjects taught during the in-service courses should be helpful to teachers to improve the quality in teacher-educator.

Dr. K. C. Gaur
Asst. Prof. , Faculty of Teacher Education

The Quantum Revolution : Unveiling the Mysteries of the Microscopic Universe

Embarking on a journey into the microscopic universe, quantum physics has become the bedrock of a revolutionary understanding of reality. At its core lies the profound and perplexing principle of wave-particle duality, challenging the very foundations of classical physics and our intuitive notions of the behavior of matter and energy. This duality gives rise to a plethora of mind-bending phenomena, among which superposition takes center stage. Superposition allows particles to exist in multiple states simultaneously, a concept epitomized by Schrödinger's iconic thought experiment involving a cat in a box. This experiment, while whimsical in nature, serves as a poignant metaphor for the fundamental ambiguity of quantum states before observation collapses them into a defined reality. Entanglement, another cornerstone of quantum mechanics, introduces a level of interconnectedness between particles that transcends spatial constraints. The state of one particle instantaneously influences the state of its entangled partner, a phenomenon that challenges our classical notions of cause and effect and has profound implications for the nature of reality itself.

Moving beyond the conceptual foundations, quantum technologies have emerged as a frontier with transformative potential. Quantum computing, in particular, stands out as a beacon of innovation, leveraging the principles of superposition and entanglement to perform complex calculations at speeds exponentially faster than classical computers. The fundamental unit of quantum computation, the qubit, holds the key to the unparalleled computational power of quantum systems. Qubits, unlike classical bits, can exist in multiple states simultaneously, thanks to superposition, and can be entangled with other qubits, enabling quantum computers to process vast amounts of information in parallel. The promise of quantum computing extends across various domains, from cryptography, where it poses a potential threat to currently secure encryption methods, to drug discovery, where simulations of molecular interactions could be performed with unprecedented accuracy and efficiency. The potential for solving optimization problems previously deemed insurmountable could revolutionize fields such as logistics, finance, and materials science.

Despite the tantalizing promise of quantum technologies, the quantum world is not without its challenges. Quantum systems are notoriously delicate and prone to decoherence, a process in which the fragile quantum states lose their coherence due to interactions with the external environment. Maintaining the integrity of quantum information and preventing decoherence present formidable engineering challenges that researchers are actively addressing. The need for precise control and isolation of quantum systems has spurred advancements in quantum error correction and the development of novel materials and technologies to shield quantum states from external interference.

As we stand on the cusp of a quantum revolution, the physical sciences are undergoing a profound paradigm shift. The exploration of the quantum world not only challenges our preconceptions about the nature of reality but also holds the promise of unlocking new frontiers in technology, computation, and our understanding of the universe itself. The enigmatic principles of quantum mechanics, once considered abstract and theoretical, now offer a tangible path toward a future where the boundaries between the possible and the impossible are blurred. Quantum entanglement and superposition are not merely esoteric phenomena but represent the very fabric of reality, weaving together a tapestry of possibilities that extend far beyond our classical intuitions.

The philosophical implications of quantum mechanics are profound. The deterministic world view of classical physics, where every event has a clear cause and effect, gives way to a probabilistic and inherently uncertain quantum reality. The act of observation

itself becomes entwined with the nature of the observed, leading to questions about the role of consciousness in shaping our understanding of the quantum world. The renowned physicist Niels Bohr captured this sentiment with his famous quote, "Anyone who is not shocked by quantum theory has not understood it." Indeed, the quantum world challenges our most fundamental assumptions about the nature of existence, inviting us to question the very fabric of reality. Beyond the immediate technological and philosophical implications, the quest to understand and harness the quantum world is driven by a deep curiosity about the fundamental nature of the universe. The exploration of the microscopic universe has revealed a tapestry of complexity and interconnectedness that defies our classical intuitions. The interplay of particles at the quantum level, their ability to exist in multiple states, and the entanglement that binds them together present a picture of reality that is far more intricate and nuanced than previously imagined. The journey into the quantum realm is a testament to the resilience of scientific curiosity, pushing the boundaries of human knowledge and inviting us to contemplate the mysteries that lie at the heart of existence. As quantum technologies continue to advance, the ethical implications of wielding such unprecedented power over the building blocks of reality come to the forefront. The ability to manipulate the quantum states of particles opens the door to possibilities that were once confined to the realm of science fiction. The concept of designer particles and the potential for precision editing of the quantum world raise ethical questions about the responsible use of such technology. As we gain the capability to shape the very fabric of reality, considerations about the unintended consequences of quantum manipulation, the potential for misuse, and the ethical boundaries of quantum engineering become crucial.

Reference:
1. The QuanTum RevoluTion book by Kent A. Peacock, ISSN: 1559–5374 (2008).
2. Quantum Physics and the Quantum World Unveiling the Mysteries Book by Turker Benson.

Deekshit Kumar & Yajvendra Kumar
Assitant Professor, Department of Physics

The Crucial Role of Pedagogy in Mathematics Education for Human Welfare

Mathematics, often regarded as the language of science and the foundation of countless disciplines, plays a pivotal role in shaping our understanding of the world. However, the significance of mathematics transcends its practical applications; it serves as a vehicle for critical thinking, problem-solving, and intellectual growth. In the realm of education, the pedagogy of mathematics holds profound importance in cultivating mathematical literacy, fostering cognitive development, and promoting human welfare. This article delves into the vital role of pedagogy in mathematics education and its far-reaching implications for individual empowerment and societal advancement.

1. **Building Mathematical Literacy:**
   - Effective pedagogy is essential for nurturing mathematical literacy, enabling individuals to understand, interpret, and apply mathematical concepts in various contexts.
   - A well-designed curriculum, supported by pedagogical approaches such as inquiry-based learning, problem-solving strategies, and real-world applications, enhances students' mathematical reasoning and fluency.
   - By engaging students in active learning experiences and meaningful mathematical tasks, pedagogy fosters a deep conceptual understanding of mathematical principles, empowering learners to become critical thinkers and lifelong problem-solvers.
2. **Fostering Cognitive Development:**
   - The pedagogy of mathematics plays a fundamental role in fostering cognitive development, including skills such as logical reasoning, spatial visualization, and numerical fluency.
   - Scaffolded instruction, differentiated learning

experiences, and collaborative problem-solving activities cater to diverse learning needs and promote cognitive growth among students.
    - Through hands-on exploration, mathematical discourse, and reflective practice, pedagogy stimulates intellectual curiosity, creativity, and metacognitive awareness, laying the foundation for lifelong learning and intellectual empowerment.

3. **Promoting Equity and Inclusion:**
    - Equity-driven pedagogy acknowledges and addresses systemic barriers to mathematical learning, ensuring that all students have access to high-quality mathematical instruction and opportunities for success.
    - Culturally responsive teaching practices recognize students' diverse backgrounds, experiences, and perspectives, fostering a supportive learning environment where every learner feels valued and empowered.
    - By promoting equity and inclusion in mathematics education, pedagogy contributes to breaking down social barriers, reducing educational disparities, and fostering a more equitable and just society.
4. **Empowering Future Innovators:**
    - The pedagogy of mathematics plays a crucial role in nurturing the next generation of innovators, problem-solvers, and leaders in science, technology, engineering, and mathematics (STEM) fields.
    - By cultivating creativity, perseverance, and resilience in mathematical learning, pedagogy prepares students to tackle complex challenges, explore new frontiers, and drive technological advancements that benefit humanity.
    - Project-based learning, interdisciplinary connections, and real-world problem-solving experiences empower students to apply mathematical concepts to address real-world issues and make meaningful contributions to society.
5. **Enhancing Socio-Economic Development:**
    - A strong foundation in mathematics, facilitated by effective pedagogy, is essential for enhancing socio-economic development and promoting human welfare.
    - Mathematical literacy empowers individuals to pursue higher education, gain employment opportunities in STEM-related fields, and contribute to economic growth and innovation.
    - By investing in mathematics education and promoting excellence in pedagogy, societies can unlock human potential, foster a culture of innovation, and build a more prosperous and equitable future for all.

The importance of pedagogy in mathematics education cannot be overstated, as it serves as a catalyst for individual empowerment, cognitive development, and societal advancement. By nurturing mathematical literacy, fostering cognitive growth, promoting equity and inclusion, and empowering future innovators, pedagogy lays the foundation for human welfare and socio-economic development. As educators, policymakers, and stakeholders, we must prioritize the enhancement of pedagogical practices in mathematics education to ensure that every learner has the opportunity to unlock their full potential and contribute to a more equitable, prosperous, and sustainable world.

Gurudatt Sharma
Assistant Professor,
Department of Teacher Education

India's Monetary Policy Framework: Balancing Inflation & Growth

Introduction

In February 2015, the Government of India & the Reserve Bank of India (RBI) entered into a Monetary Policy Framework Agreement, Setting the Stage for a comprehensive approach to managing the country's monetary policy. The primary objective of this framework is to maintain price stability while fostering economic growth. The agreement stipulated that the RBI would set policy interest fates to target inflation rates below 6 percent by January 2016, with a goal of keeping it within 4 percent, plus or minus 2 percent for subsequent years.

Objective of the Monetary Policy Framework:

The core objective of the monetary policy framework is to set the policy (repo) rate based on an assessment of the current and evolving macroeconomic situation and to modulate liquidity conditions to anchor money market rates around the repo rate. The repo rate, in particular, is a pivotal policy tool as changes in it influence the entire financial system, which subsequently affects aggregate demand, making it a key determinant of inflation and growth.

Monetary Policy Committee

The introduction of a Monetary Policy Committee (MPC) in 2016 has been a significant development in India's monetary plicy framework. This committee consists of six members, with the RBI Governor serving as the ex officio chairperson and the Deputy Governor in charge of monetary policy. Additionally, an officer of the RBI nominated by the Central Board and three individuals appointed by the central government, who should have expertise in economics, banking, finance, or monetary policy, make up to committee. The MPC's decision is binding on the RBI, ensuring a more diversified and transparent approach to monetary policy decision-making.

Instruments of Monetary Policy

India employs various instruments for implementing monetary policy

1. **Repo Rate:** The rate at which the RBI lends money to commercial banks in case of a shortfall of funds.
2. **Standing Depoist Facility (SDF) Rate:** A liquidity window allowing banks to park excess liquidity without collateral requirements.
3. **Marginal Standing Facility (MSF) Rate:** An avenue for scheduled banks to borrow overnight from the RBI in emergencies when interbank liquidity dries up.
4. **Bank Rate:** The rate at which the RBI lends funds to commercial banks.
5. **Cash Reserve Ratio (CRR):** A requirement for commercial banks to maintain a minimum amount of deposit reserves with the central bank.
6. **Statutory Liquidity Ratio (SLR):** The minimum percentage of deposits that banks must maintain in the from of liquid cash, gold, or other securities.
7. **Open Market Operations (OMOs[2]):** The purchase or sale of government securities to manage liquidity in the market.

Expansionary and Contractionary Monetary Policy: AND USES OF IS-LM CURVE

1. **Expansionary Monetary Policy:** This policy focuses on increasing the money supply by lowering key interest rates, such as the repo rate. The result is higher market liquidity, encouraging economic activity, and capital investment. It may lead to a decrease in the exchange rate, boosting exports and the balance of trade.
2. **Contractionary Monetary Policy:** A contractionary Policy decreases the money supply by raising key interest rates. This reduction in market liquidity may negatively affect production

Central Govt retained the inflation target and the tolerance band for the next 5 year period - April 1, 2021 to March 31,2026

and consumption , potentially leading to a higher exchange rate, decreased exports, and an impact on the balance of trade.

Current monetary Policy in India:

As of the most recent date available, the policy repo rate stands at 5.4% while the SDF rate is at 5.15%, the MSF rate at 5.65%, and the bank rate at 5.65%. The CRR is set at 4.50%, and the SLR stands at 18.00%. These rates reflect India's current monetary policy stance.

Challenges Ahead:

While the Monetary Policy Framework Agreement and the MPC have laid a strong foundation for India's monetary policy, there are sever al challenges that the country must navigate in the coming years. These include:

Inflation Management: India has faced persistent challenges in managing inflation, particularly in the face of supply-side pressures and global commodity price fluctuations. The MPC's ability to anchor inflation within the target range in crucial.

Economic Growth: Balancing inflation control with the need for economic growth is a delicate task. The MPC must carefully consider the trade-offs between the two objectives.

Global Economic Factors: India's economy is increasingly intertwined with the global economy. External factors, such as changes in global interest rates and trade dynamics, can have a significant impact on domestic monetary policy.

Fiscal Policy Coordination: Effective monetary policy also requires coordination with fiscal policy. The government's budget decisions and spending priorities must align with the monetary policy framework.

Financial Stability: The stability of the financial system is integral to monetary policy. The RBI must monitor and address any systemic risks that may emerge.

Technological Advancements: The rise of fintech and digital currencies may introduce new complexities into the monetary policy landscape.

It is essential for India to continue refining its monetary policy framework and its implementation to address these challenges effectively. Moreover, fostering economic stability, creating an environment conducive to investment, and supporting inclusive growth will be central to the success of the country's monetary policy.

Conclusion:

India's Monetary Policy Framework Agreement and the establishment of the Monetary Policy Committee mark significant steps toward a more transparent and effective monetary policy regime. The Framework's focus on price stability and economic growth while implementing expansionary and contractionary policies demonstrates the country's commitment to achieving balanced and sustainable economic development. As India faces to challenge of controlling inflation while supporting economic growth, the role of its monetary policy framework becomes increasingly vital in ensuring economic stability and prosperity.

Reference

1. https://www.rbi.org.in/scripts/FS Overview.aspx?fn=2752
2. Reserve bank of India
3. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=124605
4. https://dbie.rbi.org.in/DBIE/dbie.rbi?site=home
5. Press Information Bureau Government of India (Ministry of Finance)

Himanshu Kumar
Assistant Professor
Head, Economics Department

Trends In Global Human Resource Management

Human resource management is a process of bringing people and organization together so that the goals of each other are met. The role of HR manager is shifting from that of a protector and screener to the role of a planner and change agent. Personnel directors are the new corporate heroes. The name of the game today in business is personnel. Nowadays it is not possible to show a good financial or operating report unless your personnel relations are in order.

Over the years, highly skilled and knowledge based jobs are increasing while low skilled jobs are decreasing. This calls for future skill mapping through proper HRM initiatives.

Indian organization are also witnessing a change in systems, management cultures and philosophy due to the global alignment of India organizations. There is a need for multi skill development. Role of HRM is becoming all the more important.

Some of the recent trends that are being observed are as follows:

The recent quality management standards ISO 9001 and ISO 9004 of 2000 focus more on people centric organization. Organizations now need to prepare themselves in order to add r ess people centered issues with commitment from the top management, with renewed thrust on HR issues, more particularly on training.

To leapfrog ahead of competition in this world of uncertainty, organization have introduced six-sigma practices. Six-sigma uses rigorous analytical tools with leadership from the top and develops a method for sustainable improvement. These practices improve organizational values and helps in creating defect fee product or services at minimum cost.

Human resource outsourcing is a new accession that makes a traditional HR department redundant in an organization. Exult, the international pioneer in HR BPO already roped in Bank of America, international players BP Amoco & over the years plan to spread their business to most of the Fortune 500 companies.

With the increase of global job mobility, recruiting competent people is also increasingly becoming difficult, especially in India. Therefore by creating an enabling culture, organizations are also required to work out a retention strategy for the existing skilled manpower.

New Trends In International HRM

International HRM places greater emphasis on a number of responsibilities and functions such as relocation, orientation and translation services to help employees adapt to a new and different environment outside their own country.

Selection of employees requires careful evaluation of the personal characteristics of the Training and development extends beyond information and orientation training to include sensitivity training and field experiences that will enable the manager to understand cultural differences better. Managers need to be protected from career development risks, re-entery problems and culture shock.

To balance the pros and cons of home country and host country evaluations, performance evaluations should combine the two sources of appraisal information.

Compensation systems should support the overall strategic intent of the organization but should be customized for local conditions.

In many European countries- Germany for one, law establishes representation. Organizations typically negotiate the agreement with the unions at a national level. In Europe it is more

likely for salaried employees and managers to be unionized.

HR Managers should do the following things to ensure success.-

Use workforce skills and abilities in order to exploit environmental opportunities and neutralize threats.

Employ innovative reward plans that recognize employee contributions and grant enhancements.

Indulge in continuous quality improvement through TQM and HR contributins like training, development, counseling etc.

Utilize people with distinctive capabilities to create unsurpassed competence in an area, e.g. Xerox in photocopiers, 3M in adhesives, Telco in trucks etc.

Decentralize operations and rely on self-managed teams to deliver goods in difficult times e.g. Motorola is famous for short product development cycles. It has quickly commercialized ideas from its research labs.

Lay off workers in a smooth way explaining facts to unions workers and other affected groups e.g. IBM, Kodak, Xerox, etc.

HR Managers today are focusing attention on the following-

a) Policies- HR policies based on trust, openness equity and consensus.

b) Motivation- Create conditions in which people are willing to work with zeal, initiative and enthusiasm; make people feel like winners.

c) Relations- Fair treatment of people and prompt redress of grievances would pave the way for healthy work-place relations.

d) Change agent-Prepare workers to accept technological changes by clarifying doubts.

e) Quality Consciousness- Commitment to quality in all aspects of personnel administration will ensure success.

10 Global HR Trends for 2011

today.

We're living in an increasingly border-less world.

2. Talent management: Finding and retaining quality talent continues to be essential to business sustainability. Finding and retaining quality talent continues to be essential to business sustainability, though its importance in relation to other challenges differs by location.

3. Working virtually across functions and geographies will intensify, with implications for intercultural communication, business ethics and organizational effectiveness. Localizing management of overseas operations is key, but a global outlook is just as important as local knowledge. Businesses need to find new ways to connect people to each other and to information, both internally and externally.

The expectation of having an "always-available" employee varies around the world.

4. Global employee engagement is tentative; companies that have implemented multiple layoffs have eroded a sense of security in the global work force. There is a disconnect between what companies currently have to offer employees and what employees really value. Retaining valued talent is more important, but the drivers to retain that talent are different depending on the type of market (growth opportunity is paramount in growth markets; new or challenging responsibilities is paramount mature markets).

The gap in creative leadership, executing for speed, and managing 'collective intelligence' must be addressed.

Employee engagement has suffered; companies are now trying to restore pride and trust.

5. The economic crisis and fewer existing business opportunities create a high demand on the global HR function to demonstrate greater adaptability. HR will be an important

link between corporate headquarters and overseas operations. HR is conducting too many initiatives, with mediocre outcomes. Companies need to reboot their HR function and boost resources devoted to HR.

6. Economic uncertainties fundamentally change motivators that attract and retain employees.

There is a disconnect between what companies have to offer employees and what employees really values

7. Human capital protectionism may continue to increase in many countries in non-tariff, nationalistic forms.

8. Global mobility of high value workers continues as multinational companies restrict new hires and relocate talented employees from within their existing work force.

9. Companies that originate in emerging economics will continue to succeed in the global marketplace.

10. Increased demand for HR metrics may bring about a widely accepted set of analytic measures and methods (global standards) to describe, predict and evaluate the quality and evaluate the quality and impact of Hr practices and the productivity of the work force. However globalization is also.

How can HR do more to manage these trends?

Hr professional, you must make sure your organization understands what globalization means to you, your company and your business sector-you must be the one to advocate full understanding of what the drivers are. It's important, too, to keep in mind that globalization means different things to different people across the world. Ernst & Young describes globalization in The New Mind set as "the level of a country's integration with the world economy through the exchange of goods and services, movement of capital and finance, movement of labor, exchange of technology and ideas, and cultural integration." Martin Wolf, in Why Globalization Works, sums it up more simply as, "economic integration across borders through markets." And every person you ask will probably define it a bit differently.

A "global mind set" is often defined as a way of seeing the world and the globalization of markets, organizations and individuals. Developing a more global mind set enables your organization to be more effectively tackle functional, organizational, and cross-cultural boundaries and move forwards.

Wallack offered some ideas to help organization adopt a more global mindset:

Global mobility: Deepen your employees' knowledge pool by offering short-term, focused opportunities for individuals to work in new markets and geographies.

Develop global leadership pipelines: There is a growing expectation for leaders to have work experience outside one's country of origin; simply having an education that includes global topics is no longer enough. Travel is a strategic management development tool.

Get involved in efforts to create global HR standards.

As there is a higher demand on the global HR function to demonstrate greater adaptability, provide HR managers more exposure to and rotations in global business that they need to be effective internationally. Make HR the link between corporate headquarters and overseas operations.

As far as talent management: Include nationalities and experience in your efforts to diversify talent in other function and other industries. Increase the span of responsibilities and decision-making of employees.

Dr. Vishal Sharma
Asst. Professor
Department of Commerce

The Evolution of Libraries in the Digital Age: Navigating the Information Landscape

The field of library science, long characterized by its commitment to organizing, preserving, and providing access to information, has undergone a profound transformation in the digital age. This evolution, driven by advancements in technology and changes in user behaviours, has redefined the role of libraries and librarianship. In this comprehensive exploration, we delve into the multifaceted dimensions of the digital revolution in library science, examining how libraries have adapted, the challenges they face, and the opportunities they embrace. From the traditional brick-and-mortar repositories to dynamic digital hubs, libraries have evolved into complex information ecosystems, navigating the complexities of digital preservation, big data, community engagement, and open access initiatives.

The advent of digital technologies has marked a paradigm shift for libraries, transcending their physical limitations and expanding the scope of accessible information. Digital collections, electronic resources, and online databases have become integral components of modern libraries, providing users with unprecedented opportunities to engage with diverse content. The emphasis on digital accessibility underscores the importance of ensuring that information remains inclusive and available to a global audience. The evolution from physical repositories to digital hubs has not only changed the way information is accessed but has also necessitated a shift in the mindset of librarians, who are now navigating vast digital archives with a focus on usability and user experience.

As libraries transition from housing physical collections to managing extensive digital resources, the role of librarians has evolved significantly. Once seen primarily as custodians of books and other physical materials, librarians are now at the forefront of curating, organizing, and ensuring the reliability of online resources. Information literacy education has become a central focus, empowering users to navigate the complexities of the digital world, critically evaluate information, and make informed decisions in an era of information overload. Librarians have become educators, guiding users through the digital landscape, teaching them how to discern reliable sources from misinformation, and equipping them with the skills necessary to be digitally literate citizens.

The proliferation of digital information within library systems has resulted in an unprecedented accumulation of data. Harnessing the power of big data and analytics has become instrumental in understanding user preferences, optimizing resource allocation, and enhancing the overall user experience. From collection development to personalized recommendations, data-driven insights are shaping the future of library services. Librarians are not only stewards of information but also data analysts, using quantitative and qualitative methods to improve library services and meet the evolving needs of users. The intersection of information science and data analytics opens new possibilities for libraries to adapt and innovate in response to user behaviors and expectations.

While the digital era has brought about unparalleled access to information, it has also presented unique challenges in terms of preservation. Digital preservation strategies have become paramount to ensuring the longevity and integrity of digital collections. Librarians and information professionals are tasked with developing robust preservation frameworks that address issues such as format obsolescence, technological changes, and the ephemeral nature of digital content. The shift from preserving

physical artifacts to digital files introduces a set of challenges that require ongoing attention and adaptation. Preservation efforts must extend beyond safeguarding the integrity of individual files to ensuring the usability and accessibility of digital collections over time.

In the digital age, libraries are redefining their roles as community hubs, actively engaging with users beyond traditional library walls. Virtual programming, online workshops, and interactive platforms have become essential components of library services, fostering community participation and lifelong learning. The evolution of community engagement strategies highlights the adaptability of libraries in meeting the diverse needs of their user base. Libraries are not only information repositories but also social and educational centers that contribute to the cultural and intellectual enrichment of their communities. Virtual book clubs, online lectures, and collaborative digital projects are just a few examples of how libraries extend their reach and connect with users in the digital space.

Libraries have emerged as champions of open access initiatives, advocating for the democratization of knowledge by removing financial barriers to information. Open access repositories, scholarly publishing platforms, and initiatives promoting open educational resources contribute to a more equitable and inclusive information ecosystem. Librarians actively participate in these initiatives, working to ensure that scholarly research and educational materials are freely accessible to a global audience. The commitment to open access aligns with the foundational principles of libraries, emphasizing the free exchange of ideas and knowledge for the betterment of society. As gatekeepers of information, librarians play a crucial role in promoting and facilitating open access initiatives within their institutions and beyond.

Despite the significant strides made in the digital era, libraries face a myriad of challenges. Budget constraints, evolving copyright landscapes, and the continuous need for technological adaptation are just a few of the hurdles that librarians must navigate. Financial pressures often limit the resources available for acquiring new technologies, expanding digital collections, and supporting innovative programs. Moreover, the evolving nature of copyright laws and restrictions poses challenges to the digitization and dissemination of certain materials. Librarians are not only information experts but also advocates, working to address these challenges through policy advocacy, collaboration with stakeholders, and strategic planning.

Looking to the future, the integration of emerging technologies holds the potential to further redefine library services. Artificial intelligence (AI), virtual reality (VR), and block chain technology are among the innovations that could shape the next phase of the digital transformation. AI algorithms could enhance information discovery, providing users with more personalized and relevant recommendations. VR technologies could create immersive learning experiences, transporting users to virtual libraries or historical settings. Blockchain technology, with its emphasis on decentralized and secure systems, could play a role in enhancing the integrity of digital archives and ensuring transparent ac cess to information. As these technologies continue to mature, librarians will need to explore their potential applications and implications for the field.

References:

1. Kaur, Gurjeet (2015). The Future and Changing Roles of Academic Libraries in the Digital Age, Indian Journal of Information Sources and Services, vol-5, No-1, pp: 29-33.
2. Kokalri Erald, (2012). The Future Library in Digital Age, Project presented to Ryerson University pp:1-82
3. Ghoricha, A. L. (2013). Changing Role of Librarians Because of E-Revolution. Retrieved from zotero: //attachment/290/

Mayank Kumar
Assistant Librarian

Planets Roll Call

Eight planets around the sun,
Listen as I call each one,
Mercury! Here! Number one,
Closed Planet to the sun

Venus! Here! Number two,
Shining bright, just like new.
Earth! Here! Number three,
Earth is home of you and me.

Mars! Here! Number four,
red and ready to explore.
Jupiter! Here! Number five,
Largest Planet, that and no jive.

Saturn! Here! Number Six,
With rings of dust and ice that mix.
Uranus! Here! Number Seven,
A planet tilted high in heaven.

Neptune! Here! Number eight,
With one dark spot whose size is great."

Chandraveer
B.Sc III year

Dignity

Everything we as human beings have created on this planet was essentially first created in our minds.

All that we see which is human work o n this planet first found expression in the mind, then it got manifested in the outside world the wonderful things we have done on this planet and the horrible things we have done on this planet both have come form the human mind.

So if we are concern as to what we create in this world is extremely important that first of all we learn to create the right thing in our mind how we keep our mind. If we don't have the power to keep our mind the way we wanted, what we create in the world is also going to very accidental. So learning to create our mind in the way we want is the basic of creating the world the way we want. A well established mind which is in a state of Yukti, if we organise our mind to a curtain level of organisations it intern organises the whole system our body, our emotions, our energy everything organises in that direction. Once all these four dimensions of us our physical body, our mind, our emotions and the fundamental life organises in one direction, anything we whish happened. If we organise these four dimension in one direction for a certain period of time and keeping it and wavering it in one direction, we can have anything we wish.

Every thought we create it create a feeling. All my feelings put together create my attitude. My attitude used a number of time becomes my habit, all my habits put together create my personality and my personality coming into actions through the day write the destiny.

Sapna
M.Sc. III year

The Ugly Tree

A long time ago, a forest had straight and beautiful tress. But in this forest, there was a lonely trees. Whose trunk was punched and bent. The branches of the tree were also twised the other tress teased and made fun of this tree, and called it a 'hunchback'.

This made the tree very sad. Wherever it looked at the other trees, it sighed, "I ish I was like other beautiful trees. God has been cruel to me.

One day, a woodcutter came to me the forest. He saw the hunchback tree and grumbled. "This twisted tree is useless for me." And them he cut down all the straight and smooth trus.

The hunchback tree realised that God had saved his life by making him different.

Moral : Looks can be deceptive

Manoj Rajput
B.Sc III year

Dignity

You get dignity,
when you stop thinking wrong,
when you do what you learn right.

You can live dignified,
When you live a lifestyle that,
matches your version.

You can get dignity,
when you renounce the "ego of individuality",
and rejoice ups and downs of life.

There is dignity,
when you have good thoughts,
in your heart and mind.

Ayush Giri
B.Sc III Year

Realize The Value Of Time

To realize the value of 'One Year' ask a student,
Who has failed in his examination.
To realize the value of 'One Month' aks a mother,
Who has given birth to a body.
to realize the value of 'One Week' ask a editor,
Who is edit a weekly newspaper.
To realize the value of 'One Day' ask a daily labour,
Who has a big family to feed.
To realize the value of 'One Hour' ask a lover,
Who is waiting to meet his beloved.
To realize the value of 'One Minute' ask a person,
Who has missed the bus.
To realize the value of 'One Second' ask a person,
Who has survived an accident.
To realize the value of 'One Millisecond' ask a person,
Who has won a golden medal in Olympics.

"So nobody should waste time"

Sonu Kumar Sharma
B.A. II year

Importance of Education In Life

"Education is the most powerful weapon, which we can use to change the entire world."

Education is very important is our life. Education is a part of our body, so we should respect education. Education drives us forward education makes our life successful, education is our friend, if there is on education, we are noting. Education is changing our thinking. From education we gain knowledge. "Education is an instrument which makes the human life successful actually."

Education is always a running process in our lives. Education is always a running process in our lives. Education makes us self-dependent. Education plays and important role in our life.

"Without Education, the man seems the be animals." It is very difficult to live a life without education because mostly educated person/ people are know everywhere and is through education that a society develops and an educated human society inspire itself to grow.

"Education means not only bookish knowledge."Infact education gives us that a style of life in education.

If we do work hard, we can get that success. Without education there is noting. Education is everything. Educated person seems to be a hero but uneducated person seems to be villian. So education is very important in over life.

Noting is more valuable than education. It can be found only through hard work.

Prarthna Singh
B.A. II year

The Mystery Of Black Hole

The mystery of black hoe l is one of the unselved mysteries of physics. eg. - Quantum Gravity, Dark energy Dark matter, Time dilation....etc.

Black holes are form when massive stars collapse at the end of their life cycle. In the simple worlds most black holes form the remnants of a large star that dies in a supernova explosion, After a black hole has formed, it can grow by absorbing mass from its surroundings.

Supermassive black hole of millions of solar masses (Mo) may form by absorbing other stores and merging with other holes.

A black hole has infinite density and gravitation, and in it gravity pulls so much that even light can not get out.

First black hole was discovered by Karl Schwarzschild in 1916, Einstein presented his theory of general relatity, after a one year later, At that time the concept of black hole was masterly theoretical then. Einstein. assumes that the concept of black whole is weird.

After Einstein many scientists. eg. Subramanyam Chandrasekhar, Karl Schwarzschild, John Droste worked on his theory of relativity. There were several equations, they selved those equations and tries to derive the solution and by getting to the solution of these equations it was theoretically proved that things like black holes do indeed exist.

The term black hole was used for the first time by a magazine 1964. and after 1967 the term gain popularity.

Because black holes are formed by stors so there's some material at its centre, But in the stars even our sun is a star there's a continuous nuila hision reaction at their centre these reactions produce heat and light the produced heat sends a force outwards and at the centre of the star there's the force of gravity this helps the star remain intact and alive, the star maintain equilibrium throughos their lives. The forces pushing out wards due to the reactions, and the Forces pulling inwards due to gravity but these reaction take place when fuel exists gither Hydrogen or helium the fuel would not always be exist. It would get b used up at some point and when the fuel ends, there would not be any forces pushing outwards, the gravitational force pulling inwards would not be countered by and equal force so that star will collapse on itself because of its aeon gravity this will take along time, by the way but what happens next depends on the mass of the star.

By the Chandrasekhar limit

Stars have more mass will be converted into a black whole as the pressure due to the electron de generation will keep them from collapsing until the density is extremely high. So the gravitation and density of black hole is infinite that cannot be measured.

The Chandrasekhar Limit

By this equation the maximum mass of white dwarf can 1.4 times the mass of our sun. Above which its cannot be stable and would turn into either neutron star or a black hole

Sigtarrius A is the supermassive black hole in our galaxy-milkiway.

In the black hole the particles take around the black glow because the velocity is so high due to gravitation in black hole in the interiour there is a belt of photons-photosphere and after it by very extreme gravitation light can not be escape and now humans can not be able to know that what is there.

This is how the mystery of black hole is not solved and the research on the black hole is in processing by the research of black hole when the mystery solved. Lue would be able to know about the formation of universe by the theory of special relating of einstein.

Atul Kumar Roy
B. Sc I year

Writing A Platform

Today, I am writing down on the very simple topic..... which I believe every writer can relate with and can encourage others having a passion in writing to do so!!!

Writing :

It is a way to express and let down your feelings, thoughts and emotions about anything. When sometimes you are not able to express your thoughts, feelings, your various and opinions...

Writing down it, is something which can make you feel light hearted. It helps you in expressing out your emotions and desires which are sometimes unable to be described and expressed physically.

Truly, words have those powers which are beyond imagination of anyone and helps us in popping out, what's there in our minds. Writing down, doesn't needs any topic or subject, it hous out with what's there residing in your mind & heart.

Writing contains various emotions of the writer. Words makes us feel the feelings, the thoughts, heartfelt desires, emotions which a writer puts up in his write up like Novel, Books, articles, topics etc.

Sometimes in various autobiographies, novels and fictions, the writer just puts their heart out and what's there in his heart is expressed by his words....

Ways to Improve Writing-

There are various ways by which you can improve your writing skills and some of which are mentioned below-

17 First and foremost thing to do is just to have a passion in writing. Without any interest and enthusiasm nothing can be done in field of writing.

27 Just do write down on any topic or anything, whichever you feel good enough to..... and develop a habit of it for being regular enough.

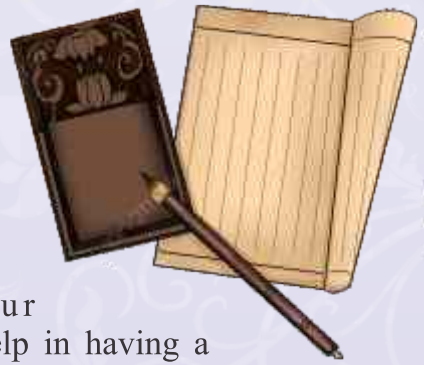

37 Do read articles, magazines, books, novels and much more... it would definitely help you in improving your vocabulary. Reading these will help in having a good collection of words and phrases.

47 Writing down on anything will firstly enhance your knowledge and communication skills too when you will develop a habit of writing, words will automatically come out themselves.

57 Do collect some other stuffs and matters which would add up in improving your writing skills and habits.

So, many other points can be add up in this line which can add up and boost your literature skills of reading and writing down. And many other points can be mentioned in it, which are not been added up in this list.

It is not a work, of single day and to become specialised in it in an hours time. But what is required is the consistency and persistence to do anything. You will do make some mistakes and initially would needs a lot of things to improve on and understand..... but mistakes are those which we learn from... and only those mistakes helps us in improving ourselves.

Because, I truly and firmly believe that writing is a very powerful weapon to conquer so something. What is just needed is a passion for it. There will be ups and downs, highs and lours, but that's what will give you strength and encouragement for doing anything.

So keep on writing.!!!

Thank you

Mehvish Arif
M.Sc II year

Artificial Intelligence In Education

Artificial intelligence in education is transforming traditional learning methods. The purpose of this, study was to asses the impact of AI on education.

By coppin definition, AI is the ability of machines to adapt to new situations, solve problems answer questions and perform.

By Whitby defined, AI as the study of intelligence behavior in human beings and machines and such as computer and computer related technology AI continues to develop & new ways of application in education emerge.

Task Automation:-

AI makes the learning environment more knowledgeable and productive.

With AI in school education and virtual classroom. AI solutions for education can check the homework, grade the tests, maintain reports make notes, make presentation and manage other task.

24*7 Assistance with AI

Chatbots are on increasingly familiar example of how AI in education consumes data to inform & provide assistance accordingly. AI chatbots com solve enrollment queries, deliver instant solutions provide access to required study material & assist 24*7.

AI In Examination

The AI programs keep track of each individual through web cameras, microphones and perform where any movement alerts the system. An AI based software & application can be beneficial in more ways then one can imagine.

AI use cases in Education

Here is a more through explanation of top global brands as

Google - Google classroom, Google translate are powerful too.

Duolingo - The well known language learning app.

Coursera - This utilizes AI to revolutionize online education.

Conclusion

AI has a major impact on education. The journey towards this future is rife with challenges, but the transformative impact of AI on education is an saga with potential to redefine how we teach old learn for generation.

Reference - Google, Slides here, etc.

Keerti Sharma
M.Sc. III year

Silent Heroes Stories of Soldiers

In the quiet corners of our homes , where laughter echoes and dreams take flight. There exists a profound story of sacrifice that of ten goes unheard.

It's the narrative of the soldiers who stand as silent sentinels, ensuring the tranquility we enjoy within our four walls. Picture a world where every sunset is not just a moment to unwind but a testament to the sacrifices made an distant horizons for our undisturbed sleep.

As we navigate the tapestry of our daily lives, it's easy to overlook the unwavering commitment of those who willingly step into the soldiers who trade the warmth of homes for the harsh realities of duty, creating a haven of peace for us to cherish. Join me in unraveling the layers of a soldier's sacrifice a tale that deserves recognition in every home, reminding us that tranquility comes at the cost of their selfless service.

The call to Duty:- A soldier's silent

In a soldiers's world there's a quiet but powerful summons that changes everything. The call to duty. It's like a silent promise to step into a life that's not just a job but a deep commitment to keep our homes safe.

When a person decides to become a soldier. It's not just about wearing a uniform; It's a big choice to leave behind the cozy comfort of home.

Imagine saying goodbye to family hug, familiar laughter and the peaceful sleep under your own roof.

Soldier's make this choice willingly, ready to embrace a different kind of home on the journey of protecting ours.

"The call to duty" is like a soft but strong voice urging soldiers to take on the responsibility calling that asks them to put the needs of the country above their own.

When soldiers hear this silent call, it transform them from regular folks into guardians. Standing.... to ensure that the peace we enjoy in our homes remains untouched .

Life on the frontlines:- Facing Tough Challenges with courage. Living on the frontlines means dealing with difficult situations in places that are not familiar and can be quite harsh. Soldiers have to adopt to u unpredictable environments wh ere challenges pop up at every turn.

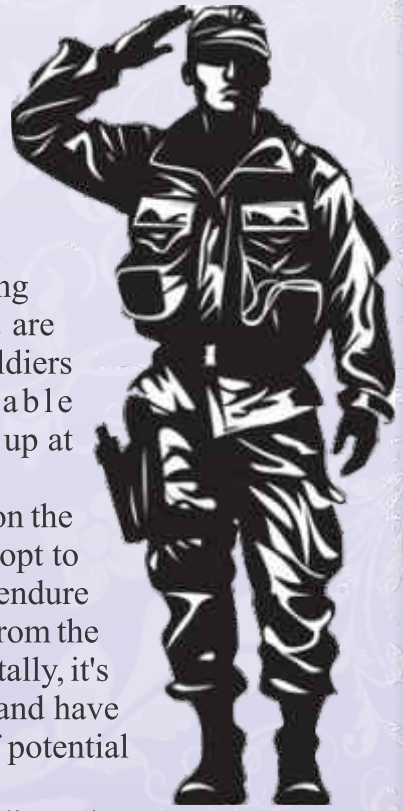

These challenges take a toll, both on the body and the mind soldiers have to adopt to unpredictable or carry heavy gear and endure physical strains, all while being away from the comfort of home for long periods. Mentally, it's tough too, as they miss their families and have to deal with the wnstant awareness of potential dangers.

But, here's the inspiring part-soldiers show incredible strength and determination. Real-life stories from the frontlines tells tales of bravery and resilience, showing how they face adversity head on . Every challenges they overcome becomes a victory and each story shared is a less in staying strong in unfamiliar and sometimes tough situations. It's a life where every day is testament to the extraordinary courage of those who protect and ensure our peace.

Prince Kumar Yadav
B.A. I year

If I Were Captain (Vikram Batra)

- The fiery flash of guns and splattered countless bloodshed.
- Even the kargil mountains stumbled seeing the precious lives lying dead
- More glorious can a death be than wrapped in pride?
- O true sons of soil! Your selfless deeds will forever be etched deep inside.
- Had I been Vikram Batra, I would have been the luckiest person
- I would have fought till my last breath and martyred with pride for my beloved nation.
- I would fight like a firestorm in the icy rocks of Kargil
- Never would I care about my wounds but try to make the enemy fragile
- The deadly gunshots would never weaken my lofty spirit
- My love for my Motherland is so intense that no pain could stand before it.
- On receiving Param Veer Chakra I would feel so honoured and dance with joy
- Though not in body, the bliss of immortality my soul would enjoy.
- Leaving my family behind
- I would triumph in the war
- Being a true soldier I would happily bear all the wounds and scars.
- Had I been Captain Batra, I would have fought with the same courage and valour
- I would have droven the enemies away from Kargil and waved the tricolor.
- Death can never be the end for a soldier
- who chooses death over life
- Had I been Captain Batra
- I would love to die hundred times to make my countrymen survive.

Sneha Choudhary
B.A. I year

Nature Source Water

Water resources are natural resources of water that are potentially useful for humans, for example as a source of drinking water supply or irrigation water. 97% of the water on Earth is salt water and only three percent is fresh water; slightly over two-thirds of this is frozen inglaciers and polar ice caps. The remaining unfrozen freshwater is found mainly as groundwater, with only a small fraction present above ground or in the air. Natural sources of fresh water include surface water, under river flow, groundwater and frozen water. Artificial sources of fresh water can include treated wastewater (wastewater reuse) and desalinated seawater. Human uses of water resources include agricultural, industrial, household, recreational and environmental activities.

Global values of water resources and human water use (excluding Antarctica). Water resources 1960-90, water use around 2000. Computed by the global freshwater model Water GAP.

Water resources are under threat from water scarcity, water pollution, water conflict and climate change. Fresh water is a renewable resource, yet the world's supply of groundwater is steadily decreasing, with depletion occurring most prominently in Asia, South America and North America, although it is still drop of water as made as is whole ingredients of body circle with gum, Binds river, mountain, fire & all only outer force can be removal.

Love of mother shows no response, Remains unchange at room her force. Bond of greed turns into ash while, grows again & again in flesh.

River runs everywhere in shape. Mountain shows its size as hope of an idea arises also in view to know the purpose is in dew.

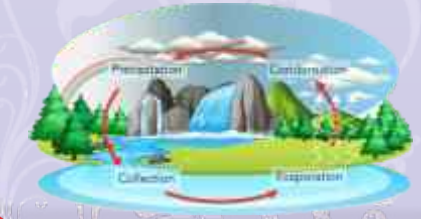

Chandra Prakash
English Department

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

DPBSians

As you gear up to start on this amazing experience at DPBS College, remember that the courses you take, the friends you make, and most of all, the perspective you carry, can change your world. Commit to expand, care to understand, converse to grow". You can't paint the picture of your life with your hands in your pocket so remember to take risks to grow yourself further. The opportunities are ample here. Seize them.

- Yash Pal Singh Lodhi, Additional District Judge, Agra

It has been great pleasure to be part of DPBS college.The College has played an important role in my personality development and career building. The college and department in particular has always been helpful and encouraging. I owe my success to the college and wish the college all the success in the future

- Navab Singh, Director & HOD, Technology Development Institute of Micro Electronics, A*Star, Singapore.

Achievements-applauds, opportunities- thoughts, this is what I gained from DPBS COLLEGE. DPBS gave me a platform that I will cherish always. Somedays I won somedays I learned. It gives me great pleasure in sharing my success after joining this institution. DPBS has successfully accomplished its promises and objectives in providing quality education and overall development of all its students. DPBS College provided us with well-equipped library, laboratories, training camps which has constantly of great support. The guest lectures and training programs were really a boon to all the students. The college has moulded my personality and clarified my vision of the future. This college let me fall by my own but made me climb on the ladder to success. I proudly feel that I cherished every moments in my life .Being a "DPBSian" makes me feel proud. I got infinite love and lessons from my teachers, they made me do ?Work Hard" for the way to success. Miss those days of DPBS COLLEGE. Just want to thank to the wonderful faculty and administration of DPBS COLLEGE .....I am proud to be a ?DPBS -ian".

- Sanjeev Kumar Gupta, Director, Deptt. of Statistics and Information Management (DSIM) Central office, Mumbai

From the school and as a kid When the age was at its mid. My college when opened its arms Along with all its Motherly charms Embraced me and nourished me Polished me and prepared me Out of all thick and this? Made me swim with bold fins?.All Grace to my Almighty finally? Who made me a part of DPBS Family.

- Professor Sujeet Kumar Sharma, IIM Nagpur, Maharastra

DPBS is such an institution that not only inspire you but also teaches what your end goal is. Here lecture halls seemed filled with the spirit of wisdom & the professors were the embodiment of knowledge. Qualities like initiative and leadership appears in every student through the co curricular activities in college. In the end all I could muster up DPBS is the part where you find who you are.

- Dr. Gaurav Varshney, Joint Director (Forest Statistics) Government of Uttar Pradesh

It gives me immense pleasure to see DPBS College growing stronger in many ways and expanding its reach to other fields of learning as well. It is a place of knowledge and bliss. The college has molded my personality and clarified my vision of the future. The enthusiastic, supportive and encouraging faculty makes learning a delight at DPBS. It provides a conducive atmosphere and an opportunity to learn and grow. It not only boosts for academics but for other extra-curricular activities that help in enhancing the personality of students.

- Dr. Ravinder Kumar Sharma, Professor, Deptt. of Economics, Ch. Charan Singh University, Meerut

Being punctual & having a passion to learn always helps in any professional field. Teamwork always gives an extra mileage to the engineer in field so does maintaining liaison with all in that team. Wishing the greatest of heights and success to the College, words won't be enough & precise thank our college.

- Dr. Sanjeev Kumar, Associate Professor, Deptt. of Economics, Ch. Charan Singh University, Meerut

To the institute, who has given me a amalgamation of lifetime experiences, I still remember the day on August 1997 when I entered the gates of DPBS, with a nail biting confusion and perplexed on how my journey would turn out to be in the next three years. My college life has been a roller coaster ride with ups and downs but most importantly I enjoyed every bit of it with amazing set of professors to guide and friends to treasure memories with. One thing I'll take with myself is to never stop dreaming, never stop learning and always taking responsibilities. Thank you for everything.

- Harjeet Singh, Deputy Director Horticulture, Horticulture & Food Processing Department, Moradabad

Besides providing a good education, DPBS is very prudent towards its students in developing their interpersonally flexibility, physical activity. The very well-known saying "enter to learn and leave to serve" has been an inspiration for me while being in college. DPBS has played a significant role in shaping my identity as an engineer and I am deeply grateful.

- Shailendra Agrawal, Chartered Accountant, Founder, MSNS & Co., Delhi

DPBS gave me the opportunity of being a Student Coordinator and help me to transform in an Entrepreneur. Technical and Extra circular activities should go hand in hand. I thank DPBS Family for all the support and wish them good luck.

- Gaurav Vrati, Co-founder & Chief, Executive Officer, Ira Technologies India Pt. Ltd.

Time flies like an arrow. The days I spent at DPBS were exactly like this proverb. My classmates and me have put a great deal of painstaking efforts into studies and all our energy into unforgettable events and activities. Unlike its relaxing surroundings, academic life at this College has been filled with learning
challenging. My all three year in this College was flooded with quizzes, presentation, academic activities and exams. However, with the guidance from enthusiastic teachers all the efforts made by me were rewarded at last.

- Amit Bansal, Director, Ameha Technologies Pvt. Ltd.

At the outset I will like to convey my best wishes to you. DPBS College and particularly the Faculty of Science. has paved a great role in my success in career. I cannot forget your support and belief in me during my college days. I have very fond memories of this college and my mentors. I have always felt the need to contribute something back to the college and its students. Therefore, I will be happy to be a part of your endeavors to help the students to excel in their careers.

- Dr. Surendra Kumar, Head, Department of Statistics, Kirorimal College, University of Delhi, Delhi

Education is the process of acquiring knowledge through teaching and learning. It opens the gates of wisdom and helps am individual to understand the difference between the right and the wrong, truth and false. It teaches an individual how to make his living and how to lead a disciplined life. Education in its essence is not just book reading it is an all- round development process that aims at developing the vision of the people. A student must be versatile, dynamic and innovative being who is able to know the pulse and pace of world around him.

- Dr. Renu Garg, Assistant Professor, Deptt. of Statistics, Ramanujan College, University of Delhi, Delhi

The word "back" or "suppli" use to be darkest nightmares during the three years of degree course but personally, it has taught many lessons in life be it the time management, stress management or financial management. I learnt few most important lesson which I would like to share here, when everything is against you then don? It lose your hope because this is the best you can do. Suicide is never an option, don?t ever give up. In your worst times, you are the only one who can help you.

- Dr. Yogendra Kumar Gautam, Assistant Professor, Deptt. of Physics, Ch. Charan Singh University, Meerut

College plays a very important role in making the career of a person, for me this was DPBS. I had a very positive experience with DPBS, it had contributed a major part in my career building. The staff and teachers are very passionate and show genuine desire to help students to achieve their goals. College aims at the overall development of the student so that he/she can excel in different fields. So in DPBS one is not just bookworm but a real thinker-which is the basic requirement in today's Academic-era.

- Dr. Gajraj Singh, Assistant Professor, Indira Gandhi National Open University, Delhi.

At the very outset I would like to express my heartiest thanks to the DPBS family. I extend my warm regards to my dept, the faculty of Science which has immensely helped me succeed.I am highly indebted to the entire DPBS family, in particular, Dept. of Statistics for helping me achieve great heights for the generous contribution you have made to my educational and academic pursuit.

- Dr. Ajendra Sharma, Assistant Professor, Deptt. of Mathematics, NAS College, Meerut

I passed my B. Sc. From DPBS College Anupshahr in the year 1998-1999. I cannot explain in words the academic atmosphere of our college of those days. I saw the development phase of DPBS as a student from 1998 till date. I passed so many exams after under graduation but, teaching- learning of DPBS is still remains on top in my list. This place gives the real peace and proud for younger generations like me. This institution in the lap of Maa Ganga is really our Dev Bhumi and truly a gurukul for me.

- Dr. Prempal Singh, Assistant Professor, Deptt. of Mathematics, Kirorimal College, University of Delhi

I always wanted to start over a new phase of myself in college. It seems with limited resources and a new environment was a challenge. That ain't stopped us from being what we are now. My college did give me opportunities that were very vast at a global level and it made me a better personality to be understood. I will always be grateful to my DPBS mater for its existence in our lives. Thank you.

- Dr. Toshib Aalam, Assistant Professor, Deptt. of Economics, Central University of Kashmir.

As a student of DPBS College it is noteworthy to mention that the college has plenty of resources producing better Engineers, Professors and making them flexible for working in any environment and performing in difficult challenges with efficiency. The college isn't just a group of buildings but an epitome of knowledge and treasury of success.

- Naresh Bhardwaj, Business, Indira Timber Merchant, Anupshahr

The B.Sc. program at DPBS(PG) College equipped me with a solid foundation, offering a well-rounded curriculum and access to modern learning resources. The dedicated faculty members were not only experts in their fields but also served as mentors, guiding me through my academic journey and inspiring me to explore various avenues within the various fields. Beyond academics, the college promoted a culture of inclusivity and encouraged students to engage in extracurricular activities, which played a pivotal role in honing our leadership and teamwork skills. The college's emphasis on holistic development, coupled with its supportive community, allowed me to grow academically and personally.

Reflecting on my time at DPBS(PG) College, I am deeply grateful for the education, experiences, and friendships that have shaped me into the professional I am today. The college's unwavering dedication to nurturing well-rounded individuals has undoubtedly laid the groundwork for my successful career.

- Vishal Sharma, Head of the Department, School of Media, Film & Television Studies, IIMT University, Meerut.

DPBSCollege is much beyond just an Institution. It actually connotes a Culture-Culture of Excellence, Empowerment and Enrichment. I feel blessed and grateful to for making me the part of this huge college family. I am thankful to all college teachers for encouraging and guiding me and my group-mates to complete the DPBS first working Assistant Professor in Economics Deptt. Last but not the least, I am thankful to esteemed Principal who always injects discipline and Professionalism in my Attitude.

Anjali Harit, Join as Assistant Prof. D.A.V (P.G) College, Bulandshahr

You are not born to be raised as robots, every human has a unique quality and you need to find yours, expecting a fish to climb a tree would be insanity similarly expecting each one of you to do similar things will be no different! Think beyond the classroom, lectures and explore the opportunities the world provides.

- Neeraj Tyagi, Director, Rangar Breweries Ltd., Mehatpur

DBS PG College, Anupshahr is one of the best institute in my view. I studied there in BA from 1999 to 2001.All the faculty at that time were very good, cooperative and there was a good relationship between the teachers and the disciple and Now I have been practicing in Delhi High Court since 2004 and it is only because of this institute that I have reached here. I believe that even today this institute maintains this reputation and credibility.

- Vineet Baliyan, Advocate, Delhi High Court

I am thankful to all the faculty members of the College for their continuous efforts and support. Apart from excellent academic experience, I also gained the benefits of being a part of 'Academic Student' body. I cherish every moment spent at DPBS College.

- Sumit Tyagi, Principal, Mathuriya Inter College, Bheempur (Bulandshahr)

I really feel proud on saying that I have completed my graduation from DPBS College, Anupshahr. The thing i admire the most is the support from everyone at every step. My teachers really helped me a lot in brightening my future. I am really thankful to DPBS because whatever I am today is just because of it.

- Om Pal Singh, Principal, Salwa Inter College Salwa, Meerut

Apart from the excellent academic experiences, I also reaped benefits of being a part of multi-cultural student body. I continuously learned how to share ideas with people from different backgrounds and perspectives. The intensive and extensive interactions with people from different countries and cultures equipped me with better interpersonal skills. There are many things to say about the goodness of DPBS, including the outstanding library and computing services, interesting club activities, various events with the local community, and many more. To sum up, DPBS gave me not only the best study experience ever but also gave me the privilege of learning about others cultures, beliefs and perspectives. These all have helped me to succeed in my career after DPBS.

-Brajesh Sharma, Former Chairman Municipal Corporation, Anupshahr

College is excellent in the perspective Study discipline and extracurricular activities like games cultural programs. All faculty are excellent very supportive and have very cordial relationship with their students. I appreciate to this college And faculty for guiding and motivating to students for making their carrier. I sincerely thankful to all the present and past faculty of this excellent institution.

- Gopal Singh Chauhan, Technical Architect, Mc Millan Shakespeare Group Melbourne, Australia

DPBS Degree College is the best college in the entire West UP. The quality of education and employability of this college is amazing. My life got a new direction from this college. The teachers, studies and infrastructure here are inspiring.

- Yogesh Kumar Saini, Sub- Inspector, Uttar Pradesh

I am an old student of DPBS College. My college is very great. I bow. It is because of my studies there and the education of the professors that I have reached this position today. I will always remember respected Sir Dr. SS Dhal, Dr. KPS Chauhan, Dr. Vinod Kumar Goel. Because of his education today I was able to become a successful officer in the department.

- Anurag Sharma, Dy. SP Telecom, Moradabad

Finding the right path to success at the right time is really very important and for that way I had selected DPBS. The friendly environment, the systematic approach towards imparting education at DPBS made me a competent individual. The wide range of activities- both curricular and co-curricular- along and the support from DPBS is really very helpful for my future. The faculties are really very kind and approachable when any need arises. Today, if I am in good position it's because of what I have learnt from DPBS. Lastly I am really proud to be an DPBSIAN.

- Rohtash Singh Chauhan, Development Officer, LIC

I won't rant much about academics here. DPBS, to be honest has been a complete package for me - fun, fights, and other shenanigans. Made some lifelong connections, mentored by the coolest professors, did the worst mistakes, learned from them and got back up. What DPBS has gifted me? Resilience. Things I miss the most? college sports, Calture activate, libray and Teacher - Student intrection. I will miss DPBS and all the fun I had while I was there?

- Naresh Chandra Sharma, Assistant Section Officer, Central Secretorial Service

I am fine and hope that you too will be in the best of your moods and spirits. It's been a privilege to be a part of this highly reputed institution. The time spent there will be always appreciable and memorable throughout my life. The journey of three years had been a cake walk only because of the full support of my teachers and the other non- teaching staff of the College.

- Yogesh Lodhi, Nayab Tehsildar, Amroha.

At present I am working in LIC on the post of Development Officer since 2007 and before this I was working in Uttar Pradesh Police Department (from 1997 to 2007), I had done B.Sc from DPBS College in 1997, at that time there is a lot of difference between the college of 1997 and today's college, especially in terms of infrastructure and whatever is required for a good educational institution is almost being completed, for this the present principal and the entire staff are eligible of appreciation.

- Vijendra Singh, Development officer, Uttar Pradesh Police

DPBS College is one of the best Academic college. Ever upgrading infrastructure, excellent faculty and top notch high tech labs. Proud to be a student of such an institution.

- Rajesh Singhal, TGT Science, Janta Inter College, Junawai, Sambhal.

There is a lot of difference between the college of 1993 and recent college whether it comes in infrastructure of education or in College's environment. From my experience and perspective the future of children and popularity of college depends on the competent, experienced and disciplined teachers. And the popularity of the college is currently setting a new dimension and record among the colleges of the state. For this I want to thank the College Principal and all the professor from the bottom of my heart.

- Omkar Singh, Politician, Jila Panchayat Sadasya

I was fortunate enough to spend 3 years of my life in DPBS. These 3 years just went by my eyes like a flash with all those bitter sweet moments in my class room, our college environment, the college canteen and most significantly play ground. I was fortunate enough to have been thankful to our college Professor's gave us wisdom and our friends and juniors gave us companionship.

- Gaurav Sharma, Airman

We were among the first batch of students who completed their graduation amidst a raging pandemic, sitting at home. A scar that all of us will be bearing through our life. But the one thing that kept us going were the memories associated with the college. Looking back, the friends, the time spent, the bonds, everything helped us to get going. Those continued after college too. If I have to compare, I had the craziest of my times in college rather than school.
- Akshita Gaur, Cabin Crew, Air India

As a college student, the hardest part of college life was leaving college after graduation or post-graduation. The last days of college were the hardest, knowing that soon you will be departing your friends, the campus, teachers and completely leaving behind a part of life. Talking about my college life, I had enjoyed my college life to the fullest and had some of the best college days of my life. I was a student of one of the most reputed colleges -D.P.B.S. (PG) College ANUPSHAHR. I have completed my M.Sc. (Physics) from there. This College is one of the renowned and best colleges of C.C.S. University Meerut. Built in a larger area, it is a beautiful college with many courses in streams like Science, Commerce, Arts, and Computer. With an outstanding academic record. I am very grateful for having such a teacher in my life.
- Rishabh Gupta, Lecturer, Adarsh Inter College, Mahow, Hathras

DPBS holds a special place in my heart. Although there were lots of privileges, I had no idea that it was somehow getting back to square one like wearing uniforms & all. But once I got familiarised with it, I understood what's the importance of all these regulations. The entire journey of 3 years was extremely colourful. Really fortunate to be a part of this family.
- Manish Panwar, Haveldar, NSG

Near the “Ganges”and far away from “evil thoughts”,
On the way to the college, the “environment” is visible.
A faculty that one only ever dreams of.
known as “DPBSins”
Efficiency and effectiveness touch the door
Visit college to know more..."
- Rishabh Gupta, Chartered Accountant

DPBS College is one of the best educational institution in the valley having the best faculty and infrastructure which provide conducive atmosphere for students to learn and excel in every field in their life.
- Hemant Sharma, ITBP

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

सौजन्य से :-
चित्र कला विभाग

महाविद्यालय परिवार

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1.	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य
2.	प्रो. यू. के. झा	अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
3.	प्रो. प्रदीप कुमार त्यागी	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
3.	प्रो. ऋषि कुमार अग्रवाल	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
5.	प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
7.	प्रो. सीमान्त कुमार दुबे	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
8.	श्री लक्ष्मण सिंह	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
9.	श्री आलोक कुमार तिवारी	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
10.	श्री सोहन आर्य	असि. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
11.	श्री अनिल कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाज शास्त्र विभाग
12.	श्री दीक्षित कुमार	असि. प्रोफेसर, भौतिकी विभाग
13.	श्री हरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, गणित विभाग
14.	श्री हिमांशु कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.सी.ए. विभाग
2.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
3.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
4.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
5.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
6.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
7.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
8.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
9.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
10.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
11.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
12.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
13.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
14.	श्री सत्य प्रकाश	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
15.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
16.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
17.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
18.	श्री पंकज प्रकाश	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
19.	डॉ० रेनू चौधरी	असि. प्रोफेसर, भूगोल विभाग
20.	डॉ० मोहिनी गुप्ता	असि. प्रोफेसर, गृह विज्ञान
21.	डॉ० नरेश चन्द शर्मा	असि. प्रोफेसर, इतिहास विभाग

प्राध्यापक (अंशकालिक)

1.	श्री चन्द्र प्रकाश	अंशकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
2.	डॉ. राधा उपाध्याय	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग
3.	श्री साहिल कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
4.	श्री नरेन्द्र रंजन	अंशकालिक प्रवक्ता, सांख्यिकी विभाग
5.	सुश्री देवांशी सैनी	अंशकालिक प्रवक्ता, सवित्त कला विभाग
6.	सुश्री नन्दिता	अंशकालिक प्रवक्ता, भुगोल विभाग
7.	श्री आशू सैनी	अंशकालिक प्रवक्ता, इतिहास विभाग
8.	श्री नितिन शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, रक्षा अध्ययन विभाग
9.	सुश्री सृष्टि शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, गृह विज्ञान विभाग
10.	सुश्री काजल	अंशकालिक प्रवक्ता, वाणिज्य विभाग
11.	सुश्री रिवानी गोयल	अंशकालिक प्रवक्ता, वाणिज्य विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी विभाग
5.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री चन्द्रपाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
7.	श्री नारायण देव मिश्रा	चतुर्थ श्रेणी (दफ्तरी)
8.	श्री डम्बर सिंह	चतुर्थ श्रेणी (प्राचार्य का अर्दली)
9.	श्री गजेन्द्र सिंह	चतुर्थ श्रेणी

10.	श्री कपूर चन्द्र	चतुर्थ श्रेणी (रात्रि चौकीदार)
11.	श्रीमती पार्वती	चतुर्थ श्रेणी
12.	श्री सुनील कुमार निर्मल	चतुर्थ श्रेणी
13.	श्री महेश चन्द्र	चतुर्थ श्रेणी
14.	श्री अमरनाथ राय	चतुर्थ श्रेणी
15.	श्री विजय पाल सिंह	चतुर्थ श्रेणी
16.	श्री रामऔतार	चतुर्थ श्रेणी

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित/दैनिक वेतन भोगी)

1.	श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
2.	श्री मयंक कुमार	पुस्तकालय सहायक
3.	श्री प्रतीक रस्तोगी	पुस्तकालय सहायक (स्व० पोषित)
4.	श्री पारस कुमार	प्रयोगशाला सहायक
5.	श्री प्रमोद कुमार	सुपरवाइजर
6.	श्री योगेश कुमार	दैनिक वेतन भोगी
7.	श्री राम बाबू	दैनिक वेतन भोगी
8.	श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक वेतन भोगी (इलैक्ट्रीशियन)
9.	श्री सुबोध कुमार	दैनिक वेतन भोगी
10.	श्री नितिन कुमार	दैनिक वेतन भोगी
11.	श्री वाहिद	दैनिक वेतन भोगी (प्राचार्य का ड्राइवर)
12.	श्री सोनू	चतुर्थ श्रेणी
13.	सोनू चौधरी	
14.	श्री अजयवीर	चतुर्थ श्रेणी
15.	श्री सोहन सिंह	
16.	श्री वीरपाल	
17.	श्री सुनील कुमार	
18.	श्री सुरेन्द्र पाल	दैनिक वेतन भोगी (माली)
19.	श्री मान सिंह	दैनिक वेतन भोगी (माली)
20.	श्री जगदीश कुमार	दैनिक वेतन भोगी (माली)
21.	श्री विजय	दैनिक वेतन भोगी
22.	श्री विक्रम सिंह	दैनिक वेतन भोगी
23.	श्री राजू	दैनिक वेतन भोगी (सेवक)
24.	श्री राजीव	दैनिक वेतन भोगी
25.	श्री पंकज	दैनिक वेतन भोगी (लंगूर वाला)

शिक्षकों को कर्मठता तथा कर्तव्यनिष्ठता के सम्बध में सम्बोधित करते हुए परम श्रद्धेय श्री जे.पी. गौड़ जी

पतित पावनी माँ गंगा के मस्तराम घाट पर गणमान्य लोंगो की एक सभा में आदरणीय श्री जे.पी. गौड जी

परिसर में स्थित मंदिर में देव प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में सम्मलित प्रसिद्ध उद्योग पति आदणीय श्री मनोज गौड़ जी शिक्षाविद तथा जयपुर यूयनीवर्सिटी के कुलपति कनिष्क शर्मा

मा. सांसद डॉ. भोला सिंह, तथा डिबाई से विधायक श्री सी.पी. सिंह के साथ में प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह, प्रो. पी.के. त्यागी तथा श्री अभय गर्ग

स्वतंत्रता दिवस 2023 के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में प्रबंध समिति के साथ प्राचार्य

कॉलेज के सामने डॉ. सुधीर कुमार का स्मृति में बनाये गये द्वार के समक्ष नारियल फोड़ते प्राचार्य

CCSU मेरठ के दीक्षांत समारोह में प्राचार्य प्रो. जी. के. सिंह

कॉलेज के NCC कैडेट के साथ प्राचार्य प्रो० जी.के. सिंह

Follow Us On:
DPBS PG COLLEGE

dpbsvani Podcast channel on

Spotify amazonmusic

9 788196 286750